हिंदी गृह पत्रिका

अभिव्यक्ति

वर्ष 2014 (प्रथमांक) अंक : 8

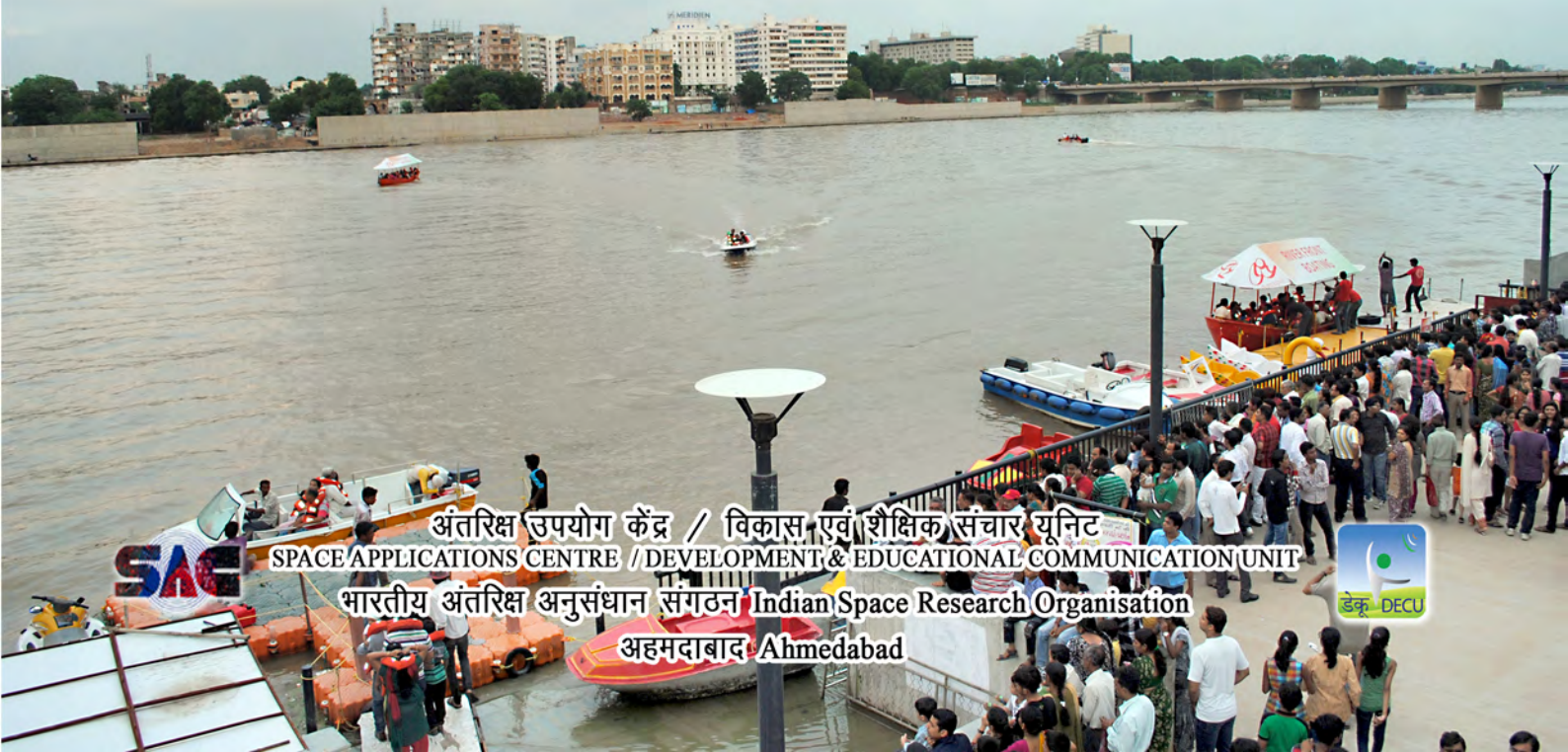

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र / विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट
SPACE APPLICATIONS CENTRE / DEVELOPMENT & EDUCATIONAL COMMUNICATION UNIT
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन Indian Space Research Organisation
अहमदाबाद Ahmedabad

तकनीकी प्रभागों को सर्वश्रेष्ठ हिन्दी कार्य निष्पादन हेतु निदेशक, सैक द्वारा 26 जनवरी 2014 को दिए गए पुरस्कार

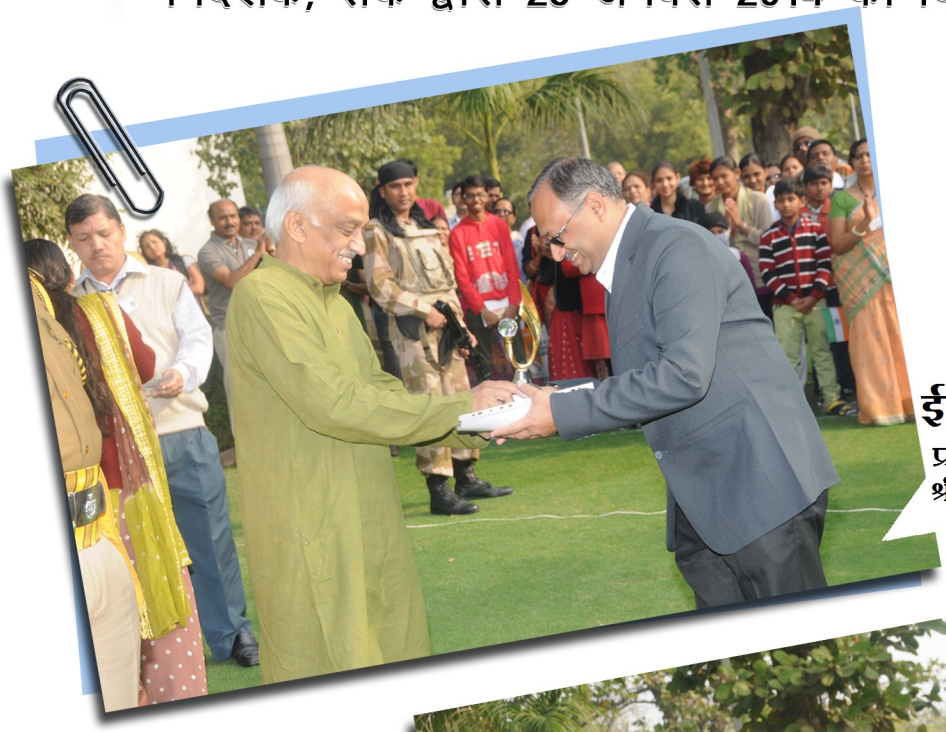

ईएफपीडी

प्रथम पुरस्कार

श्री दिनेश कुमार अग्रवाल

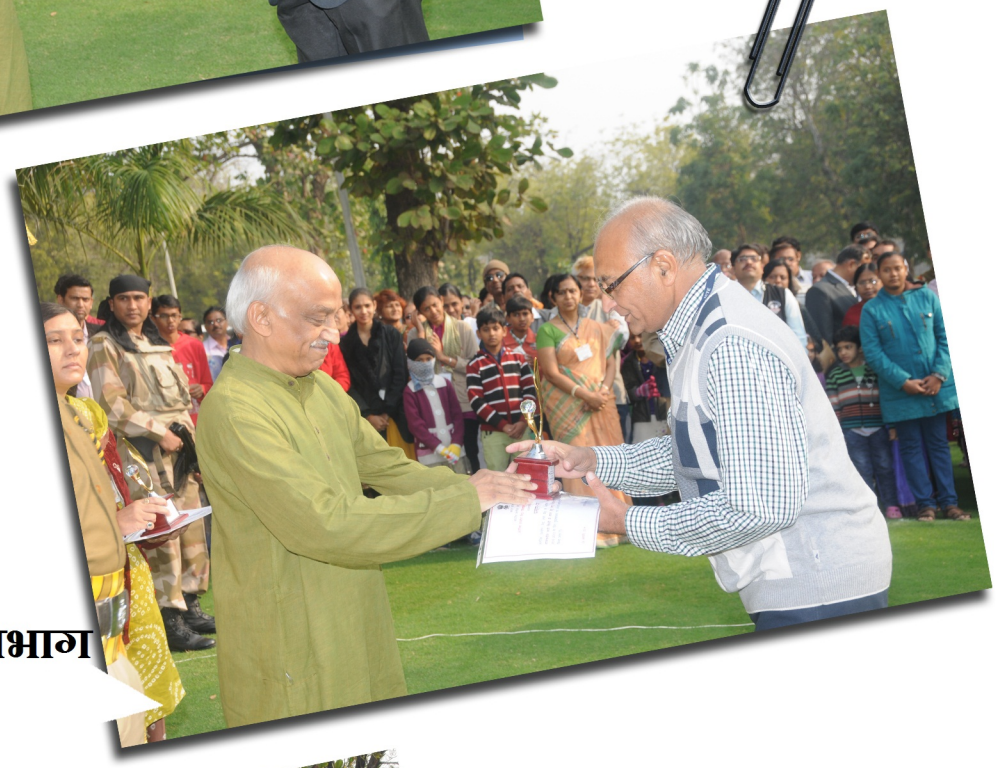

पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग

द्वितीय पुरस्कार

डॉ. मनीष पड्या

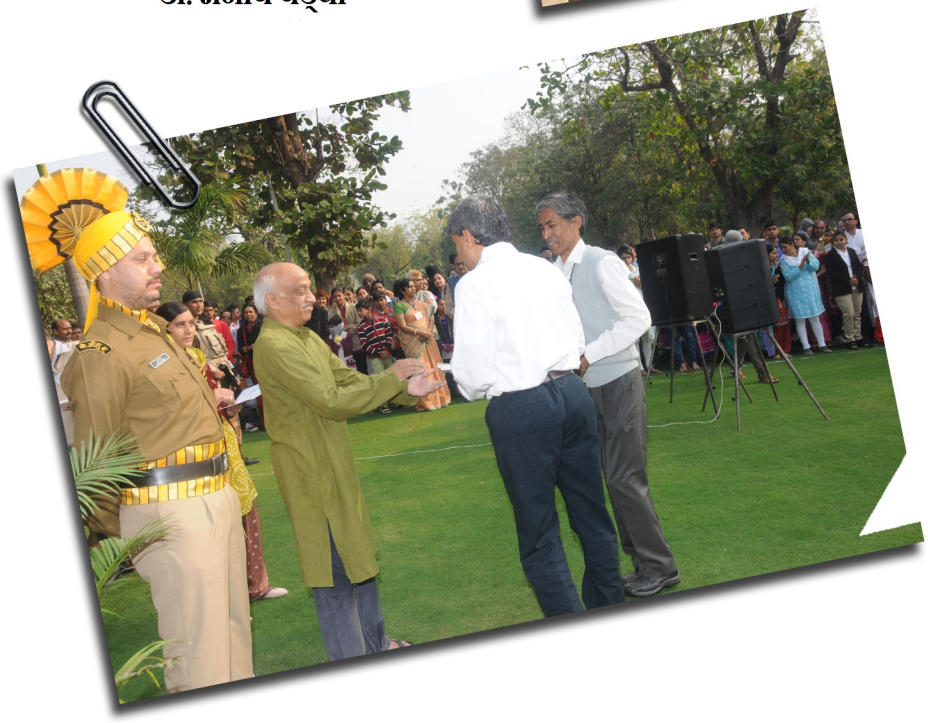

एसटीपीडी

तृतीय पुरस्कार

श्री विनोद लिमये एवं श्री जी.के. मेहरा

अभिव्यक्ति
हिंदी गृह पत्रिका

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र
तथा
विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट
अहमदाबाद

वर्षः 2014 (प्रथमांक)
अंकः 8

परम संरक्षक
श्री आ.सी.किरण कुमार, निदेशक, सैक एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

संरक्षक
श्री विलास एस.पलसुले, निदेशक, डेकू एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डेकू

मार्गदर्शन
श्रीमती मल्लिका महाजन, भा.रा.से नियंत्रक, सैक एवं
सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

सलाहकार मंडल
श्री सी.एन.लाल, प्रधान-ईक्यूसीडी
श्री धर्मेश भट्ट, वैज्ञा./अभि.-एसएफ
श्री मुकेश कुमार मिश्र, पुस्तकालय सहायक

प्रधान संपादक
श्री बी.आर.राजपूत
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, सैक

सह संपादक
श्रीमती नीलू एस.सेठ
हिंदी अधिकारी, सैक

प्रबंध संपादक
श्री सोनू जैन
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सहयोग
सुश्री रजनी सेमवाल
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, एवं
श्री जी.एल.त्रिवेदी
वरिष्ठ सहायक

आवरण पृष्ठ डिजाइन
मल्टीमीडिया लैब, डेकू

मुद्रण
पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग

छायांकन
फोटोलेब-ईपीएसए-एटीडीजी-आरएसीएफ

***

आवरण पृष्ठ अहमदाबाद शहर के मध्य स्थित साबरमति रिवरफ्रंट का चित्र मुद्रित है।

अनुक्रमणिका

पाठकों की कलम से	2
संदेशः निदेशक, सैक	3
संदेशः निदेशक, डेकू	4
संदेशः नियंत्रक, सैक	5
संपादकीय	6
सैक/डेकू में हिंदी गतिविधियां	7
ऊष्मा की रोचक बातें (लेख)	8
मानव जीवन का उद्देश्य (लेख)	15
घरवाली	16
ईश्वर का अभिनय (कहानी)	17
मंगलयान (कविता)	17
दुर्घटना के लिए जिम्मेदार सामान्य कारण	18
मिशन मंगल (लेख)	20
विज्ञान एवं शिक्षा में हिंदी का योगदान (लेख)	21
सामासिक संस्कृति (लेख)	22
मैं तो हूँ एक इंसान ही आखिर (कविता)	23
हिंदी हमारी भाषा (लेख)	24
दो कविताएं	25
माता-पिता (कविता)	26
इसरो देश की शान है (कविता)	26
आज के बेटे (कविता)	27
मन चाही बात (कहानी)	28
कोरा कागज (कविता)	29
प्रेरक प्रसंग (कहानी)	29
एक कर्मचारी की सेवानिवृत्ति (कविता)	29
जरूरत (कहानी)	30
बंदगोभी की शिकायत फूलगोभी से	31
इसरो के हम परिंदे (कविता)	32
होली	32
पानी की तलाश में (कहानी)	33
विज्ञान एवं शिक्षाः हिंदी का योगदान (लेख)	34
सुनहरे सपने (कहानी)	35
गागर में सागर	36
रिश्ते और हम	37
जिंदगी की ABCD	37
इन्सैट – 3D	38
हाजिर जवाब बच्चे	38
महात्मा गाँधी जी के विचार	39
अरज	39
विरासत की हिफाजत	40
भारतीय समाज की बदलती तस्वीर	41
भारत की संस्कृति	43
भ्रष्टाचार	44

पाठकों की कलम से.....

पत्रिका के लेख, चुटकुले, कविताएँ आदि बहुत सुंदर हैं। बाबूलाल मीणा की "श्रद्धांजलि" कविता हृदयस्पर्शी है। सोनू जैन का "कंप्यूटर पर शब्द संसाधन" लेख ज्ञानवर्धक है। प्रयास के लिए बधाइयाँ।

अशोक कुमार बिल्लूरे

वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, आईजेक, बेंगलूरु

श्री रंजन परनामी द्वारा लिखित कविता "हिंदी से नाता (हिंदी की जुबानी)", श्री जितेंद्र खर्डे द्वारा लिखित "हास्य और हवाः तंदुरस्ती की दवा" एवं श्री अमर ज्योति की कविता "वो गाँव मेरा जब याद आया" काफी अच्छी लगी। साथ ही, श्री बालूलाल मीणा के "डायरी के अविस्मरणीय पन्ने (उत्तराखंड आपदा- एक संस्मरण)" को पढ़कर हृदय द्रवित हो गया।

डॉ.शंकर कुमार

वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, शाखा सचिवालय-अंतरिक्ष विभाग, नई दिल्ली

इस पत्रिका में विविध विषयों पर प्रकाशित हिंदी लेख, कविताएं, समसामयिक घटनाक्रम रोचक एवं सराहनीय हैं। श्री कमलेश कुमार बराया द्वारा उष्मा की कुछ रोचक बातों पर लिखा गया लेख काफी सराहनीय ज्ञानवर्धक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ और अंतर्निहित दृश्यांकन अत्यंत आकर्षक हैं। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका हिंदी भाषा के विकास एवं ज्ञान-विज्ञान के प्रचार प्रसार में मील का पत्थर साबित होगी।

सरला

वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, एमसीएफ, हासन

आकर्षक पृष्ठ के साथ "अभिव्यक्ति" का सातवाँ अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका से न सिर्फ राजभाषा संबंधी क्रिया-कलापों एवं कार्यक्रमों की झाँकी मिली अपितु कुछ श्रेष्ठ लेख भी पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। श्री कमलेश कुमार बराया द्वारा लिखित ऊष्मा की कुछ रोचक बातें, सोनू जैन की रचना कंप्यूटर पर शब्द संसाधन : भारतीय भाषा संदर्भ आम पाठकों को अच्छी जानकारी देते हैं। बाबू लाल मीणा जी का लिखा "डायरी के अविस्मरणीय रेखांकित पन्ने" वास्तव में केदारनाथ आपदा का भयावह दृश्य सामने लाकर खड़ा कर देता है। हमारी संवेदनाएं उनके साथ हैं। कविताएं भी आकर्षक बन पड़ी हैं।

पत्रिका अपेक्षित स्तर को बनाए रखने में कामयाब रही है, जिसके श्रेय संपादकीय समिति के सभी सदस्यों को जाता है। हिंदी माह समारोह के दौरान आयोजित अभूतपूर्व भागीदारी कर्मचारियों की हिंदी के प्रति रुचि एवं समर्पण व्यक्त करता है। आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएं एवं पत्रिका प्रेषित करने के लिए धन्यवाद।

एम.जी. सोम शेखरन नायर

वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, एसडीएससी-शार

सबसे पहले तो आपके केंद्र को सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यन्वयन के लिए दिए गए पुरस्कार के लिए हार्दिक बधाइयाँ।

यह बड़े गर्व की बात है कि आपके केंद्र के वैज्ञानिक हिंदी में तकनीकी लेखन में बढ़-चढ़कर योगदान देते हैं। उनके इन प्रयासों में माननीय राष्ट्रपति द्वारा हिंदी में मौलिक लेखन पुस्तक लेखन के लिए दिए गए पुरस्कार हेतु बधाई। पत्रिका में वैज्ञानिक लेखों के साथ-साथ कविताओं तथा कहानियों से इसकी विविधता झलकती है। विविध राजभाषा गतिविधियों को भी पत्रिका में बखूबी आवृत्त किया गया है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रकाशित होती रहे, इसी शुभेच्छा के साथ पुनः आपको हार्दिक बधाई।

मीनाक्षी सक्सेना

हिंदी अधिकारी, एनआरएससी, हैदराबाद

आ.सी.किरण कुमार,
निदेशक, सैक एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

संदेश

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नीतभारों एवं अनुप्रयोगों के अनुसंधान एवं विकास के लिए लिए समर्पित यह केंद्र राजभाषा कार्यान्वयन से जुडी गतिविधियों के क्षेत्र में भी सदैव अग्रणी रहा है। इसी का परिणाम है कि संसदीय राजभाषा समिति अपने निरीक्षणों के दौरान सैक द्वारा किए जा रहे राजभाषा कार्यान्वयन की सराहना करते रहे हैं, मैं इसे केंद्र के सभी स्टाफ सदस्यों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम मानता हूँ और अपेक्षा रखता हूँ कि यह प्रयास उत्तरोत्तर प्रगतिशील रहेंगे।

केंद्र के वैज्ञानिकों, वरिष्ठ अधिकारियों और अन्य सभी कार्मिकों में संघ की राजभाषा हिंदी हिंदी के प्रति सदैव लगाव रहा है। केंद्र द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली हिंदी तकनीकी संगोष्ठियों, हिंदी माह, विश्व हिंदी दिवस, आदि कार्यक्रमों में सभी की सक्रिय सहभागिता इसकी परिचायक है। दैनन्दिन कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का प्रयोग भी उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। सैक में राजभाषा कार्यन्वयन हेतु निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप कार्यनिष्पादन किया जा रहा है।

इस पत्रिका का प्रकाशन केंद्र के सभी कार्मिकों को ऐसा मंच प्रदान कर रहा है, जिसमें वे अपने निर्धारित दैनंदिन कार्य से इतर, अपने ज्ञान, संवेदनशीलता और भाषागत कौशल के माध्यम से अन्य लोगों से जुड़ सकें।

मैं 'अभिव्यक्ति' के आठवें अंक के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

आ सी किरण कुमार

(आ.सी.किरण कुमार)

विलास एस. पलसुले,
निदेशक, डेकू एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डेकू

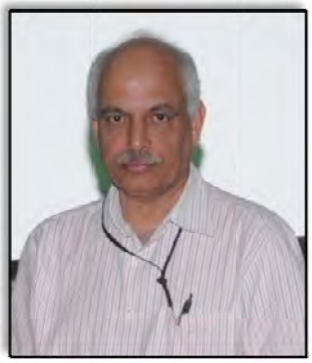

संदेश

भारत के विविधतायुक्त सांस्कृतिक और बहुविध भाषा परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए, किसी एक भाषा को देश की संपर्क भाषा अथवा राजभाषा के रूप में चुना जाना और जनता द्वारा उसे स्वीकार किया जाना अपने आप में भारत की विशाल हृदयता का परिचायक है। भारत की जनता ने खुले दिल से हिंदी को अपने दैनंदिन जीवन में अपनाया एवं मनोरंजन जगत, सोश्यल मीडिया और मोबाइल फोन जैसे संचार माध्यमों ने इसे बल प्रदान किया।

राजकीय कामकाज में भी हिंदी का चलन बढ़ रहा है। गहन तकनीकी और विशुद्ध वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों के लिए समर्पित भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में कोई कमी नहीं रखी है। देश के विभिन्न भागों में स्थित केंद्र/ यूनिटों द्वारा प्रतिवर्ष हिंदी में अनेक तकनीकी संगोष्ठियों का आयोजन, हिंदी पत्र-पत्रिकाओं पत्रिकाओं का प्रकाशन और मुख्य धारा के कार्यक्रमों में हिंदी का प्रगतिशील प्रयोग इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

'अभिव्यक्ति' पत्रिका का प्रकाशन भी इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इस पत्रिका ने केंद्र में हिंदी लेखन के प्रति अभिरुचि बढ़ाई है वहीं पाठक भी इसे पसंद कर रहे हैं।

मैं इस पत्रिका के लिए लेखकों तथा संपादक मंडल द्वारा किए जा रहे श्रम एवं प्रयासों की की सराहना करता हूँ।

विलास पलसुले

(विलास एस. पलसुले)

मल्लिका महाजन, भा.रा.से
नियंत्रक, एवं
सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

संदेश

यदि किसी कार्य का उद्देश्य सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय हो तो वह अवश्य सफल होता है, उसके परिणाम भी दूरगामी होते हैं। भारत में राजभाषा के रूप में हिंदी को प्रतिष्ठापित करने के पीछे भी यही उद्देश्य था। शासन जनता की भाषा में हो, जिससे जनता और शासन एक दूसरे के निकट आकर लोकतंत्र की मूल भावना को मूर्त रूप प्रदान कर सकें।

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र और विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में अंतरिक्ष विभाग के अग्रणी कार्यालय हैं। हिंदी पत्राचार, राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अनुपालन के साथ-साथ, हिंदी तकनीकी संगोष्ठियों तथा हिंदी माह के दौरान आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में प्रतिभागियों की संख्या और दैनंदिन राजकीय कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को देखकर सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि इस केंद्र के कर्मचारियों में हिंदी के प्रति कितना लगाव और उत्साह है।

तकनीकी और प्रशासन क्षेत्र में तो हिंदी का प्रयोग देखने को मिलता ही है, साथ ही हिंदी को माध्यम बनाकर अपनी लेखनी का प्रयोग करके यह केंद्र अपनी संवेदनापूर्ण उर्वरता का परिचय भी देता है। सैक के वैज्ञानिकों द्वारा गूढ तकनीकी विषयों पर सरल हिंदी में पुस्तकें भी लिखी जा रहीं हैं, जिनमें से 07 पुस्तकों का लेखन कार्य संपन्न हो चुका है। हिंदी भाषा के विकास और प्रसार में पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए केंद्र हिंदी गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का प्रकाशन कर रहा है।

पत्रिका का प्रकाशन एक श्रमसाध्य कार्य है। लेखक, संपादक मंडल और इस कार्य से जुड़े सभी व्यक्ति सराहना के पात्र हैं।

मेरी यही शुभकामना है कि पत्रिका सफलता के नए आयामों का स्पर्श करे।

जय हिंद।

(मल्लिका महाजन)

संपादकीय.....

अभिव्यक्ति शब्द का प्रयोग मात्र मानवीय संवेदनाओं की क्रिया-प्रतिक्रियाओं तक सीमित रखना न्यायपूर्ण नहीं होगा। अभिव्यक्ति ने इस दुनिया में कई क्रांतियों और आविष्कारों को जन्म दिया है। चेतना रहित प्राकृतिक घटकों की प्रतिक्रियाओं को भी संवेदनशील होकर देखना होगा। उष्ण वातावरण में पानी की अभिव्यक्ति को पहचान कर भाप के इंजन का अविष्कार किया गया। पेड़ से टूटे सेब की अभिव्यक्ति को देखकर गुरुत्वाकर्षण के नियम रेखांकित किए गए, इस नियम ने विज्ञान के क्षेत्र में अनेक नवीन क्रांतियों का सूत्रपात किया। फलतः अभिव्यक्तियां ही नहीं अपितु अभिव्यक्तियों का सूक्ष्म अवलोकन भी अनुसंधान एवं विकास का समर्थ उत्प्रेरक है।

दासता और जुल्म के विरुद्ध स्वतंत्रता और सौहार्द की अभिव्यक्ति ने देश, काल, वर्ण, लिंग और जाति के भेदभाव के बिना समान मानव अधिकारों के लिए क्रांति को जन्म दिया, जिसने विश्वग्राम की संकल्पना को साकार किया। इससे यह फलित होता है कि अभिव्यक्ति जितनी अधिक प्रखर होती है, न्याय, सौहार्द और सहिष्णुता के अवसर उतने ही प्रबल होते हैं।

कंप्यूटर और इंटरनेट के आगमन के बाद संचार माध्यमों के सशक्त और प्रभावशील हो जाने से अभिव्यक्ति के प्रसार को बल मिला है। इससे व्यापक मुद्दों पर जन भागीदारी बढ़ी है। व्यक्ति अपनी सीमाओं और अधिकारों के प्रति जागरूक हुआ है, जिसके कारण नीति-निर्धारण पर जरूरतों और आकांक्षाओं का सीधा प्रभाव पड़ रहा है।

इस संदर्भ में एक और तथ्य समझने की आवश्यकता है कि व्यापक जनमानस तक पहुँच बनाने के लिए अभिव्यक्ति की भाषा का चयन भी एक महत्वपूर्ण बिंदु है। लोकप्रिय जननायक यहाँ सहज ही उस भाषा का चयन करते हैं जिसे लोकतांत्रिक प्रणाली के अधिक से अधिक सदस्य समझ सकें। मनोरंजन जगत भी इसी सिद्धांत का अनुकरण करते हुए अपनी कामयाबी का दायरा साल-दर-साल बढ़ाता जा रहा है।

सारतः अभिव्यक्ति जगत को जीवंत बनाती है। अभिव्यक्ति सृष्टि के प्रत्येक अंश को मूर्तिमान करती है, उसे साकार करते हुए नये आयामों से जोड़ती है। कला, साहित्य, संगीत, नृत्य, चित्रकारी यहाँ तक कि रोना-हँसना, मुस्कुराना-उदास होना, विषाद-हर्ष - यह सभी अभिव्यक्तियाँ ही तो हैं। अभिव्यक्तियों के इन रंग-बिरंगे चित्रों से ही जगत शोभित होता है। यह अभिव्यक्तियां ही तो एक-दूसरे को निकट लाने में संवाहक की भूमिका अदा करती हैं।

हम भी इस पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के माध्यम से सभी को राजभाषा हिंदी के निकट लाने के लिए प्रयासरत हैं। विगत सात अंकों के माध्यम से इस संवाद को स्थापित करने का प्रयास, सभी ने खूब सराहा है। इसी सराहना का प्रमाण अभिव्यक्ति में प्रकाशन हेतु प्राप्त होने वाली रचनाओं की संख्या में अभिवृद्धि के रूप में फलित हो रहा है। पाठकों से मिल रहे उत्साहजनक प्रतिसाद ने भी उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है। हमें आशा है कि विगत अंकों की तरह अभिव्यक्ति के आठवें अंक को भी आपसे उतना ही प्रेम और अपनापन मिलेगा।

-संपादक

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र/ विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट में हिंदी गतिविधियाँ

विश्व हिंदी दिवस समारोह

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र तथा विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट (डेकू), अहमदाबाद में 10 जनवरी 2014 को विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सैक तथा डेकू के कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध एवं तकनीकी अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सैक के विक्रम हॉल में संपन्न इन प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। उपस्थित प्रतिभागियों ने कार्यालयीन एवं निजी जीवन में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने तथा अन्य लोगों को भी हिंदी अपनाने के लिए प्रेरित करने का संकल्प दोहराया।

सैक के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री बी.आर.राजपूत ने बताया कि जोहान्सबर्ग में आयोजित नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान यह देखने में आया कि हिंदी भारत की सीमाओं को पार करते हुए विश्व के अनेक देशों में लोकप्रियता के नये आयाम गढ़ रही है। निबंध प्रतियोगिता समिति के संयोजक श्री वी.के.जैन, प्रधान, ईटीएडी, सैक ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के अनुकूल वातावरण तैयार करने में इन अनौपचारिक प्रतियोगिताओं के आयोजन को महत्वपूर्ण बताया।

हिंदी कार्यशाला

सैक और डेकू, अहमदाबाद के परिचर वर्ग के कर्मचारियों (प्रथम बैच) के लिए 24 दिसंबर 2013 को एकदिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री सी.एन.लाल, कल्याण अधिकारी/ प्रधान-ईक्यूसीडी, सैक ने की। श्री सी.एन. लाल ने उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि संघ सरकार की राजभाषा हिंदी को हमें अपने दैनंदिन कामकाज में अपनाना चाहिए और हिंदी में कार्य करने पर सरकार अपने कर्मचारियों को प्रोत्साहन स्वरूप अनेक पुरस्कार प्रदान करती है। उद्घाटन सत्र में श्री बी.आर.राजपूत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, सैक ने बड़े ही सरल और सुबोध शब्दों में हिंदी कार्यशाला की उपयोगिता और महत्व पर प्रकाश डाला। उद्घाटन कार्यक्रम के पश्चात् श्री राजपूत द्वारा कार्यशाला के प्रथम सत्र में परस्पर संवाद शैली में परिचर वर्ग के कर्मचारियों द्वारा कार्यालय में किए जाने वाले दैनंदिन कार्यों में हिंदी के प्रयोग के अवसरों पर चर्चा की। चाय काल के बाद द्वितीय सत्र में छुट्टी, भविष्य निधि, अंशदायी स्वास्थ्य सेवा योजना आदि से संबंधित विविध प्रकार के फार्मों को हिंदी में भरने का अभ्यास कराया गया।

सैक और डेकू, अहमदाबाद के परिचर वर्ग के कर्मचारियों (द्वितीय बैच) के लिए 19 फरवरी 2014 को एकदिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री सी. एन. लाल, कल्याण अधिकारी/ प्रधान-ईक्यूसीडी, सैक ने की। श्री सी.एन. लाल ने उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि परिचर वर्ग के कर्मचारियों को समूह ग में रखा गया है और उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे कार्यालयीन कामकाज में अधिक जिम्मेदारी और सक्रियता का प्रदर्शन करें और अपने कामकाज में हिंदी का प्रयोग करें। उद्घाटन सत्र में श्री बी.आर.राजपूत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, सैक ने

बड़े ही सरल और सुबोध शब्दों में हिंदी कार्यशाला का परिचय देते हुए प्रतिभागियों को बताया कि अंतरिक्ष विभाग ने हिंदी में अधिक से अधिक काम करने पर परिचर एवं वाहन चालक वर्ग के लिए अलग से प्रोत्साहन योजना का प्रावधान किया है।

गणतंत्र दिवस

26 जनवरी 2014 को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र परिसर में गणतंत्र दिवस मनाया गया। इस अवसर पर तकनीकी अनुभागों में हिन्दी कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लागू प्रोत्साहन योजना के अधीन तकनीकी प्रभागों को चल-वैजयंती एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए और हिन्दी माह 2013 के दौरान अधिकतर कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने हेतु लागू प्रोत्साहन योजना के अधीन स्टाफ सदस्यों को पुरस्कृत किया गया। विश्व हिंदी दिवस समारोह के विजेता प्रतिभागियों को भी इस अवसर पर निदेशक, सैक द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। अंतरिक्ष विभाग/ इसरो के विभिन्न केंद्र/ यूनिटों में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चों के लिए लागू हिंदी योग्यता पुरस्कार योजना के अंतर्गत भी कक्षा 10 में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले बच्चों को भी नगद पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले बच्चों को योग्यता पुरस्कार

सीबीएसई – कक्षा 10

विद्यार्थी का नाम	कर्मचारी का नाम	पुरस्कार
शिंजन दत्ता	श्री सुजय दत्ता	प्रथम
मधुली देवाशीष गोस्वामी	श्री देवाशीष रामनाथ गोस्वामी	द्वितीय
बिंदल आशुतोष अरूण	श्री अरूण बिन्दल	तृतीय

गुजरात राज्य बोर्ड – कक्षा 10

1	आर्या जॉयल मुकेश	मुकेश डी. आर्या	प्रथम

हिंदी माह के दौरान अधिक से अधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने हेतु लागू प्रोत्साहन योजना

नाम	भाषा वर्ग	पुरस्कार
श्री मुकेश कुमार मिश्र	हिन्दी भाषा वर्ग	प्रथम
श्री बी.के. सुखवाणी	हिन्दी भाषा वर्ग	द्वितीय
श्री मनोज के. निमेश	हिन्दी भाषा वर्ग	तृतीय
श्री जैमिन शाह	हिन्दीतर भाषा वर्ग	प्रथम
सुश्री चंपा ठक्कर	हिन्दीतर भाषा वर्ग	द्वितीय
श्री राजेश शास्त्री	हिन्दीतर भाषा वर्ग	तृतीय
श्री राजेन्द्र गायकवाड़	हिन्दीतर भाषा वर्ग	प्रोत्साहन
श्री जे.एच. पटेल	हिन्दीतर भाषा वर्ग	प्रोत्साहन
श्री निकुंज डी. दवे	हिन्दीतर भाषा वर्ग	प्रोत्साहन

तकनीकी प्रभागों के लिए लागू हिंदी प्रोत्साहन योजना के विजेता प्रभाग

प्रभाग का नाम	पुरस्कार
ईएफपीडी	प्रथम
पुस्तकालय	द्वितीय
एस.टी.पी.डी.	तृतीय
ताप निर्वात् परीक्षण प्रणाली प्रभाग	प्रोत्साहन
जलवायु परीक्षण प्रणाली प्रभाग	प्रोत्साहन

पर्यावरणीय परीक्षा प्रणाली ग्रुप	प्रोत्साहन

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कृत विजेता प्रतिभागी

नाम	भाषावर्ग	प्रतियोगिता	पुरस्कार
प्रतीक ए. कुमार जैन	हिंदीतर	तकनीकी अनुवाद निबंध	प्रथम तृतीय
दिनेश कुमार अग्रवाल	हिंदी	निबंध तकनीकी अनुवाद	प्रथम प्रोत्साहन
जितेन्द्र खर्डे	हिंदीतर	निबंध	प्रथम
सत्यप्रिय मित्तल	हिंदी	तकनीकी अनुवाद	प्रथम
मुकेश कुमार मिश्र	हिंदी	तकनीकी अनुवाद निबंध	द्वितीय प्रोत्साहन
देवांग मांकड	हिंदीतर	निबंध	द्वितीय
प्रितेश सिन्हा	हिंदी	निबंध	द्वितीय
बी.एन. शर्मा	हिंदीतर	तकनीकी अनुवाद	द्वितीय
अमिय बिश्वास	हिंदीतर	तकनीकी अनुवाद निबंध	तृतीय प्रोत्साहन
अभिषेक शुक्ला	हिंदी	निबंध	तृतीय
आशिष सोनी	हिंदीतर	तकनीकी अनुवाद एवं निबंध	प्रोत्साहन
कमलेश कुमार बराया	हिंदी	तकनीकी अनुवाद	तृतीय
दिनेश नौलखा	हिंदी	तकनीकी अनुवाद एवं निबंध	प्रोत्साहन
अजय कुमार सिंह	हिंदी	निबंध	प्रोत्साहन
अपूर्व बी. प्रजापति	हिंदीतर	तकनीकी अनुवाद	प्रोत्साहन
आदित्य पतिंगे	हिंदीतर	निबंध	प्रोत्साहन
जिगर गांधी	हिंदीतर	तकनीकी अनुवाद	प्रोत्साहन
जितेन्द्र कुमार	हिंदी	तकनीकी अनुवाद	प्रोत्साहन
ज्ञान सिंह	हिंदी	तकनीकी अनुवाद	प्रोत्साहन
पुरुषोत्तम गुप्ता	हिंदी	तकनीकी अनुवाद	प्रोत्साहन
यज्ञेश आर. पटेल	हिंदीतर	तकनीकी अनुवाद	प्रोत्साहन
रवि एन. वाघेला	हिंदीतर	निबंध	प्रोत्साहन
संगीत कुमार मिश्र	हिंदी	निबंध	प्रोत्साहन
सुनील सिंह	हिंदी	तकनीकी अनुवाद	प्रोत्साहन

नराकास प्रतियोगिताओं में पुरस्कार विजेताओं को प्रशस्ति पत्र

नाम	प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार
मुकेश कुमार मिश्र	टिप्पण आलेखन एवं अनुवाद प्रतियोगिता	प्रथम पुरस्कार
संगीत कुमार मिश्रा	सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता	प्रथम पुरस्कार
पूजा कक्कड़	चित्र देखो कहानी लिखो प्रतियोगिता	विशेष (सांत्वना) पुरस्कार
आशिष सोनी	आशुभाषण प्रतियोगिता	विशेष (सांत्वना) पुरस्कार

<u>व्याख्यान</u>:सैक के एसईडीए क्षेत्र के वैज्ञानिक श्री अश्विनी कुमार द्वारा अंतरिक्ष यान प्रचालन क्रियाएं और अंतरग्रहीय अभियान- एक परिचय विषय पर हिंदी में तकनीकी व्याख्यान दिया गया।

<u>अन्य</u>: केंद्र में 28/10/2013 से 02/11/2014 तक सतर्कता सप्ताह, 20 अगस्त, 2013 को सद्भावना दिवस, 4 मार्च, 2013 से 10 मार्च, 2013 तक केंद्र में राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह मनाया गया। इस दौरान स्टाफ सदस्यों के लिए हिंदी/गुजराती/अंग्रेजी निबंध लेखन तथा वक्तृता प्रतियोगिता मात्र हिंदी में आयोजित की गई।

ऊष्मा की कुछ रोचक बातें

कमलेश कुमार बराया

लेखक ने यांत्रिकी अभियांत्रिकी में स्नातक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मुंबई से तापीय एवं तरल अभियांत्रिकी में स्नातकोत्तर एवं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से इटालियन भाषा में प्रवीणता का डिप्लोमा की शिक्षा ग्रहण की है। वर्तमान में अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के संरचना एवं तापीय विश्लेषण प्रभाग में वैज्ञानिक / अभियंता - एसएफ के पद पर कार्यरत है। केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों पर आपके लेख दो बार आचार्य सत्येन पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं। हाल ही में श्री बराया जी को हिंदी पत्रिका में प्रकाशित तकनीकी विषय पर श्रेष्ठ हिंदी लेख के लिए राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत किया गया है।

हमारे जीवन के विभिन्न क्रिया-कलापों में ऊष्मा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है; लेकिन फिर भी कई सामान्य घटनाओं में हम ऊष्मा की भूमिका एवं उसके व्यवहार से अनभिज्ञ होते हैं। इस लेख में पाठकों को कुछ रोचक प्रश्नों एवं जानकारियों द्वारा हमारे जीवन में ऊष्मा से संबंधित पहलुओं से परिचित कराने का प्रयास किया गया है।

क्या मोटे कांच की दीवार से बना चाय का गिलास अधिक सुरक्षित है ?

हमने कई बार अनुभव किया है कि गर्म चाय या अन्य पेय डालने से कभी-कभी कांच का गिलास चटक जाता है। उपर्युक्त प्रश्न का सही उत्तर जानने के लिए हमें पहले यह सोचना होगा कि गर्म चाय से कांच का गिलास क्यों चटक जाता है।

जब हम कांच के गिलास में गर्म चाय डालते हैं तो उसके अंदर वाली सतह चाय के तापमान के कारण गर्म हो जाती है; जबकि बाहरी सतह अपेक्षाकृत ठण्डी रहती है। कांच ऊष्मा का अच्छा चालक नहीं है, इसलिए कांच की मोटी दीवार में चाय द्वारा दी गई ऊष्मा आंतरिक सतह से बाहरी सतह तक समुचित मात्रा में नहीं पहुंच पाती है। ऊष्मा की भिन्न मात्राओं के कारण दोनों दीवारों के तापमान में भी अधिक अंतर हो जाता है। अधिक तापमान के कारण आंतरिक दीवार का फैलाव अधिक होता है; जबकि कम तापमान के कारण बाहरी दीवार का फैलाव बहुत कम होता है। कांच के गिलास की आंतरिक एवं बाहरी सतहों पर भिन्न फैलाव के कारण कांच के अंदर प्रतिबल उत्पन्न हो जाते हैं। जब ये प्रतिबल इतने अधिक हो जाते हैं कि कांच इन्हें सहन नहीं कर सकता है तो कांच की दीवार चटक जाती है।

मोटे कांच की दीवार का तापीय प्रतिरोध अधिक होता है अर्थात यह ऊष्मा को आंतरिक सतह से बाहरी सतह की ओर जाने से रोकने में अधिक समर्थ होगी, जिससे दोनों सतहों पर तापमानों में अधिक अंतर होगा परिणाम स्वरूप दोनों सतहों के फैलाव में अधिक अंतर होगा और गिलास की दीवार के चटकने की संभावना भी अधिक होगी।

इसके विपरीत पतले कांच की दीवार का तापीय प्रतिरोध अपेक्षाकृत कम होता है इसलिए दीवार की आंतरिक एवं बाहरी सतहों पर तापमानों में अंतर भी कम होने के परिणामस्वरूप पतले कांच की दीवारों के तापीय फैलाव में कम अंतर होगा। पतले कांच की दीवार में तापीय फैलाव में कम अंतर के कारण उसमें उत्पन्न प्रतिबल भी कम होता है इसलिए गर्म चाय के कारण पतले कांच की दीवार वाले गिलास के चटकने की संभावना अपेक्षाकृत कम होती है। इस प्रकार गर्म चाय के लिए पतले कांच की दीवार से बना गिलास अधिक सुरक्षित है। बर्नर पर सीधे पानी उबालने के लिए केमिस्ट पतले कांच से बने पात्रों का ही उपयोग करते हैं।

किसी पात्र में पानी को गर्म करने के लिए हम उसके नीचे वाले तल को गर्म करते हैं, क्या पानी या पेय को ठण्डा करने के लिए भी निचले भाग से ही ठण्डा करना चाहिए ?

जब हम किसी पात्र में पानी को गर्म करते हैं तो पात्र को सीधे आग की लौ के ऊपर रखते हैं। ऐसा करना ठीक भी है क्योंकि पात्र के नीचे की हवा गर्म होकर हल्की हो जाती है। आर्किमिडीज के उत्प्लावकता के सिद्धांत के अनुसार गर्म हवा ऊपर की ओर उठने लगती है और थोड़े समय में ही गर्म हवा संपूर्ण पात्र को चारों ओर से घेर लेती है जिससे पात्र में रखा पानी तेजी से गर्म होने लगता है। इस तरह पात्र को लौ के ऊपर रखने से हम आग की लौ का उपयोग बेहतर तरीके से कर पाते हैं।

लेकिन हमें बंद पात्र में पानी या किसी पेय को ठण्डा करना हो तो क्या पात्र को बर्फ के ऊपर रखना चाहिए या बर्फ को पात्र के ऊपर रखना चाहिए ? हममें से कुछ ऐसा सोच सकते हैं कि पात्र को बर्फ के ऊपर रख देना चाहिए

लेकिन ये सही तरीका नहीं है; क्योंकि बर्फ के चारों ओर की हवा ठण्डी होकर नीचे ही रहती है तथा शेष पात्र चारों ओर से गर्म हवा से ही घिरा हुआ होने के कारण पात्र में रखा पेय तेजी से ठण्डा नहीं हो पाएगा। अब अगर हम पात्र को बर्फ के ऊपर रखने के बजाय बर्फ को पात्र के ऊपर रख देते हैं तो उस दशा में बर्फ को घेरी हुई हवा ठण्डी होकर नीचे की ओर जाकर संपूर्ण पात्र को घेर लेती है तथा यह ठण्डी हवा पात्र में रखे पेय को अधिक तेजी से ठण्डा करने में सहायक होती है। इसलिए किसी पात्र में बंद पेय को बर्फ से ठण्डा करने के लिए बर्फ को पात्र के ऊपर रखना बेहतर होगा।

वृक्षों के नीचे की हवा अपेक्षाकृत ठण्डी क्यों होती है ?

गर्मी के दिनों में हम सभी वृक्षों के नीचे ठण्डक का अनुभव करते हैं। सर्वप्रथम तो वृक्ष हमें सीधे सौर किरणों से बचाते हैं, इस कारण वृक्षों के नीचे ज़मीन का तापमान भी अपेक्षाकृत कम होता है। वृक्षों की पत्तियों में उपस्थित नमी का सतत वाष्पीकरण होता रहता है। वाष्पीकरण के लिए ऊष्मा की आवश्यकता होती है, पत्तियां उनके आसपास उपस्थित हवा से ही यह ऊष्मा ले लेती है। इस कारण पत्तियों के आसपास उपस्थित हवा का तापमान अपेक्षाकृत कम हो जाता है, यह हवा ठण्डी होने के कारण नीचे की ओर आने लगती है जो हमें ठण्डक प्रदान करती है।

वृक्षों की पत्तियों में नमी की आपूर्ति उसकी जड़ों द्वारा की जाती है। वृक्ष की जड़ें आर्द्र मिट्टी द्वारा घिरी हुई रहती हैं। मिट्टी की यह आर्द्रता वृक्ष की जडों एवं तने द्वारा केशिका प्रभाव के कारण वृक्ष की पत्तियों तक पहुंचती रहती है। केशिका प्रभाव का हमारे शरीर के तापनियंत्रण में भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। त्वचा में नमी की आपूर्ति एवं रक्त संचरण में भी केशिका प्रभाव की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मानव द्वारा निर्मित कई उपकरणों में भी केशिका प्रभाव की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारे घरों एवं कार्य स्थलों पर उपयोग में आने वाले लैपटॉप कंप्यूटरों की केन्द्रीय संसाधन इकाइयों (सी.पी.यू.) के तापनियंत्रण के लिए प्रयुक्त हीट सिंक में केशिका प्रभाव का उपयोग किया जाता है। लैपटॉप कंप्यूटरों के हीट सिंक में ऊष्मा के दक्षतापूर्वक स्थानांतरण के लिए एक तांबे की नली के आकार की प्रयुक्ति का उपयोग किया जाता है जिसे ऊष्मानली कहा जाता है। इस ऊष्मानली की आंतरिक सतहों पर सिंटर्ड धातु चिपका होता है जिसे केशिका बत्ती कहा जाता है। केशिका बत्ती के अतिरिक्त, ऊष्मानली में अल्प मात्रा में पानी और उसकी वाष्प उपस्थित रहते हैं। सी.पी.यू. की ऊष्मा से केशिका बत्ती में उपस्थित पानी वाष्प बनकर नली के दूसरे छोर पर जाकर संघनित हो जाती है, जिसे एक छोटे पंखे द्वारा ठण्डा रखा जाता है। संघनित द्रव केशिका बत्ती में केशिका प्रभाव द्वारा वापस ऊष्मा स्रोत की ओर पहुंचा दिया जाता है। इस प्रकार वाष्पीकरण और संघनन के चक्र द्वारा ऊष्मा का सतत स्थानांतरण होता रहता है और सी.पी.यू का तापमान निर्धारित सीमाओं में ही बना रहता है। अंतरिक्ष में पृथ्वी का चक्कर लगाते हुए कृत्रिम उपग्रहों में विभिन्न इलेक्ट्रॉनिकी घटकों के ताप नियंत्रण के लिए भी ऊष्मानलियों का उपयोग किया जाता है।

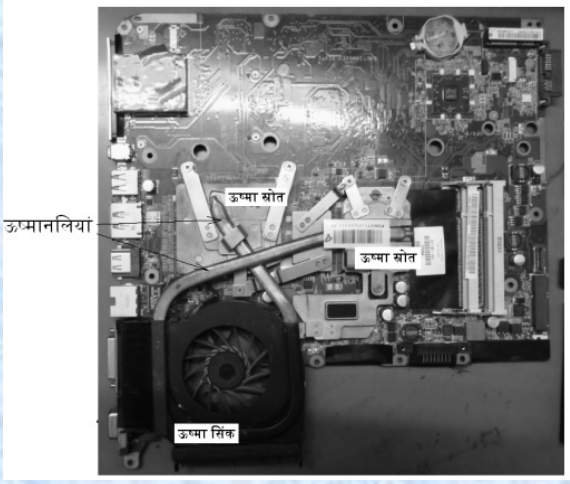

लेपटॉप कंप्यूटरों में ऊष्मानलियों द्वारा सीपीयू का शीतलन

इस प्रश्न की शुरूआत हमने वृक्ष से की थी; लेकिन इसका अंत कंप्यूटर के सी.पी.यू. की चर्चा से हो रहा है। विज्ञान एवं तकनीकी विषयों की यह एक महत्वपूर्ण खूबी है कि एक प्रश्न का उत्तर हमें विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश करा देता है।

एफिल टॉवर की ऊंचाई कितनी है ?

यह प्रश्न सुन कर हमें ऐसा लग सकता है कि हमारे सामान्य ज्ञान की परीक्षा ली जा रही है; लेकिन इस प्रश्न के परिशुद्ध उत्तर के लिए हमें सामान्य विज्ञान की जानकारी होना भी आवश्यक है।

एफिल टॉवर की ऊंचाई हमेशा समान नहीं होती है। यह मौसम के अनुसार बदलती रहती है, क्योंकि इतनी लंबी टॉवर की ऊंचाई उसके तापमान पर निर्भर करती है।

हम जानते हैं कि सामान्य धातुएं गर्म होकर फैलती हैं। धातुओं के फैलाव का उनके तापीय प्रसार गुणांक से अनुमान लगाया जा सकता है। एफिल टॉवर की ऊंचाई लगभग 300 मीटर से अधिक है। एक 300 मीटर की स्टील की संरचना का तापमान 1 ^{0}C बढ़ाने पर उसकी

लंबाई में 3 मिलिमीटर की वृद्धि हो जाती है। गर्मी के मौसम में पेरिस शहर में एफिल टॉवर जैसी संरचना का तापमान शून्य से 40 ^{0}C ऊपर तक पहुंच सकता है। इसी तरह सर्दियों के मौसम में इस संरचना का तापमान शून्य से 10 नीचे तक पहुंच सकता है। इस तरह मौसम के प्रभाव के कारण से एफिल टॉवर को 50 ^{0}C के उतार-चढ़ाव से गुजरना पड़ता है। तापमान के इस उतार-चढ़ाव के कारण एफिल टॉवर की ऊंचाई में 50 गुना 3 अर्थात 150 मिलिमीटर या 15 सेंटीमीटर तक का परिवर्तन हो सकता है।

फ्रांस की राजधानी पेरिस में एफिल टॉवर

तापमान में परिवर्तन के कारण एफिल टॉवर की ऊंचाई में होने वाले परिवर्तन का पता लगाने के लिए इनवार मिश्र धातु से बने तार का उपयोग किया गया था। इनवार से बने तार की लंबाई पर तापमान का प्रभाव नगण्य होता है। इसी कारण से इस मिश्र धातु का उपयोग उपग्रहों में संवेदनशील उपकरण जैसे कैमरा संरचना इत्यादि के निर्माण के लिए किया जाता है। तापमान के कारण इस मिश्र धातु से बने उपकरणों का आकार लगभग 'इनवेरियेबल' अर्थात स्थिर रहता है इसलिए इसे इनवार के नाम से जाना जाता है।

बंद खिड़की से हवा का झोंका !

सर्दी के मौसम में हमारे घर के कमरों की खिड़कियाँ पूरी तरह से बंद होने तथा उनमें कोई दरार नहीं होने के बावज़ूद भी हमें खिड़की के समीप हवा का प्रवाह महसूस होता है। यह बात सुनने में अजीब ज़रूर लगती है लेकिन इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

कमरों में हवा कभी स्थिर नहीं होती है। कमरों में हवा का अदृश्य प्रवाह सतत चलता रहता है। यह प्रवाह कमरे के विभिन्न भागों में तापमानों में भिन्नता के कारण होता है। हम जानते हैं कि गर्म हवा हल्की होकर ऊपर उठती है जबकी ठण्डी हवा अपेक्षाकृत भारी होने के कारण नीचे की ओर प्रवाहित होती है।

सर्दी के मौसम में कमरे की खिड़की वाली दीवार का तापमान बाहरी ठण्डी वायु के संपर्क में होने के कारण कमरे की अंदर वाली दीवारों के तापमान से कम होता है। कमरे के भीतर खिड़की वाली दीवार के समीप हवा उससे सीधे संपर्क में होने के कारण ठण्डी हो जाती है। यह ठण्डी हवा भारी होने के कारण कमरे के फर्श की ओर प्रवाहित होती है। ठण्डी हवा का यह प्रवाह अपेक्षाकृत गर्म हवा को कमरे की छत की ओर अर्थात ऊपर की ओर धकेलता है। इस तरह कमरे में खिड़की वाली दीवार के समीप वायु का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर हो जाता है यहीं कारण है कि हमें सर्दी के दिनों में बंद कमरे में हमारे पैरों के ऊपर से ठण्डी हवा के प्रवाह का अनुभव होता है।

खुरदरी बर्फ पर क्यों अधिक तेजी से फिसलते हैं?

हमारा सामान्य अनुभव है कि हम खुरदरे फर्श की तुलना में चिकने समतल फर्श पर आसानी से फिसल जाते हैं। लेकिन अगर हम बर्फ पर फिसलने की बात करें तो क्या बर्फ के समतल चिकने फर्श पर भी फिसलना आसान होता है? लेकिन हमारे अनुमान के विपरीत एक स्लेज खुरदरी बर्फ की फर्श पर अधिक आसानी से फिसल जाती है। जिनको कभी स्लेज खींचने का मौका मिला होगा तो उन लोगों ने जरूर इस बात का अनुभव किया होगा; लेकिन यह कैसे संभव हो पाता है कि खुरदरी बर्फ, समतल बर्फ की तुलना में अधिक फिसलन वाली होती है। हमें यह समझना चाहिए कि बर्फ की सतह समतल एवं चिकनी होने के कारण फिसलन वाली नहीं होती है। बर्फ की सतह फिसलन वाली इसलिए होती है क्योंकि दाब बढ़ाने पर बर्फ का गलनांक कम हो जाता है।

जब स्लेज समतल चिकनी फर्श पर चलती है, तब स्लेज का वजन बर्फ के बड़े क्षेत्रफल द्वारा वहन किया जाता है। जिससे बर्फ पर इतना दबाव नहीं बन पाता है कि वह पिघल जाए। किसी सतह पर दाब उस सतह के संपर्क क्षेत्रफल के व्युत्क्रमानुपाती होता है। जब एक स्लेज खुरदरी फर्श पर चलती है तो उसकी सतह का बर्फ से संपर्क बहुत कम क्षेत्र पर होता है। स्लेज का पूरा वजन बर्फ के कुछ बिंदुओं द्वारा ही वहन किया जाता है। स्लेज का वजन बहुत कम क्षेत्रफल पर गिरने से उन क्षेत्रों पर बर्फ पर बहुत अधिक दाब हो जाता है जिससे बर्फ कम तापमान पर भी पिघल जाती है। बर्फ के पिघलने से स्लेज और बर्फ की खुरदरी फर्श के बीच में पानी की एक पतली परत बन

जाती है। इस पानी की परत के कारण स्लेज खुरदरी फर्श पर भी आसानी से फिसल जाती है।

दाब के कारण बर्फ का गलनांक कम हो जाने से हमें यह भी स्पष्ट हो जाता है कि जब हम बर्फ के दो लोंदों को साथ में लाकर दबाते हैं तो वे जमकर एक हो जाते हैं।

नंगे पैर जलते हुए अंगारों पर चलना कैसे संभव होता है?

नंगे पैरों से लाल गर्म अंगारो पर बिना जले चलना कैसे संभव हो पाता है। इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें कोयले के बारे में जानना होगा। कोयला शुरू में लकड़ी के टुकड़े के समान होता है। लकड़ी में काफ़ी मात्रा में कार्बन, कुछ वाष्पशील कार्बनिक पदार्थ तथा थोड़ी मात्रा में पानी होता है।

वाष्पशील कार्बनिक अणु एक कार्बन आधारित अणु होता है जो गर्म करने पर वाष्प में परिवर्तित हो जाता है। पेट्रोल एक वाष्पशील कार्बनिक रसायन होता है। हम जब लकड़ी जलाते हैं तो वाष्पशील कार्बनिक अणुओं को धुएं के रूप में उठते हुए देखते हैं। आग की ऊष्मा के कारण वाष्पशील कार्बनिक पदार्थों एवं जल का वाष्पीकरण हो जाता है। आग, करतब दिखाने के थोड़े समय पहले ही लगा ली जाती है जिससे करतब दिखाने के समय कोयला लगभग शुद्ध कार्बन कोयले में बदल चुका होता है।

अगर हम इस शुद्ध कार्बन कोयले को हाथ में उठा कर देखें तो यह हमें बहुत ही हल्का महसूस होगा। कार्बन एक हल्का तत्व है, इसलिए कार्बन-फाइबर पदार्थ से बने बाइकों के फ्रेम एवं टेनिस के रैकट वजन में बहुत हल्के होते हैं। कोयले में अधिकतर हल्के कार्बन के अणु एवं हवा से भरी खाली जगह होती है, इसके अतिरिक्त इसमें पोटेशियम एवं कैल्शियम जैसे तत्व भी उपस्थित होते हैं जो कि राख में शेष बच जाते हैं। ऐसी कार्बन संरचना का हल्का पदार्थ ऊष्मा का बहुत खराब चालक होता है। ऐसे प्रदीप्त कोयले को जब हम त्वचा से स्पर्श करते हैं तो कोयले से त्वचा में ऊष्मा स्थानांतरण में काफ़ी समय लगता है। अगर कोयले लाल गर्म धातु के बने होते तो स्पर्श करने पर तुरंत बड़ी मात्रा में ऊष्मा का स्थानांतरण हो जाता और हमारी त्वचा जल जाती। इसके अतिरिक्त कोयले की राख एक अच्छा ऊष्मारोधी पदार्थ है।

कई लोग कोयले की राख से बर्फ के डब्बों को ऊष्मारोधी बनाने के लिए किया करते थे। लाल गर्म कोयले जब कोयले की राख से ढके हो तो ऊष्मा स्थानांतरण और कम हो जाएगा।

करतब दिखाने वाला व्यक्ति अंगारों पर तेजी से चलता है, इसलिए अंगारों से पैरों की त्वचा का स्पर्श बहुत अल्प अवधि के लिए ही होता है। अगर हम अंगारों पर काफ़ी समय के लिए स्थिर खड़े रहे तो निश्चित रूप से हमारी त्वचा जल जाएगी। करतब दिखाने वाला व्यक्ति अंगारों पर तेज चलते हुए कोयले के ऊपर कुल समय को सीमित कर देता है; इसलिए जलते हुए कोयले पर चलने के बावजूद भी उसके पैर जल नहीं पाते हैं।

हथेली पर आग

आपने जादूगरों को हथेली पर आग जलाकर उससे खेलते हुए देखा होगा। इस तरह के खेल से आकर्षित होने का मुख्य कारण हमारी यह सोच होती है कि आग अत्यधिक गरम होती है; लेकिन ऐसा कोई जरूरी नहीं है।

ऐसी आग जलाने के लिए हम रुई के एक छोटे टुकड़े को गेंद के आकार में बना लेंगे। अब हम एक पात्र में इस प्रकार का घोल लेंगे; जिसमें कार्बन डाई सल्फाइड और कार्बन टेट्रा क्लोराइड 2:1 के अनुपात में हो। अब रूई के टुकड़े को इन रसायनों के मिश्रण के घोल में डुबो कर बाहर निकाल देंगे, इसके बाद रूई को थोड़ा दबाकर निचोड़ देंगे, जिससे अतिरिक्त रसायन पृथक हो जाएगा। अब इस रूई के टुकड़े को जलाने पर निकलने वाली ज्वाला से हमारा हाथ मुश्किल से गर्म होगा। इस जलते हुए रूई के टुकड़े को हम एक हाथ से दूसरे हाथ में आसानी से उछाल सकते है।

इस ठण्डी आग के पीछे क्या रहस्य है इसे हमें जानना चाहिए। कार्बन डाई सल्फाइड दहन के दौरान कम ऊष्मा उत्पन्न करती है। इसके अतिरिक्त कार्बन डाई सल्फाइड की वाष्प का दाब अधिक होता है; इसलिए इसकी वाष्प रूई की गेंद के अनावृत्त भाग को ढक देती है, जिससे रूई की सतह का वायु के साथ सीधा संपर्क नहीं हो पाता है। दूसरी ओर कार्बन टेट्रा क्लोराइड का वाष्प दाब अपेक्षाकृत कम होता है तथा यह दहनशील नहीं होती है, इसलिए यह हथेली के नज़दीक नीचे की ओर एकत्रित हो जाती है। इस तरह कार्बन टेट्रा क्लोराइड हथेली को जलने से बचाती है।

ध्रुवीय भालू का ताप नियंत्रण

हम सभी जानते हैं कि उत्तरी ध्रुव के आर्कटिक क्षेत्र पर बर्फ जमा देने वाली ठण्ड पड़ती है, जहां पर वर्षभर तापमान

शून्य से भी काफ़ी नीचे होता है। ऐसे वातावरण में ध्रुवीय भालू कैसे जीवित रह पाते हैं ? ध्रुवीय भालू आर्कटिक क्षेत्र में जीवित रहने के लिए कई तरीकों से अपने शरीर का तापमान बनाए रखते हैं।

ध्रुवीय भालू

इनके पैर के तलवे मुलायम पतले बालों से ढ़के रहते हैं जो बर्फ पर चलते समय ऊष्मारोधी कवच का काम करते हैं। इसी तरह इनके शरीर की त्वचा भी लम्बे बालों से ढकी रहती है। ये लंबे बाल ऊष्मारोधी कवच के रूप में इनके शरीर की गर्मी को बाहर निकलने से रोकते हैं। जब ये बाल गीले हो जाते हैं तो ये साथ में चिपककर एक जलरोधी आवरण बना लेते है जो भालू को ठण्डे पानी के प्रभाव से बचा लेता है। इनके शरीर की त्वचा के नीचे मोटी चर्बी की परत जमी होती है, यह चर्बी की परत ऊर्जा भण्डारण के साथ-साथ ऊष्मारोधी कवच के रूप में भी कार्य करती है।

ध्रुवीय भालूओं का शरीर बड़ा होता है,जिससे इनके शरीर के बाहरी सतह का क्षेत्रफल एवं शरीर के आयतन का अनुपात न्यूनतम रखा जा सके। जब यह अनुपात न्यूनतम होता है तब इनकी त्वचा द्वारा वातावरण में ऊष्मा की हानि भी कम हो जाती है। इस प्रकार ये शरीर में उत्पन्न ऊष्मा को संरक्षित कर सकते हैं, जिससे शरीर का तापमान बनाए रखने में मदद मिलती है। इनके कानों का आकार भी छोटा होता है जिससे कानों की त्वचा से वातावरण में ऊष्मा की हानि न्यूनतम हो जाती है।

इसके विपरीत गर्म प्रदेशों में रहने वाले जानवर पतले होते है जिससे इनके शरीर के क्षेत्रफल एवं आयतन का अनुपात अधिक हो जाता है परिणामस्वरुप ये वातावरण में अधिक मात्रा में ऊष्मा का उत्सर्जन करके अपने शरीर को ठण्डा रख सकते हैं। इसी कारण गर्म रेगिस्तान में रहने वाली छिपकली लंबी एवं पतली होती है।

कागज की कड़ाही !

घरों में स्टील एवं एलुमिनियम के बर्तनों में पानी गर्म करना तो नित्य की बात है; लेकिन हम कागज से बनी कड़ाही में भी पानी गर्म कर सकते है। क्या ऐसा करने से कागज जलेगा नहीं और पानी गिरने से ज्वाला बुझ नहीं जाएगी ? हम कागज को मोड़ कर एक कड़ाही की तरह बना लेंगे, जैसा कि नीचे चित्र में दिखाया गया है एवं थोड़े पानी से भरकर एक मोमबत्ती को जलाकर कागज के बर्तन को मोमबत्ती की ज्वाला से नीचे से गर्म करते हैं। हम देखते हैं कि मोमबत्ती की ज्वाला कागज की कड़ाही को सीधा स्पर्श करने के बावज़ूद भी कागज को नहीं जला रही है तथा बर्तन में रखा पानी धीरे-धीरे गर्म होने लगता है। इसका कारण यह है कि किसी भी खुले पात्र में पानी 100^0C से अधिक तापमान पर नहीं पहुंच सकता है तथा पानी की ऊष्मा ग्रहण करने की क्षमता बहुत अधिक होती है। इसलिए पानी कागज की अतिरिक्त ऊष्मा को अवशोषित कर लेता है एवं कागज का तापमान इतना नहीं बढ़ने देता है कि इससे आग की ज्वाला निकलने लग जाए, इसलिए मोमबत्ती की ज्वाला के सीधे स्पर्श के बावज़ूद भी कागज नहीं जलता है।

कागज की कड़ाही में गर्म होता हुआ पानी

एक बुद्धिमान गृहिणी चाय की केतली को जलते हुए स्टोव पर उसे पानी या चाय से भर कर ही रखती है। स्टोव की ज्वाला से निकलने वाली ऊष्मा को पानी अवशोषित कर लेता है और केतली को किसी नुकसान से बचा लेता है। इसी कारण जो बर्तन झाल से जुड़े होते है उन्हें आग पर जब ही रखना चाहिए जब उनमें पानी भरा हो अन्यथा उनके झाल का जोड़ अत्यधिक गर्म होकर खुल जाएगा।

।। इति ।।

मानव जीवन का उद्देश्य

डॉ. आभा छाबड़ा
वैज्ञानिक/अभियंता

संसार में बहुत सारे बहुमूल्य पदार्थ हैं, उनमें से मानव जीवन सबसे उत्कृष्ट है। मनुष्य जीवन की तुलना में दुनिया के सभी संप्रदाय तुच्छ है। यह नर तन जीवात्मा के रहने का मकान है। अनेक जन्मों के पुण्य कर्मों के फलस्वरुप जीव को मानव जीवन पाने का सौभाग्य मिलता है। यह जीवन प्रभु की अनमोल देन है, ईश्वरीय रचना का अद्भुत नमूना है। परमात्मा ने इस शरीर के रुप में हमें करोड़ों की संपति मुफ्त में दी है। इसका एक एक अंग अपने में अमूल्य है। ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती जाती है शरीर की कीमत का पता चलता है। अन्य देहधारी जीवों से तुलना करें तो पता चलता है कि मानव जीवन कितना उपयोगी, महत्वपूर्ण और दुर्लभ है।

जीवन का लक्ष्य

सृष्टि की प्रत्येक वस्तु उद्देश्यपूर्ण है। मनुष्य परमात्मा की सर्वोत्तम कृति है अतः इसका भी कोई विशेष इहलोक और परलोक दोनों को सिद्ध कर सकता है। जबकि दूसरी योनियों में जीव सामान्य बुद्धि से केवल कर्मफल भोगता है। वेद, दर्शन, उपनिषद, आदि से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति मानते हैं। इन्हीं चारों के द्वारा मुनष्य जीवन पूर्णता को प्राप्त करता है। जीवन की यात्रा धर्म से आरंभ होकर मोक्ष की प्राप्ति पर पूर्ण होती है। यह मानव शरीर आत्मदर्शन और परमात्मा दर्शन के हेतु मिलता है। आज संसार में जितनी भी वस्तुओं में उन्नति एवं प्रगति नजर आ रही है वह सारी भौतिक तथा बहिर्जगत से संबंध रखती है। मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक उन्नति से ही सच्चे अर्थ में इंसान बनता है। आत्मा को प्रभु के सानिध्य में जो सुख-शांति संतोष, प्रसन्नता तथा आनंद प्राप्त होगा, वह जीवात्मा को भौतिक वस्तुओं के भोग और विषय वासनाओं आदि से प्राप्त नहीं हो सकता। जीवन में ऐसी स्थिति भी आती है जब भौतिक एवं सांसारिक दृष्टि से सब कुछ भरा-पूरा नजर आता है, परंतु अन्दर कोई कमी और अप्राप्त की याद कचोटती है। धन से आत्मा का सच्चा आनंद नहीं खरीदा जा सकता। धन शारीरिक व भौतिक सुख आराम दे सकता है, परंतु मन की शांति तथा आत्मा का आनंद नहीं दे पाएगा।

जीवन का उद्देश्य भूल गए

इस अमूल्य जीवन का उद्देश्य केवल धन कमाना ही नहीं है, जीवन का प्रयोग इससे बहुत आगे है। धन को सब कुछ समझने के कारण ही सुख, शांति, प्रसन्नता, संतोष, निरोगता, चरित्र और परिवार सब कुछ नष्ट हो रहा है। जीवन में उदासी, अशांति, एकाकीपन तथा नीरसता बढ़ रही है। पारस्परिक स्नेह, अपनत्व, एकता, सहयोग, संवेदना, आत्मीयता आदि गायब हो रहे हैं इसी कारण अशांति, संघर्ष और शारीरिक व मानसिक रोग बढ़ रहे हैं। व्यक्ति स्वभाव से हिंसक, क्रोधी, असंतुष्ट तथा चिड़चिड़ा हो रहा है। न दिन में चैन, न रात में नींद आती है। भूख उड़ गई और शरीर रोगों से भर गया। यदि धन से ही सच्चा सुख, शांति, निरोगता, संतुष्टि आदि प्राप्त होते, तो धनवान सुखी शांत व निरोगी होता। सच्चाई इससे उल्टी है धन के स्वामी रोगी, परेशान, अशांत व बेचैन हैं सब कुछ पैसे को मानने के कारण ही संसार में संघर्ष, झगड़े, विवाद, भ्रष्टाचार, अपराध, अत्याचार, हत्याएं और अशांति बढ़ रही है। तेजी से यह अमूल्य जीवन निरर्थक, उद्देश्यहीन व बेकार जा रहा है। अभी हम इसकी कीमत नहीं जान रहे हैं और जीवन खत्म होने पर रोते, पछताते, प्रायश्चित करते हैं। अमूल्य हीरे जैसा जन्म बेकार गया। वेद घोषणा करता है – "यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति"। यदि मानव जीवन पाकर भी आत्मा परमात्मा को नहीं जाना तो कितने भी शास्त्र पढ़ लो, धन संपदा जोड़ लो, कितने भी सुख साधन भोग के लिए बना लो, कोई विशेष महत्व नहीं है। तब पछताने से कुछ नहीं बनता। फिर भी जो जीवन शेष बचा है इसी को संभाल लेना समझदारी है। जीवात्मा नाना योनियों में भटकने के बाद मनुष्य जन्म पाता है इसे व्यर्थ गंवाना समझदारी नहीं है। जब तक शरीर स्वस्थ है बुढापा दूर है, इन्द्रियों में शक्ति तथा समय अनुकूल है आत्म कल्याण की दिशा में कुछ उपाय कर लेना बुद्धिमत्ता है।

पाश्चात्य जीवन शैली में भोगवाद की प्रधानता है जबकि भारतीय जीवन पद्धति में त्यागशीलता को महत्व दिया गया है। अध्यात्मवाद में आवश्यकताओं को घटाया

जाता है। प्रभु का सानिध्य और प्राप्ति भारतीय जीवन दर्शन का लक्ष्य है।

उद्देश्य प्राप्ति के आधार

जीने के लिए विचारों की आवश्यकता होती है। यदि व्यक्ति के पास जीने का ढंग, ज्ञान और अच्छे विचारों की पूंजी है तो वह व्यर्थ की अनेक चिंताओं व समस्याओं से बच जाएगा। जीवन तो सुंदर सुगंधित बगीचा है। कर्मों के फूलों से इसे महकाओ और इसी जीवन में अपने को ऊँचा उठाओ अपना सुधार करो। अपने दायित्व व कर्तव्य को सच्चाई तथा ईमानदारी से निभाते हुए जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ना है। उद्देश्य प्राप्ति के आधारस्वरूप शरीर के लिए अनुकूल भोजन, सहज स्वभाविक नींद, ब्रह्मचर्य तथा नियमित व्यायाम व प्राणायाम है अन्य साधनों में सत्संग, स्वाध्याय, प्रभु-भक्ति, प्रार्थना का भी विशेष महत्व है। शुद्ध कर्मों से मनुष्य सच्चे अर्थ में मानव कहलाता है। श्रेष्ठ कर्मों से ही जीवन में देवत्व के भाव जाग्रत होते हैं। ये कर्म संस्कार ही मानव जीवन को जीवन-मरण के बंधन में बांधते हैं। पुनर्जन्म का सिद्धांत हमारे जीवन दर्शन की महत्वपूर्ण पहचान है पूर्वजन्म था यह जन्म है और आगे फिर जन्म होगा इन सबका आधार कर्मफल है।

गीता का अमर संदेश

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।

वेदों, उपनिषदों, गीता व अन्य धर्मग्रंथों में परमात्मा के स्वरुप का विस्तार से वर्णन मिलता है। ऋग्वेद का कथन है – एक सद्विप्रा बहुधा वदंति। - परमात्मा एक है परंतु विद्वान लोग उसे कई नामों से पुकारते हैं। ईश्वर के गुण कर्म और स्वभाव के आधार पर उसके अनेक नाम हैं वह इस सृष्टि का कर्ता, पालक तथा संहर्ता तथा जीवों का कर्मफल दाता है। परमात्मा की सृष्टि रुपी काव्य-रचना को देखकर हम आवाक् रह जाते हैं। सूर्य, चन्द्र और ग्रह, उपग्रह सब नियमानुसार तथा अनुशासन में घूम रहे हैं। सृष्टि रचना में जो नियम व्यवस्था एवं अनुशासन है उसे देखकर तो बनाने वाले का बोध हो ही जाना चाहिए। अर्थात् परमात्मा को सर्वज्ञ तथा सर्व-शक्तिमान मानने से मनुष्य पाप वृतियों से ऊपर उठ जाता है और अपने को अकेला नहीं मानता। जब हममें यह भाव आ जाता है कि परमात्मा हमें सब जगह देख रहा है तो हम पाप व अधर्म में प्रवृत होने से बच जाते हैं।

जैसे वायु सर्वत्र विद्यमान है इसकी मूर्ति नहीं बनाई जा सकती, ऐसे ही परमात्मा सृष्टि के कण-कण में व्यापक है, जैसे - फूलों में सुगंध, लकड़ी में अग्नि किरणों में गर्मी। वह अपने गुण, कर्म स्वभाव से जड़ चेतन सभी में विद्यमान रहता है। वह प्रभु बाहर के मंदिरों में नहीं हृदय मंदिरों में मिलेगा। वह प्रभु चरण वंदना से नहीं कर्म वंदना से प्रसन्न होगा। प्रभु की असली अनुभूति हृदय रुपी मंदिर में ही संभव है क्योंकि वहाँ उपास्य (परमात्मा) और उपासक (आत्मा) दोनों विद्यमान हैं।

घरवाली

- ताराचंद कुहाड, कनिष्ठ अभियंता

चार दिवारों से नहीं, घर बनता है घरवाली से,
अच्छा कोई मकान बनता है,पैसा भी खूब लगता है,
रहने कोई नहीं आता, तो घर मकड़ी से भर जाता है,
चार दिवारों से नहीं, घर बनता है घरवाली से।।

घर में सभी होते हैं, दादा-दादी और पोता-पोती,
लेकिन घरवाली न होने से, अपने नैन भीगते हैं,
भीतर ही भीतर रोते हैं,
चार दिवारों से नहीं, घर बनता है घरवाली से।।

तुम रहो भी मगर लड़ाई हो, भाई का दुश्मन भाई हो,
ननदी से तनी भौजाई हो, ऐसे में तो राम दुहाई हो,
घर घिरा रहेगा सवालों से,
चार दिवारों से नहीं घर बनता है घरवाली से।।

शीतलता और त्याग की मूर्ति वह,
अपने मात-पिता और भाई-बहन को छोड़कर,
पति के मात-पिता, भाई-बहन अपनाती है वह,
चार दिवारों से नहीं, घर बनता है घरवाली से।।

घर का निर्वाह चलाने को, पैसे कमाते हैं हम,
लेकिन बचत कैसे करना बताती है वह,
इस तरह मैनेजमेंट गुरू है वह
चार दिवारों से नहीं, घर बनता है घरवाली से।।

अगर प्रेम की हो ईंट, और गारा भाईचारे का,
कंधे छत का सहारा हो, दिल की खिड़की में उजियारा हो,
तो घर गिरे नहीं भूचालों से,
चार दिवारों से नहीं, घर बनता है घरवाली से।।

घरवाली हो अगर समझदार, धरती पर ही स्वर्ग बन जाए,
सुखी संपन्न बने संसार, इसलिए गुरू का कहना है कि
चार दिवारों से नहीं, घर बनता है घरवाली से।।

***

ईश्वर का अभिनय

✍ लेखिका: आरती सोनी, अनुवाद: आशिष सोनी

बात है सन 1997, 14 दिसंबर के इतवार की, गुजराती संवत 2054, कार्तिक महीने के पूनम का दिन था। हर रोज की तरह भीखू और उसका लड़का ईश्वर अपने व्यवसाय पर जाने के लिए अहमदाबाद के गांधीग्राम रेलवे स्टेशन के लिए निकले। जाने से पहले भीखू ने अपनी बीमार पत्नी रत्ना को देखा और अपने आपको कोसकर और ऊपरवाले का नाम लेकर काम पर निकल गया।

रेलवे स्टेशन के बाहर हर रोज अलग-अलग जगह भीख मांगा करते थे वे बाप-बेटे। स्टेशन के बाहर बाप लाश की तरह सो गया। ईश्वर ने अपने बाप पर सफेद कपड़ा डाल दिया और उस पर चवन्नी, अठन्नी, रूपया-दो रूपया और पांच और दस रूपये की एक-एक, दो-दो नोट डाल करके कुल उनंचास रूपए बिछा दिए। फिर ईश्वर ने उसके बाप के कान में कुछ फुसफुसाया और..... जिंदा बाप लाश बन कर सोता रहा। फिर हर रोज की तरह बेटे ने भीख मांगना शुरू किया, "बाबूजी, भगवान के नाम पे कुछ दे दो। मेरे मरे हुए बाप के क्रियाकर्म के भी पैसे नहीं हैं। ऊपरवाला आपकी ओर देखेगा, आपका भला करेगा। मुझ गरीब की मदद करो, उसकी चिता की लकड़ी के लिए कुछ तो देते जाओ।" कैसी करुणा है, जिंदा रहने के लिए भी जिंदा आदमी को मरना पड़ता है। कुछ लोग इस लाचार गरीब की मदद करते, तो कुछ लोग दूर से ही भाग जाते। नाटक के अंत में पौने दो घंटे के बाद कहने लायक कफ़न पर मुद्दल के साथ पूरे 312 रूपये और 75 पैसे थे। बेटा ईश्वर अपने अभिनय से खुश था।

लोगों का आना-जाना कम होने पर ईश्वर ने अपने बाप के कान में कहा – "चल बापू, आज का नाटक खतम। गल्ले पे चाय पीकर, पौआ खाकर, माँ के लिए दवा और पापड़ी लेके घर चलते हैं।" पर बाप न टस से मस न हुआ। इसलिए फिर से बेटे ने बाप के ऊपर से कपड़ा हटा कर हिलाया। पर बाप ज़रा भी न हिला।

आज का अभिनय केवल अभिनय न रहा था। वह तो सच में लाश बनकर पड़ा था। आक्रंद के साथ हृदय को दहलाने वाले रुदन से जैसे समग्र धरती रो पड़ी। आने-जाने वाले लोगों की ओर से पैसों की बारिश होने लगी। पर उस वक्त पाँच सौ रूपए की नोट चव्वनी से भी छोटी लग रही थी। कितने सारे प्रश्न, कितनी सारी समस्याएं और उसमें भी बाप के गुजर जाने से लगी वक्त की चोट .....

प्रश्न तो बहुत हैं, पर है कोई जवाब? अब क्या होगा इस बेटे का और उसकी बीमार माँ का ? कौन है जवाबदेह इस परिस्थिति के लिए ?

जीवन में हर व्यक्ति और वस्तु की सही कीमत दो ही परिस्थिति में समझ में आती है, उसे पाने से पहले या फिर उसे खोने के बाद.....

मंगल यान

प्रदीप मेंढे

ओ मंगल यान, ओ मंगल यान
कर दे तू ऊँचा भारत का नाम
इसरो ने तुझे बनाया, अंतरिक्ष में तुझे पहुँचाया
रूस और अमेरिका जो काम न कर पाया
वो काम तूने कर दिखाया

ओ मंगल यान, ओ मंगल यान
तू है इसरो की जान तू है इसरो की शान
इसरो के वैज्ञानिकों का तू है कमाल
तेरी डिज़ाइन है बेमिसाल
करा दे हमको मार्स का दीदार
मार्स पर पहुँच के हो जा तू सफल

ओ मंगल यान, ओ मंगल यान
हर पेलोड पर हमने लगाई है बाजी
दुनिया देखेगी हमारी कामयाबी
मंगल पर पहुँच कर इतना तू करना
मंगल की तस्वीर हमें तू भेजना
बस इतनी सी प्रार्थना है मेरी

ओ मंगल यान, ओ मंगल यान
कर दे तू ऊँचा भारत का नाम

***

❖❖❖❖❖

दुर्घटना के लिए जिम्मेदार सामान्य कारण

सोनू जैन, हिंदी कक्ष

मनुष्य को जिन घटनाओं से अप्रत्याशित हानि पहुँचती है उन्हें दो शब्दों के द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है 1) आपदा और 2) दुर्घटना

आपदा एक ऐसी वस्तु है जो वातावरण या प्रकृति द्वारा सर्जित होती है, जबकि दुर्घटना में मनुष्य कृत लापरवाही या भूल कारण हो सकती है। आपदा को रोका नहीं जा सकता, बस उसे उपशमित करके होने नुकसान को कम किया जा सकता है। जबकी सावधानी और जागरूकता के द्वारा दुर्घटना को टाला जा सकता है। जहाँ आपदा का कारण प्राकृतिक होता वहीं दुर्घटना स्वयं की अथवा अन्य की लापरवाही या भूल या अज्ञानता का नतीजा हो सकती है। हम यह निष्कर्ष तो निकाल ही सकते हैं कि आपदा से बचा जा सकता है, किन्तु उसे टाला नहीं जा सकता जबकि दुर्घटना से बचा भी जा सकता है और सावधानी बतर कर उसे टाला भी जा सकता है।

<u>दुर्घटना और उसके सामान्य कारण</u>: जैसा कि ऊपर चर्चा की गई कि दुर्घटना मनुष्य कृत होती है और उसके कारण कृत्रिम होते है। हम जितने अधिक दुर्घटना के संभावित प्रकारों का विचार करेंगे, उतना ही अधिक सटीकता से उनके सामान्य कारणों का विश्लेषन कर पाएंगो। 1) सामान्य रुप से आंतरिक अथवा निमंत्रित स्थान पर होने वाली दुर्घटना और 2) बाहर खुले में अनियंत्रित स्थान पर होने वाली दुर्घटना।

क) नियंत्रित अथवा बंद / आंतरिक स्थानों पर घटित होने वाली दुर्घटनाएं: नियंत्रित स्थान वह हो सकते है जहाँ हम दैननदिन रुप से किसी प्रयोजन की पूर्ति हेतु कार्य करते है ऐसे स्थानों में हमारा घर जिसमें- रसोई घर, गुसलखाना ए.सी. आदि से सुसज्जित कक्ष हो सकते है। बालकनी अथवा छत को भी ऐसे स्थानों में अंतनिहित किया जा सकता है। साथ ही हमारा कार्यालय, विशषकर विज्ञान व अनुसंधान से संबंधित कार्यालय जिनमें मानक वातावरण के अनुरूप प्रयोगशालाएं, कार्यशालाएं एवं परिसरों का निर्माण किया जाता है।

नियंत्रित स्थानों पर अनेक प्रकार की दुर्घटनाएं घटित हो सकती हैं, यथा –

1) आगजनी
2) हानिप्रद गैसों का रिसाव
3) वस्तुओं के गिरने या टकराने से चोट लगना
4) विद्युत एवं विद्युतचालित यंत्रों से जोखिम
5) फर्श की बनावट (फिसलनभरा होने) से जोखिम
6) वातानुकूलक यंत्रों से जोखिम

गहराई से विचार करने पर उपर्युक्त किस्म की अनेक दुर्घटनाएं नियंत्रित वातावरण में जन्म ले सकती हैं। इस प्रकार के वातावरण में होने वाली दुर्घटनाओं के सामान्य कारणों का विश्लेषण हम निम्नानुसार कर सकते हैः

1) निर्माण कार्य के पूर्व संरक्षा संबंधी मानदंडों को ध्यान में रखकर उपयुक्त योजना बनायी जानी चाहिए। योजनागत खामियां अनेक प्रकार के जोखिम खड़ी कर सकती हैं। यथा – रसोईघर का निर्माण घर के किसी ऐसे स्थान पर करना चाहिए जहां धूप और हवा उपलब्ध हो, जहां से निकास सहज हो। इसीप्रकार गुसलखाने की टाइल्स आदि के संबंध में भी विचार किया जाना चाहिए। इसी प्रकार कार्यस्थलों पर प्रयोगशालाएं, कार्यशालाओं, आदि के संबंध में एक अच्छी योजना अनेक दुर्घटनाओं को जन्म लेने से रोक सकती है।

2) निर्माण के उपरांत संभावित सुरक्षा उपकरणों की उपलब्धताः प्रत्येक स्थान के संबंध में गहराई से विचार किया जाए तो वहां किसी न किसी दुर्घटना की संभावना को खोजा जा सकता है। इन संभावित दुर्घटनाओं के उपशमन हेतु आवश्यक उपकरणों की खरीद करना तथा उन्हें योग्य विनिर्देशों के साथ ऐसे स्थान पर रखना, जहां हर व्यक्ति आसानी से उन

तक पहुँच सके। यह उपशामक यंत्र किसी छोटी घटना को बड़ी दुर्घटना में तब्दील होने से रोक सकते हैं।

3) उपलब्ध संरक्षा सुविधाओं की जानकारी और उपयुक्त प्रशिक्षणः मेरा दृष्टि में यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु है। सही जानकारी और उचित प्रशिक्षण का अभाव ही 99% दुर्घटनाओं को जन्म देने या उन्हें खतरनाक स्तर तक पहुँचाने के लिए जिम्मेदार होता है। अधिकांश लोगों को यह पता ही नहीं होता कि उपलब्ध उपकरणों का उपयोग कैसे किया जाए। कई बार ऐसा भी होता है कि सुरक्षा उपकरण ही उनके लिए जानलेवा बन जाते हैं। उपकरणों की कार्यविधि और सीमाओं का ज्ञान होना अत्यधिक आवश्यक है। मात्र प्रदर्शन के लिए रखे गए खराब या अनुपयोगी उपकरण की अनदेखी करना भी दुर्घटना को आंमत्रित करने जैसा ही है। इसी प्रकार से अनेक बिंदुओं पर विचार करके नियंत्रित वातावरण में दुर्घटना और संरक्षा के विषय में समझा जा सकता है।

ख) खुले एवं अनियंत्रित स्थानों पर घटित होने वाली दुर्घटनाएः सड़क, उद्यान और सार्वजनिक स्थलों को भी इसमें शामिल किया जा सकता है। यहां की परिस्थितियां हमारे अनुसार नियंत्रण में नहीं रहती है और ना ही इन स्थानों की अवसंरचना हमें अपने अनुरूप बना सकते हैं। खुले व अनियंत्रित स्थानों पर होने वाली दुर्घटनाओं का विश्लेषण करना भी उपयोगी है, क्योंकि इन दुर्घटनाओं के कारणों का निवारण करना भले ही हमारे वश में न हो, किंतु सामुहिक चेतना के स्वर बुलंद करके इनका यथाशक्य निवारण तो किया ही जा सकता है।

1) योजना स्तर पर दुर्घटना के कारणः सड़क और सार्वजनिक स्थल यदि दुर्घटना प्रणत हैं तो स्थानीय निकायों से संपर्क कर योजना गत खामियों को दूर करने का प्रयास किया जा सकता है और उपयुक्त बुनियादी ढांचे के लिए आग्रह करके हम अपनी ही नहीं अपितु अनेक लोगों की जान को जोखिम से बचा सकते हैं। चूंकि इसमें सामूहिक प्रयास की आवश्यकता होती है इसलिए जनभागीदारी का वातावरण तैयार करना चाहिए जिससे भविष्य में होने वाले सार्वजनिक निर्माण पर सकारात्मक प्रभाव डाला जा सके।

2) उपकरणों की उपलब्धता का अभावः सार्वजनिक स्थानों के लिए सरकारी खर्चे पर आधुनिक संरक्षा उपकरणों की खरीद की जाती है, लेकिन उनको उचित स्थान पर लगाया नहीं जाता। जहां संरक्षा उपकरण उपलब्ध भी रहते हैं, उनकी हालत ऐसी होती है कि उनका उपयोग ही नई दुर्घटना का कारण बन जाता है। इसलिए हमारा सामूहिक कर्तव्य है कि हम सरकारी तंत्र से सीधा संवाद बनाएं और उन्हें समय-समय पर उपकरणों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराएं।

3) उपयुक्त सूचना, जागरूकता और जन भागीदारीः सूचना और जागरूकता के साथ जनभागीदारी सार्वजनिक स्थानों पर घटने वाली दुर्घटनाओं के निवारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। किसी स्थान के निर्माण, विकास एवं उपयोगिता इन तीनों स्तरों पर अद्यतन सूचनाओं और तकनीकियों का उपयोग, स्वयं जागरूक रहना और अन्य लोगों में जागरूकता बढ़ाना अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि सही योजना, आवश्यक उपकरण और जागरूकता का न होना ही दुर्घटना का मूल कारण है और इन तीनों से सुसज्जित रह कर ही इन कारणों का निवारण किया जा सकता है। हमें अपने घर, कार्यस्थल एवं सार्वजनिक स्थलों का इन सभी दृष्टियों से मूल्यांकन करना चाहिए और इनमें व्याप्त खामियों को दूर करने में आवश्यक सहयोग देना चाहिए। इन प्रयासों से हम एक सुरक्षित घर, एक सुरक्षित कार्यालय, एक सुरक्षित नगर और एक सुरक्षित देश की संकल्पना को साकार रूप प्रदान कर सकते हैं। जागरूकता और तत्परता ही सुरक्षा का सही उपाय है।

***

मिशन मंगल

देवांग मांकड

भारत प्राचीन काल से एक वैभव और वैविध्यपूर्ण देश रहा है। हमारे देश में हाल में कई चुनौतियां हैं परंतु फिर भी अलग-अलग क्षेत्रों में हमारे योगदान और अग्रता से विश्व में हम एक महत्वपूर्ण देश के तौर पर उभर रहे हैं। इसरो देश की एक ऐसी ही संस्था है जो अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में विश्व के कुछ गिने-चुने उत्तम प्रौयोगिकी वाले देशों में भारत को स्थान दिलाती है। इसरो के कार्य की शुरुआत समाज और विश्व के उपयोग व कल्याण हेतु हुई थी। गत 40 से भी अधिक वर्षों के दौरान इसरो ने बखूबी यह कार्य किया है।

2008 के चंद्रयान मिशन की सफलता से पहले कई वैज्ञानिकों तथा आम लोगों को यह शंका थी कि क्या इसरो का यह मिशन उसकी कार्यसूची या कार्यपद्धति के अनुरुप है। परंतु मिशन की सफलता और विश्व के ब्रह्मांड को जानने की इच्छा में इसका योगदान देखकर लोगों को इस तरह के मिशन की आवश्यकता पर विश्वास हुआ। इसी श्रेणी में भारत ने मंगल मिशन का भी निर्धारण किया है। यह मिशन मंगल के विषय में देश और दुनिया की जानकारी बढ़ाने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

भारत के मंगल मिशन में पाँच से ज्यादा नीतभार है जो मंगल की सतह और इसके वायुमंडल की जानकारी जुटाएंगे। भारत का मंगलयान मंगल के आसपास परिभ्रमण करते हुए उसके प्रतिबिंबन के साथ-साथ उसके वायुमंडल में मीथेन गैस की भी जाँच करेगा। मीथेन गैस मंगल पर जीवन की संभावना को पुष्ट करेगा। जीवों के जैव-वैज्ञानिक विघटन से यह गैस बनती है। इसके लिए भारत ने एक सटीक मीथेन गैस संवेदक भेजा है, जिसकी सटीकता कुछ ppb में है।

इनके अतिरिक्त मंगलयान मंगल की सतह की तस्वीरें लेगा जो भू-केंद्र से पृथ्वी पर की दृश्य, अवरक्त इत्यादि में होगी। इन तस्वीरों से पृथ्वी पर उसके प्रसंस्करण से मंगल की सतह का मापन किया जा सकता है। इसके अलावा मंगल मिशन से मंगल के भूगर्भ में पाए जाने वाले तत्त्वों के बारे में भी पता लगाया जा सकता है।

मंगलयान द्वारा अभी तक बहुत हद तक अनछुए मंगल के ध्रुवीय क्षेत्रों के बारे में भी जानकारी हासिल होगी। मंगल की सतह पर होने वाले विस्फोट, ज्वालामुखी तथा सतह के गड्ढों के बारे में काफी उपयोगी जानकारियाँ हासिल होंगी। यह जानकारियाँ न केवल मंगल पर जीवन होने के संकेत देंगी परंतु मंगल तथा ब्रह्मांड हमारी आकाशगंगा इत्यादि की उत्पत्ति की घटनाओं के बारे में भी संकेत दे सकती हैं।

मंगलयान में कुछ अन्य संवेदक भी लगाए गए हैं जो उसके वायुमंडल में पानी, बर्फ ताथा अन्य तत्वों के महीन कणों की भी जाँच करेंगे। इससे मंगल ग्रह के वायुमंडल के विषय में कई आवश्यक जानकारियाँ मिल सकती हैं। मंगलयान में कुछ प्रयोगात्मक उपकरण भी भेजे गए हैं जैसे कि एक ऑप्टीकल परावर्तक। मंगलयान मंगल के वायुमंडल में कार्बन तत्व की भी जाँच कर सकता है। मंगलयान में ही मंगल के वायुमंडल से लिए गए तत्त्वों के विश्लेषण के लिए उपकरण लगाए गए हैं जो प्राथमिक जानकारी पृथ्वी पर स्थित भू-केंद्र पर भेजेगा जहाँ उसकी विस्तृत समीक्षा एवं जाँच होगी।

मंगलयान के द्वारा भारत को केवल मंगल की सतह तथा वायुमंडल ही नहीं परंतु नई तकनीकी जानकारियाँ तथा सिद्धियाँ भी मिलेगी। भारत पहली बार पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण के बाहर किसी उपग्रह को भेज पाएगा। इससे हासिल हुई उपग्रह प्रमोचन यान की आधुनिकता भारत के अन्य प्रक्षेपणों को जो पीएसएलवी से किए जाएंगे, उनको भी लाभ पहुँचाएगी।

मंगलयान की सफलता न केवल भारत को विश्व में उपग्रह तथा उपग्रह प्रमोचन की प्रौद्योगिकी में अग्रिम स्थान दिलाएगी परंतु उसके विदेशी उपभोक्ताओं की संख्या में भी बढ़ोत्तरी करेगी। यह इसरो द्वारा प्राप्त भारत के राजस्व को और बढ़ाएगी। मंगलयान से प्राप्त प्रौद्योगिकी कुशलता भारत के भविष्य के प्रक्षेपणों के लिए बेहद उपयोगी सिद्ध होगी। इस तकनीकी की सफलता से हम भविष्य में ब्रह्मांड के और दूर के ग्रहों की यात्रा कर पाएँगे।

मंगलयान अपनी परिक्रमा के दौरान मंगल के दो चंद्र फोवोस तथा दूसरे चंद्रमा की भी तस्वीरें लेगा और जिनसे उनके बारे में भी जानकारी मिल पाएगी।

विज्ञान एवं शिक्षा में हिंदी का योगदान

देवांग मांकड

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा न सही पर राजभाषा है यह एक ऐसी भाषा है जो कि भारतवर्ष में बहुत सारे लोगों के द्वारा बोली जाती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह हमारी जनसंपर्क भाषा भी है। इस कारण यह बहुत ही स्वाभाविक है कि विज्ञान और शिक्षा के प्रसार हेतु हिंदी का योगदान अद्वितीय हो। विज्ञान और शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में अत्यावश्यक है। यदि जनभाषा और सर्वस्वीकृत राष्ट्रभाषा को इन पहलुओं में शामिल कर दिया जाए तो विकास की नई ऊँचाइयों को छू लेगी।

हम विज्ञान और शिक्षा की शुरूआत अपने घर में सीखने से करते हैं। यह स्वाभाविक है कि यह शिक्षा हमारी मातृभाषा में ही होती है। अपितु जब हम पाठशाला में अभ्यास करते हैं, यह जरूरी है कि अपने ज्ञान का विस्तार करने के लिए हम जनभाषा का उपयोग अधिक-से-अधिक मात्रा में करें। भारत वर्ष की बहुत सारी भाषाओं और बोलियों की हिंदी भाषा से समानता होने की वजह से ज्ञान का प्रचार और विस्तृतीकरण हिंदी के प्रयोग से बढ़ जाएगा। बहुत जटिल वैज्ञानिक अनुप्रयोगों का हिंदी में विवेचन कर, उन प्रयोगों के उत्तरों को आम जनता तक पहुँचाना आसान बन जाता है।

शिक्षा के माध्यम से विकास की विपुल संभावनाएँ हैं। प्राथमिक शिक्षा का अधिकार जन-सामान्य को मिला है। इस मूल हक के प्राप्त होने से लोगों को बहुत फ़ायदे हुए हैं। शिक्षा को हिंदी माध्यम से प्राप्त करने से इस भाषा में रचित हमारे स्वर्णिम इतिहास को दर्शाते हुए पुस्तकों का ज्ञान स्वत: प्राप्त करने का सुखद अवसर हमें मिलता है। ऋषियों और संतपुरूषों द्वारा हिंदी में रचित / अनूदित ग्रंथों का आस्वादन करना संभव हो जाता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य लोगों को खुद से एवं लोगों के साथ जोड़ना है। धर्मनिरपेक्षता और सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति की वाहिका के रुप में हिंदी का शिक्षा और सामाजिकता हेतु प्रदान अभिनंदनीय है।

हमारी सरकार भी विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्रों में हिंदी का योगदान बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। "स्कूल चलें हम" जैसे रोचक कार्यक्रम सरल भाषा में देने की वजह से शिक्षा के प्रति आम लोगों में रुचि बढ़ी है। विज्ञान के क्षेत्र में भी हिंदी पुस्तकों और पत्रों को लिखने के लिए विशेष ज़ोर दिया जाता है। तकनीकी विभाग में अंग्रेजी का बोलबाला जरूर है पर इन विषयों में भी हिंदी के प्रयोग की बढोत्तरी देखी गई है। सरकार के सारे प्रभागों और विभागों में छपे हुए फार्म और पत्रावलियां हिंदी भाषा में भी होने के कारण सामान्य जनमानस को इसे समझने में आसानी रहती है। इसरो जैसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक संगठनों की वेबसाईटें हिंदी में मुहैया करवाने के कारण हर आम आदमी, इनके ज़रिये, विज्ञान और वैज्ञानिक विकास से जुड़ा रहता है। एकता और राष्ट्रीय भावना जैसे महत्वपूर्ण विषयों के रोचक कार्यक्रम हिंदी में प्रदान करने से आबालवृद्ध सभी को ज्ञान और विकास के अवसर प्राप्त होते हैं।

हिंदी हमारे देश की बिंदी है। इस भाषा ने हमारे जीवन के सारे पहलुओं को स्पर्श किया है। सर्वसाधारण में विज्ञान और शिक्षा के प्रसार हेतु और इन माध्यमों से सामाजिक क्रांति लाने का भागीरथ कार्य हिंदी भाषा ने किया है। निम्नलिखित पंक्तियाँ इस कार्य के सारांश में प्रस्तुत हैं।

भारत वर्ष की आन, बान और शान..... हिंदी में शिक्षा, हिंदी में ही विज्ञान का ज्ञान।

मंगलयान से भारत मंगल, उसके चंद्रमा, उनकी सतह, उनके वायुमंडल की जानकारियों के साथ भारत की प्रौद्योगिकी कुशलताएँ जैसे कि प्रतिबिंबन, परिज्ञापन, कृत्रिम धारक रेडार, संचार जाल, रासायनिक जाँच, ईंधन का दक्ष प्रयोग, उच्च क्षमता वाले रॉकेट, उपग्रह इंजन तथा ईंधन के नए आयाम, नए भू-केंद्र इत्यादि में भी नए मुकाम अर्जित करेगी। ये उपलब्धियाँ देश और दुनिया के भविष्य के लिए बहुत उपयोगी और महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। निष्कर्ष के रूप में, ये सिद्धियाँ समग्र मानवजाति को फायदा पहुँचाने में उपयोगी होगी। मंगलयान की सफलता की उम्मीद ने ही भारत के अंतरिक्ष मिशन की नई कल्पनाओं को साकार करने का विश्वास दिया है।

***

सामासिक संस्कृति

अभिषेक

"संस्कृति" शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत शब्द से हुई है, संस्कृत जो कि भारतवर्ष की सबसे प्राचीन एवं मूल भाषा रही है। हमारे देवों, ऋषियों, मुनियों के विचार, यह सभी कथन संस्कृत में ही प्रकाशित हुए हैं। किसी भी देश की संस्कृति उस देश के मन को प्रकाशित करती है। भारत देश की संस्कृति में एकता, विविधता, देशप्रेम जैसी सभी भावनायें झलकती हैं। हमारे देश की संस्कृति किसी विशेष जाति, धर्म, संप्रदाय से ओत-प्रोत नहीं है। यह प्रेरित है "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय" की भावना से।

प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति ने अपनी निरंतरता को बनाए रखा है। इस देश की मिट्टी में ही वह तत्व हैं, जो इसकी सुंदरता को कभी मिटने नहीं देते हैं। त्रेता, द्वापर, सतयुग, या फिर कलयुग - चाहे कोई भी युग हो, अनेकों ताकतों ने हमारी संस्कृति, सभ्यता को नष्ट करने के लिये जोर-शोर से प्रयास किए पर इस देश की संस्कृति रूपी ताकत ने हमेशा मुँह तोड़ जवाब दिया।

हमारे देश की सामासिक संस्कृति सबसे अलग है, इस बात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि हमारे देश में प्रतिवर्ष अनगिनत त्योहार (चाहे वह किसी भी धर्म, संप्रदाय से संबंधित हों) मिलजुल कर मनाये जाते हैं, क्या हिंदू, क्या मुस्लिम, क्या सिख, क्या ईसाई। ये धर्म भले ही अलग हों, इनके रीति रिवाज भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, परंतु इनका संदेश हमेशा एक ही होता है—

"अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार ह्रदयानां तु बसुधैव कुटुंबकम्।।

पहले हम भारतीयता को जीते हैं उसकी संस्कृति को जीते हैं, फिर कहीं जाकर अपने स्व विचारों को जीते हैं। किसी ने सही ही कहा है-

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह ह्रदय नहीं पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

इस सभ्यता, संस्कृति को जीर्ण-शीर्ण करने के लिये चाहे कितनी भी ताकतों ने प्रयास किया हो, चाहे महमूद गजनबी हो या कोई और, हमेशा हमारी संस्कृति हमारे विचारों में वह ताकत थी, जिसने हर हमले का मुँह तोड़ जवाब दिया। हमारा देश भले ही दक्षिण, उत्तर, पूर्व और पश्चिम चारों ओर से घिरा हो- पर हमारी संस्कृति ने हमेशा हमें जोड़ कर रखा है।

सागर से जो तीन ओर से देखो कैसा घिरा हुआ।
उत्तर ओर हिमालय जिसकी रक्षा हेतु डटा हुआ।।

हमारी मिली-जुली (एकतामय) संस्कृति में ही वह ताकत हैं जिससे आज भी हम अपनी सभ्यता को जी रहे हैं। और ये सब हमारे पूर्वजों, ऋषियों, देवों के तप का फल है। तभी तो भगवान राम ने लक्ष्मण से कहा था-

"हमारी संस्कृति ने हमारे पारंपरिक सामाजिक सभी प्रकार की जीवन कक्षाओं पर गहरा प्रकाश डाला है। तभी तो, उत्तर भारत में दीपावली, होली, दक्षिण भारत में ओणम इत्यादि इतने धूम-धाम से मनाये जाते हैं। अनेकता में एकता, ये हमारी सामासिक संस्कृति की ही देन है। हमारे संस्कारों ने खुद हमें सिखाया है। आज हमारे देश को स्वतंत्र हुए छयासठ वर्ष हो चुके हैं। इतने लम्बे अरसे में तो समय के बदलाव के साथ सब कुछ बदला जा सकता है लेकिन जो चीज नहीं बदली वह है हमारी संस्कृति।

चाहे स्वामी विवेकानंद द्वारा शिकागो सम्मेलन में जाकर "शून्यकाल" में प्रकट किए गए विचार हों या फिर महात्मा गाँधी का अहिंसा का अस्त्र हथियार हो, ये सत्य और अहिंसा कुछ और नहीं, हमारी संस्कृति के ही अमिट तत्व हैं, जो कि अभी तक अप्रत्यक्ष रूप से हमारे साथ हैं।

हमारी नदियों (गंगा, यमुना, उत्कल, त्रिवेणी, संगम) में इतनी निर्मलता है कि ये इसकी संस्कृति में आने वाली अशुद्धियों को हटा देती हैं। चार धाम (केदारनाथ, बद्रीनाथ, रामेश्वरम्, इत्यादि) हमारी धर्म रूपी संस्कृति को प्रकाशित करते हैं। चाहे कोई भी त्योहार हो, सिक्खों की लोहड़ी, मुस्लिमों की ईद, ईसाईयों का क्रिसमस या फिर हिन्दुओं की दीपावली या होली हो, सभी लोग एक साथ मिलकर इन त्योहारों को साथ-साथ मनाते हैं। हर पर्व का कुछ ना कुछ महत्व है। हमारी संस्कृति हमें उनका महत्व सिखाती है। हमारे धर्म हमें सीख देते हैं। हमें राष्ट्रीयता का अनुभव कराते

हैं। ताकि हम सबसे पहले कह सकें - "हमें भारतीय होने पर गर्व है।"

दुनिया में अनगिनत देश हैं। अनगिनत संस्कृतियाँ हैं, कई संस्कृतियाँ आईं और लुप्त हो गईं, परंतु हमारी संस्कृति अभी भी अमर है, चिरायु है। हमारी संस्कृति की आत्मा किसी एक जाति, धर्म, संप्रदाय में निहित नहीं है। इसकी आत्मा ही उन करोड़ों भारतवासियों के तन में है, उन करोड़ों माँओं के दिल में है। उन करोड़ों नौजवानों के सीने में है जो हमेशा अपने देश को सर्वोपरि रखते हैं। अपनी भारतीयता पर गौरव करते हैं। ऐसी भारतीयता की अमर आत्मा को कौन मिटा सकता है।

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान हो।
वह नर नहीं नर पशु निरा और मृतक समान है।।

हमारी सामासिक संस्कृति हमेशा मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित रही है। सत्य और अहिंसा जिसके हथियार हों, मानवता जिसका अंग हो उस संस्कृति को भला कौन तोड़ सकता है।

मुझे तोड़ लेना वन माली उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीशा चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।।

ऐसी अमिट संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखना हमारा परमकर्तव्य है इसकी रक्षा करना हमारा धर्म है। इसकी सामासिकता को बनाए रखना हमारा दायित्व है।

चन्द्र टरै, सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार।
सो पै दृढ़ भारतीय संस्कृति को, टरै न इसका आचार।।

हमारे पूर्वजों, ऋषियों के द्वारा प्रदान की गयी इस धरोहर को हमे सँभाल कर रखना होगा। हमें इसकी ताकत को बनाए रखना होगा, तभी हम भारत माता के कर्ज को चुका पायेंगे। तभी हम अपने भारतीयत्व को सफल बना पायेंगे। किसी अंग्रेजी भाषा के लेखक ने लिखा है मैं उसमें थोड़ा-सा बदलाव करना चाहूँगा।

"Take up one idea (to protect & save your culture and to spread your culture) make this idea your life not brain, muscles, nerves and each part of your body should be fall of that idea and let leave all other idea above."

अहो भारतीय संस्कृति, क्यों न इसे सबका मन चाहे।
थोड़े में निर्वाह यहाँ है, ऐसी सुविधा और कहाँ है।

"जय हिन्द जय भारत जय भारतीय संस्कृति"

"मैं तो हूँ एक इन्सान ही आखिर"

कस्सा जी.ए., डेकू

(1)
जो उल्फत में, तुम्हारी खो गया है,
उसी सोए, हुए को, कुछ, मिल गया है।
ना बुतखाने, ना, काबे में मिला है,
मगर टूटे हुए, दिल में मिला है।
आदम बन कर, कहीं तू छुप गया है,
कहीं तू हस्ती, (फरिस्ता) बन कर आ गया है।
मैं जिस को, कह रहा हूँ, अपनी हस्ती, (फरिस्ता),
वो तू, नहीं तो, और क्या है।
नहीं आया, खयालों में अगर तू, तो फिर मैं,
कैसे समझूं तू खुदा है।

(2)
मैं तो हूँ, एक इन्सान ही, आखिर
अलग-अलग, रंगो की दुनिया के लोग,
अलग-अलग, धर्म-संप्रदाय के लोग,
अलग-अलग, बोली-भाषा परिवेश से लोग,
अलग-अलग, रीत-रिवाज और
अलग-अलग भगवान को मानने वाले
सबके रूप-रंग अलग,
फिर भी "मैं तो हूँ एक इन्सान ही आखिर"
दिल है तो, दिलदार की बातें होती हैं, नहीं तो कौन,
आज प्रेम की बातें करता है।
गुलशन पूरा, विकृत मानसिकता की, बेरूखी से उजड़ गया है,
फिर भी फूलों की सुंदरता और खुशबू की बातें करते हैं।
फिर भी मैं तो हूँ एक इन्सान ही आखिर
प्रेम-वफा, दोस्ती, भगवान की बातें होती हैं,
फिर भी लोग मज़हब के जुनून में इन्सानियत का खून करते हैं।
सत्य-अहिंसा के, शपथ लिए जाते हैं, धर्म की किताब पर,
फिर भी लोग झूठ और मक्कारी का सहारा लेते हैं।
कैसी है ये अजीबो-गरीब, दुनिया की रस्में,
हम तो प्यार करते हैं, जिसे दिलो जान से,
वही आखिर, विश्वासघात करता है,
फिर भी मैं तो हूँ एक इन्सान आखिर ...

अंत में जाते-जाते कुछ पँक्तियाँ कहता हूँ....

ગુજરાતી માં.....

ભૂલ એ, જીવનનું પાનું છે, પણ સંબંધ એ, આખુ પુસ્તક
છે.જરૂર પડે તો, ભુલનું પાનું, ફાડી નાખજો,
પણ એક પાના માટે, આખુ પુસ્તક ના ફાડતા.

हिंदीः हमारी भाषा ?

अजय कुमार
तकनीकी सहायक, सीएमडीडी/सीएसएमजी/मेसा

जैसा कि, हम सब जानते हैं कि हिंदी हमारी राजभाषा है, किन्तु राजभाषा होते हुए भी इस भाषा को जितना सम्मान हमारे देश में मिलना चाहिए, उतना नहीं मिल पा रहा है। इसके लिये आखिर कौन जिम्मेदार हैं ?

हमारी सरकार और इसकी नीतियाँ ? हम स्वयं और हमारा समाज ? विदेश और इसकी नीतियाँ ? अन्य ? मुझे लगता है, उपर्युक्त सभी कारण पूर्ण अथवा आंशिक रूप से जिम्मेदार है।

यहाँ मैं प्रथम दो कारणों पर ही थोड़ा प्रकाश डालने की कोशिश कर रहा हूँ। हमारी सरकार हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत है, जिसके फलस्वरूप ही 'हिंदी दिवस/पखवाड़ा/माह' तथा विभिन्न प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताएं एवं कार्यक्रम होते रहते हैं इसके बावजूद हिंदी भाषा अपनी पहचान बनाए रखने के लिए संघर्षरत प्रतीत होती है, और ऐसा लगता है, जैसे आने वाले समय में यह भाषा बहुत ही पीछे रह जाएगी और अपने देश पर किसी विदेशी भाषा का बोलबाला होगा, जैसा कि आज राष्ट्रीय खेल 'हॉकी' उतना लोकप्रिय नहीं, जितना कि 'क्रिकेट'। आखिर ऐसा क्यों ?

वास्तव में, यह हमारी सरकार की राजभाषा के प्रति सम्मान एवं इसको आगे बढ़ाने हेतु दृढ़ इच्छाशक्ति के अभाव को दर्शाता है। यद्यपि, हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु सरकार ने पहले से ही कई कदम उठाएं हैं पर उन सभी का प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं हो पा रहा है।

मैंने देखा है कि विभिन्न संस्थानों/संगठनों में वर्ष में एक या दो बार तकनीकी विषयों पर हिंदी सेमिनार आयोजित किया जाता है, जिसका उद्देश्य हिंदी भाषा को बढ़ावा देना तथा जटिल तकनीकी ज्ञान को सरल रूप से ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाना है, किंतु कुछ वक्ता (स्पीकर) ऐसे-ऐसे तकनीकी शब्द (हिंदी में) का प्रयोग करते हैं जो कि अंग्रेजी से भी कठिन लगते हैं और कभी-कभी तो बिल्कुल समझ में नहीं आते। (यद्यपि वे शब्द हिंदी में सही होते हैं।) और ऐसा लगता है जैसे हिंदी बहुत जटिल, अस्पष्ट भाषा है, फलतः लोगों की रूचि हिंदी के प्रति घटती है और दैनिक जीवन में इसको ज्यादा स्थान नहीं मिल पाता है।

हममें से कई लोग ऐसे हैं जो बहुत ज्ञान रखते हैं किन्तु उसे अंग्रेजी भाषा में सहजता से प्रस्तुत नहीं कर पाते। यदि उच्च अधिकारियों से ऐसा निर्देश, प्रोत्साहन मिल जाएं कि आप हिंदी में भी अपना प्रस्तुतीकरण अथवा साक्षात्कार दे सकते हैं तो इससे बहुत से लोगों को फायदा होगा और हिंदी भाषा को बल भी मिलेगा।

यहाँ एक और बात समझने वाली है कि आखिर क्यों, हम-आप चाहते हैं कि हमारे बच्चे अंग्रेजी माध्यम में पढ़ें? क्योंकि हम जानते हैं कल उसे इंजीनियरिंग/ मेडिकल की कोचिंग करनी है और नौकरी के साक्षात्कार के लिए अंग्रेजी, प्रस्तुतीकरण के लिए अंग्रेजी,.....हर जगह अंग्रेजी भाषा का ही वर्चस्व दिखता है। अतः जब तक इन सब चीजों में हिंदी को प्रमुखता नहीं मिलेगी, लोग हिंदी राजभाषा है जानते हुए भी, अंग्रेजी भाषा पर ज्यादा ध्यान देगें।

कुछ नायक/ नायिकाएं/ सेलिब्रिटी ऐसे हैं जो भारत के मूल निवासी होते हुए भी हिंदी नहीं बोल पाते। इस पर भी बड़ी शान से कहते हैं "सॉरी आई डोन्ट नो हिंदी", फिर भी हम लोग भी इन्हें खूब इज्जत देते हैं।

यहीं आती है हमारी और हमारे समाज की भूमिका। हमें ऐसे लोगों को बिल्कुल सम्मान नहीं देना चाहिए जो भारतीय होकर, भारत की संपर्क भाषा नहीं जानते। लोगों के सामने अगर कोई अंग्रेजी में चार शब्द बोल देता है तो उसे हम खूब पढ़ा-लिखा, इज्जतदार समझते हैं। इसी वजह से लोग अंग्रेजी भाषा की ओर ज्यादा भागते हैं। हमें ऐसे लोगों को ज्यादा सम्मान नहीं देना चाहिए अपितु एक शुद्ध हिंदी बोलने वाले को ज्यादा सम्मान देना चाहिए। कुछ माता-पिता तो अपने 3-4 साल के बच्चों से ही अंग्रेजी भाषा में बात करते हैं, जैसे "कम डियर, गो देयर, यू लाइक दिस, रिमेम्बर, सोनू अंकल..." इस तरह से लोग उस मासूम बच्चे के मन में बचपन से ही अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा और हिंदी को विदेशी भाषा जैसा अनुभव कराते हैं। अतः हिंदी भाषा के व्यापक विस्तार के लिये हमें भी अपने परिवार, अपने समाज में अनिवार्य रूप से हिंदी का प्रयोग करना चाहिए।

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।
अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।"

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

दो कविताएं

- आशा भटनागर, (रिमझिम भटनागर सिंह की माताजी)

आशा

1. खुशबुओं से महकती चमेली की बेल है, आशा
स्वप्न की तरह सजीली व मदभरी है आशा
चटकीले, भड़कीले रंगों से सजी है यह
पर छूते ही मैली हो जाती है आशा

2. रेशमी अलक सुनहरा गान इसका
प्यार व मनुहार से यह सजी है
दूर तक आती है पैरो की झनक
पर सामने ना आकर एक प्यास
जगा जाती है, आशा

3. प्यारी बहुत दूर से लगती है यह
पर पास आने पर बहुत कठोर है आशा
परियों से सजीली व स्वर्णिम है यह
पर नागफनी सी कटीली है आशा

4. कीमती यह है जिन्दगी की तरह
पर मौत की तरह छल रही है आशा
चल रही है चलती रहेगी सदा
किसी को डुबोती व किसी को
पार लगाती रहेगी आशा

गुजरात

1. भरपूर जिन्दगी से भरा है, यह
भारत की शान व आन से भरा गुजरात है यह
जो भी आया बस इसका हो गया
भूल गया वह क्यूं आया और कब आया

2. रंग बिरंगे फूलों का गुलदस्ता है यह
ओस से भीगा डाली पर खिलता गुलाब है यह
मिल जुल कर रहने की कला सिखाता
स्वतंत्र भारत की अतुलनीय कलाकृति है यह

3. कितना गर्व करें अपने गुजरात पर
गाँधी व पटेल की इस पावन भूमि पर
प्यार व अपनत्व से भरपूर है यह
वेदों की ऋचाओं की तरह पवित्र है यह

4. ग्रामीण व शहरी जीवन के
समीकरण बनाता किसी बालक
की मासूम हँसी का अहसास
कराता गुजरात हैं यह

*** O ***

माता पिता

जसपाल भाटिया, पीएफडी/ईसा

आजकल बहुत सुनने एवं देखने में आ रहा है कि माता पिता को वृद्धाश्रम में भेजने का चलन बहुत बढ़ गया है।

वृद्धाश्रम भी रोज रोज नई बढ़िया सुख सुविधाओं के साथ बन रहे हैं। पर क्यों?

क्या हम कभी ये सोचते हैं या केवल इसतरह लेख लिखने और पढ़ने के लिए ही विचार विमर्श करते हैं.

नई पीढ़ी इस बारे में क्या सोचती हें? क्या कोई चर्चा करने को तैयार है?????

कहां मतभेद उत्पन्न होते हैं ? मतभेद इतने बढ़ जाते हैं कि माता पिता को साथ में रखने के बजाय वृद्धाश्रम में भेजने कि नौबत आती हैं। जबकि आजकल तो परिवार भी छोटे होते जा रहे हैं।कहाँ चूक हो रही है?

आजकल की पीढ़ी का कसूर है या माता पिता का? किसे एडजस्ट करना है? माता-पिता को या बच्चों को?

बहुत से किस्से या घटनायें हैं जो मैं यहाँ बता सकती हूँ पर जहां तक मैने देखा और जाना है दोनों का ही कुछ न कुछ कसूर होता हैं परंतु आखिर में सजा किसे मिलती है? भुगतना किसे पड़ता है? माता पिता को ही न,

या तो वे वृद्धाश्रम में पहुंच जाते हैं या अगर जो ठीक ठाक पेंशन मिलती भी है तो अकेले रह जाते हैं। सबसे दुखदायी चीज ये है कि अगर माता पिता दोनों में से कोई एक रह गया है, अकेला है तो बहुत ही दयनीय स्थिति होती है ...

दोनों पीढ़ी मिलजुल के समझदारी से साथ में रहें तो इन सब चीजों से बचा जा सकता है।.....

मेरी नई पीढ़ी एवं आज की पीढ़ी से ये ही आशा एवं विनती है कि मिलजुल कर रहें तो हम समाज की बदलती तस्वीर या बिगड़ती तस्वीर को और बिगड़ने से बचा सकते हैं।.....

थोडा संयम थोडा एडजस्टमेंट, सहकार की भावना

..... बस ये ही दोनों पीढियों को अपनाना है तो हम सभी ये नई सोच (माता-पिता को वृद्धाश्रम भेजने) नए बदलाव से बच सकते हैं

***

इसरो देश की शान है

मनोहर कुमार चावड़ा

आओ साथियो हाथ बटाएं इसरो की हम शान बढाएं....(2)
विश्व में ऊँचा नाम कमाएं विश्वविजयी बनकर दिखलायें
दुनिया झुक जाये भारत के कदमों में तब होगा संकल्प पूर्ण हमारा
समझाओ यारो उनको, पूछा कहाँ से मिली नई टेकनीक इसरो को
विक्रमभाई का विक्रमी सपना सच कर दिखलाया यारो ने
आओ साथियो हाथ बटाएं इसरो की हम शान बढ़ाएं.....(2)

दुनिया सारी शरमा रही है दातों तले उंगली दबा रही है
तेरा मिलना भारत का सौभाग्य है विक्रम इसका भारत को नाज़ है
विक्रम तू है भारत की शान इसरो की तू है हमारी जान ।।
इसरो तू है हमारी आन इसरो तू है सपना हर गाँव का,
सुबह-शाम तेरे साथ है हम सब इसरो
आओ साथियों हम हाथ बटाएं इसरो की हम शान बढ़ाएं ...(2)
हम नहीं होने देंगे कमी देश को नई टेक्नोलॉजी और विज्ञान की
इसरो मन का प्रोटीन भी है, इसरो हम सब की रोटी भी है।
जब रॉकेट पहुँच जाता है कक्षा में, हम लोग खुशी से झूम जाते हैं
रॉकेट हमारी आन है, सैटेलाइट हमारी जान है
इसरो देश की शान है
आओ साथियो हम हाथ बटाएं इसरो की हम शान बढ़ाएं ...(2)
दुनिया चाहे आज कितनी कूदे, चीनी और अमरीकी...(2)
मंगल पर रहने वाला पहला होगा मनोहर हिन्दुस्तानी ...(2)
जय हिंद, जय गुजरात, जय विज्ञान

***

आज के बेटे

मनोहर चावड़ा,
लेखा विभाग

माँ-बाप तो कुटुंब का स्वर्ग हैं, अपने स्वर्ग को नर्क न बनावो बेटे.....

जिन्होंने तेरे पर जीने का विश्वास रखा है उनका विश्वास तोड़ना ना तू
उंगली पकड़ के दुनिया दिखाने वाले, मां-बाप का साथ छोड़ना ना तू
तेरी हर इक बीमारी और मुसीबत से बचा कर बोलना सिखाने वाले को भूलना मत तू
भूखे-प्यासे रहके कम आमदनी में अच्छी शिक्षा अच्छा तुझे खिलाने वाले को भूलना मत तू
तेरी प्रेमिका या पत्नी के साथ से मां-बाप का साथ कभी भी छोड़ना मत तू
तुझे तो ईश्वर का साधक स्वरूप मानते थे वह धारणा कभी भी भूलनाना मत तू
मां-बाप तो कुटुंब का स्वर्ग हैं अपने स्वर्ग को नर्क न बनावो बेटे.....

मां-बाप के पास से खूब लिया देने के टाईम दुःख के सिवा कुछ न दिया
मां-बाप तो कुटुंब का केंद्र बिन्दु हैं जैसे हैं वैसे आपके ही हैं।
गिनती में ही पुत्र पराये निकले समय का योग बिलकुल गलत निकला
एक तेरी यादों की वजह से मैं पूरी रात भर सो नहीं सकता हूँ पता है तुझे
मन के एकान्त में अभी भी सताते हैं तुम्हारे मतलबी स्मरण क्यूं ?
एकान्त में तेरे बचपन की आवाज़ अभी भी मेरे कान में गूंजती है क्यूं
मां-बाप तो कुटुंब का स्वर्ग है अपने स्वर्ग को नर्क न बनावो बेटे.....

मृग जल से प्यास बुझाना बेटे बखूबी रास आ गया है मुझे
प्यार को ना, ना कर कि मेरा प्यार ही तुझसे दूर हो जाय बेटे
हर सरिता को सागर मिलता नहीं वह मैं बराबर समझ गया हूँ बेटे
कभी-कभी बाप को दिल से मिल के तो देख दर्द की परख नहीं अब मुझे बेटे
दुनिया मतलबी है पता था पर बेटे भी स्वार्थी निकलेंगे ये पता नहीं था
घर के बेटे ने घर का अमन लूट लिया तो घर में मां-बाप अकेले में रो पड़े
मां-बाप तो कुटुंब का स्वर्ग हैं अपने स्वर्ग को नर्क न बनावो बेटे.....

मुझे पचास साल के आगे के विचार अभी आते हैं बेटे
हाल में देश में बेटी बचावो आंदोलन चल रहा है ये बहुत अच्छी बात है।
25 साल बाद बेटा बचावो आंदोलन जरूर देश में जागृत होगा ही
50 साल के बाद पुत्र और पुत्रवधु के त्रास से खुद को बचावो आंदोलन चलेगा ही
अच्छे जोड़े बच्चे को जन्म देना ही नहीं चाहेंगे यह सत्य सार्थक होगा ही
जैसा करोगे वैसा भरोगे वह कुदरत का नियम मत भूलना
ये दर्द भरी कविता सुनके आपकी आंख न भर आई तो मनोहर क्या करे
मां-बाप तो कुटुंब का स्वर्ग हैं अपने स्वर्ग को नर्क न बनावो बेटे.....

***

मन चाही बात

जसोता सुहंदा
ईएनटीएसजी/ईएसएसए

एक राजा बड़े न्यायप्रिय और इंसाफ पसंद थे। उनके राज्य में कोई कमी नहीं थी। प्रजा भी बहुत खुशहाली में रहती थी लेकिन राजा को एक दुःख अंदर ही अंदर खाए जा रहा था। उम्र ढल रही थी पर राजा की कोई संतान नहीं थी। राजा को पुत्र प्राप्ति की इच्छा ने बहुत दुःखी कर रखा था। सभी नीम-हकीमों की सलाह और वैद्यों की औषधियां दवाइयां ली, सभी ऋषि-मुनियों का आशीर्वाद, तीर्थ स्थानों का स्नान, दान-पुण्य,राजा ने सब तरीके अपनाकर देखे लेकिन उपाय नहीं मिल रहा था।

इतना सब कुछ करते-करते बहुत समय निकल गया आखिर राजा की इच्छा पूरी हुई मतलब पुत्र प्राप्ति हुई। राजा बहुत ही खुश हुआ। राजमहल में खुशियों की जैसे बरसात होने लगी। राजा ने फिर से सब ऋषि-मुनियों और संतों को बुलाकर राजकुमार को आशीर्वाद दिलवाया।

सभी ने अपने-अपने विचार प्रकट किए कि ये बड़ा राजा बनेगा, देश की रक्षा करेगा,प्रजा की सेवा करेगा। चक्रवर्ती राजा बनेगा। राजा ने भी सभी को दान-दक्षिणा देकर खुश कर दिया। समय निकलता गया चारों तरफ खुशी का माहौल था।

एक बार एक संत राजा के दरबार में आए। राजा ने उनका बहुत ही मान-सम्मान किया। राजकुमार को आशीर्वाद दिलाने के लिए उसने राजमहल में संदेशा भेजा। रानी अपनी दासी के साथ राजकुमार को लेकर राज दरबार में पहुंची और राजकुमार को संत का आशीर्वाद दिलाने के लिए उनकी गोद में दिया। संत सामान्य संत नहीं थे,वे एक महापुरुष थे। राजकुमार की आंखों में देखकर उनकी आंखों में आंसू आ गये। राजा ने उनकी आंखों में आंसुओं के आने का कारण पूछा ''महाराज,आपकी आंखों में ये आंसू क्यों आ रहे हैं ?'' संत ने बहुत ही टालना चाहा लेकिन राजा के आगे वह क्या करते। उन्होंने राजा को सच-सच बता दिया कि ''हे राजन, ये कोई राजकुमार नहीं, कोई संत धर्मात्मा नहीं, कोई चक्रवर्ती राजा नहीं,अपितु ये तो बड़े तत्वदर्शी गुरु और ब्रह्मज्ञानी बनेंगे। मेरी आंखों में आसूं इसलिए हैं कि जब तक राजकुमार बड़े होंगे तब तक मैं इस संसार में ही नहीं रहूँगा।''

संत की बात सुन कर कि राजकुमार ब्रह्मज्ञानी बनेगा,राजा को फिर से अंदर ही अंदर राजपाट की चिंता सताने लगी कि मैंने राज्य को चलाने के लिए राजकुमार की इच्छा की थी लेकिन अब क्या होगा ? राजा के चेहरे पर उदासी छा गई।

रानी को जब मालूम हुआ कि राजा उदास हैं तो रानी ने राजा से बात की कि सभी ने हमारे बेटे को, राजकुमार को चक्रवर्ती राजा बनने का आशीर्वाद दिया है आप सिर्फ एक के कहने से उदास क्यों हो रहे हैं ? रानी ने इसी तरह राजा को सांत्वना दी तो राजा को भी सांत्वना मिली और राजा भी खुश हो गए। भिखारी रोटी मिल जाने पर जितना खुश होता है उतना ज्ञान मिलने पर नहीं होता। कहने का मतलब है कि सभी को अपनी मन चाही बात मिलती है तभी खुशी होती है।

***

कोरा कागज

-पूजा कक्कड़

काश ऐसा होता
चुप्पी को बयान कर पाते,
हाथों मे कलम हो, सामने कागज
पर कुछ न लिख कर भी
इस दिल की कही निकाल पाते
काश ऐसा होता
खाली कागज को कोरा न समझते,
काश कोई अपने आंखो से
उस पर रखे हुये हाथ कि वजह से
पडी हुई सलवटे देख पाते
काश ऐसा होता
कोई इस कोरे कागज को बेरंग
नही समझता,
काश कोई आंसुओ से धुली कागज
की पंक्तियों को देख पाता
काश ऐसा होता
कोरा कागज को भी भरा समझता,
काश उस पर लिखी चुप्पी को कोई
समझता।
काश ऐसा होता.....

***

प्रेरक प्रसंग

जितेन्द्र खर्डे

कभी-कभी कोई छोटी-सी बात या प्रसंग हमें बहुत बड़ी सीख या समझ दे जाता है। इंटरनेट हमें सिर्फ ज्ञान ही नहीं देता, कभी कुछ ऐसी सीख भी दे जाता है जिससे हमारा समग्र दृष्टिकोण ही बदल जाता है। इंटरनेट से प्राप्त कुछ ऐसा ही एक प्रेरक प्रसंग नीचे प्रस्तुत हैः

शादी के अठारह साल के बाद एक दिन पत्नी ने अपने प्रिय पति के लिए बहुत ही खराब भोजन बनाया। रोटी जल गई थी। सब्जी कुछ कच्ची-पक्की थी। दाल में नमक-मिर्च का कुछ ठिकाना नहीं था। सलाद में भी कुछ दम नहीं था।

डिनर टेबल पर पति बिल्कुल शांत था। खाना खाते-खाते वह पत्नी के सामने देख कर मुस्कुराया और उसने बड़े प्यार से शांतिपूर्वक खाना भी खा लिया। पत्नी बात को जल्द ही समझ गई कि कुछ गलत हो गया है। वह दुःखी होकर रसोई घर में गई और आगे का काम निपटाने लगी। उसी वक्त पति भी वहां आया और उसने पत्नी के माथे पर प्यार से एक चुम्मी दी।

पत्नी को पति का यह व्यवहार कुछ समझ में नहीं आया। उसने आश्चर्यचकित होकर अपने पति से पूछा कि आज मुझसे सारा खाना खराब बना था फिर भी आपने मुझ पर गुस्सा करने के बजाय मेरे माथे पर इस तरह प्यार से चुम्मा दिया।

पति ने इस पर जवाब दिया कि तेरे आज के भोजन के इस स्वाद ने मुझे शादी के बाद के पहले ही दिन तुमने जो खाना बनाया था, उसकी याद आ गई। फिर मैंने मन ही मन में सोचा कि क्यों ना आज फिर से अठारह साल के बाद भी तुम्हें उसी तरह एक नई-नवेली दुल्हन की तरह ट्रीट किया जाय।

इसे सुनते ही पत्नी की आंख भर आई और वह एक नई दुल्हन की तरह अपने पति से लिपट गई।

बहुत ही भावुक दृश्य खड़ा हो गया। दोस्तों, पति के पास गुस्सा करने का ठोस कारण मौजूद था लेकिन उसने इस गंभीर बात को बड़े प्यार से सकारात्मक रूप से लेकर एक तनावपूर्ण प्रसंग को आसानी से आनंद में बदल दिया। इसे कहते है – सच्चा संबंध या सच्चा प्यार।

यही है आज के संसार को सुखी देखने का रहस्य।

***

एक कर्मचारी की सेवानिवृति

मुकेश केवलचंद शाह, डेकू

(परिचयः मैं, मुकेश केवलचंद शाह, वैज्ञानिक/अभियंता, के पद पर एसएफजी/डेकू में कार्यरत हूँ। मेरा कार्यक्षेत्र वीडियो इंजीनियरिंग है। कुछ समय से हर माह, हमारे कर्मचारी भाई/ बहन सेवानिवृत हो रहे है। हम कर्मचारियों के लिए, प्रवृति (सर्विस) अगर पहली पारी है तो निवृति दूसरी पारी है। इस काव्य में इस दूसरी पारी के बारे में बताने का प्रयास किया है।)

"ठोकर खाना" अर्थात् जैसे-तैसे समय निकालना।

जैसे ही हुआ सेवानिवृत, कोने में दूर

सभी से दरकिनार होता गया।

जीते जी वह अपनों की, यादों से भी गया।

जिंदगी भर संचित किया हुआ ज्ञान,

(नोटबुक, किताबें, जेरोक्स वगैरह)।

कबाड़ वाले को, रद्दी में देकर, बेचता गया।

कभी शाम होते ही सारे घर को रहता था आने का इंतज़ार,

आज घर में होने के बावजूद, घरवालों से अनदेखा होता गया...

जैसे ही हुआ सेवानिवृत, कोने में दूर होता सभी से दरकिनार होता गया,

कभी थे कीमती उनके - ओहदा, राय और दस्तखत,

मिलने को लेनी पड़ती थी उनकी इजाजत,

जो ऑफिस को मंदिर समझता था और कार्य को भगवान,

आज उनके मिलने का ठिकाना, भगवान कसम मंदिर बन गया....

जैसे ही हुआ सेवानिवृत, कोने में दूर होता सभी से दरकिनार होता गया

रोज रोज जाये तो जाये कहाँ ? मंदिर पास में ही था,

घर से मंदिर और मंदिर से घर की ठोकरे खाता रहा।

कल देर रात अचानक ऐम्बुलंस ले गयी उनको,

तब सिर्फ जिज्ञासावश, अपनों में चर्चा का विषय रहा।

जैसे ही हुआ सेवानिवृत, कोने में दूर होता सभी से दरकिनार होता गया,

कितना खुश होता वो, काश अगर ये देख पाता,

हॉल भरा हुआ था अपनों और परायों से,

क्योंकि अवसर यह अपनी शोकसभा का था।

***

जरूरत

श्रीमती प्रीति अग्रवाल
(दिनेश अग्रवाल सैक 26914813)

बात उन दिनों की है जब मेरी बेटी दीप्ति महज़ ढाई वर्ष की थी। बहुत चंचल, बातूनी और खुशमिज़ाज। मैंने उसे ढेर सारी हिंदी एवं अंग्रेजी की कविताएँ सिखा दी थीं। अपने मासूम से चेहरे पर तरह-तरह के भाव लाकर जब वह बोलती, तो सुनने वालों को मंत्रमुग्ध कर देती थी। हमने नर्सरी में उसका दाखिला करवाया। दो ही दिन में पूरे स्कूल की आँखों का तारा बन गई। जहाँ दूसरे बच्चे स्कूल में जाने में आनाकानी करते और रो-रोकर अपनी मम्मी के पास वापिस आ जाते वहीं दीप्ति दौड़कर अपनी टीचर्स के पास पहुँचती, हँसकर मुझे बाय कहती और उनसे बतियाने लगती थी। हँसी-खुशी ऐसे ही दिन बीत रहे थे। स्कूल से दो घण्टे में लौटने के बाद दिनभर उसके किस्से-कहानियाँ मुझे सुनाती रहती। आज स्कूल में नया क्या सीखा, किस टीचर ने तारीफ में क्या कहा, कौन-सा बच्चा कैसे रो रहा था सब-कुछ।

दीप्ति के जन्म के बाद मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी थी और लिखने का काम भी कम कर दिया था। पर एक दिन सामने से ही एक बहुत बढ़िया नौकरी का प्रस्ताव आया। हमने आपस में मशवरा किया और सोचा कि दीप्ति अब तो स्कूल जाने लगी है, उसके नये-नये दोस्त बनने लगे हैं तो अब नौकरी करने में कोई हर्ज़ नहीं है। पर उसे 4-5 घण्टे बालघर में रहना पड़ेगा। पर उसके खुशमिज़ाज स्वभाव के कारण हमें कोई चिंता नहीं थी क्योंकि वह किसी से भी जल्दी घुल-मिल जाती थी।

आखिर नौकरी शुरू कर दी। सुबह जल्दी निकलना पड़ता था और लौटते-लौटते रात के आठ बज जाते थे। जैसे ही मैं घर पहुँचती वह दौड़कर मुझसे लिपट जाती। मैं भी बहुत थक जाती थी फिर रात के खाने की तैयारी में लग जाती थी। काम करते-करते उसकी कुछ बातें सुनती और कुछ नहीं।

अपनी पहली तनख्वाह से मैंने उसे ट्राइसिकल लाकर दी पर उसने कोई उत्साह नहीं दिखाया। एक दिन उसकी प्रिंसीपल ने मुझे बुलाया, कहा कि क्या बात है ? आजकल दीप्ति बहुत गुमसुम रहने लगी है। हँसना तो दूर वह बात भी नहीं करती है। बस चुपचाप कक्षा में बैठी रहती है। मैंने उन्हें बताया कि मैंने नौकरी जाना शुरू किया है। प्रिंसिपल बस इतना ही बोली कि दीप्ति एक बेहद खुशमिज़ाज और होशियार लड़की है उसे थोड़ा ज्यादा ध्यान दीजिए। पर पुनः मेरी वही दिनचर्या शुरू हो गई।

मैं अपनी स्कूटी से ऑफिस जाती थी। एक दिन मैं उसकी चाबी कहीं रखकर भूल गई। बहुत ढूँढा पर नहीं मिली। पर ऑफिस तो जाना ही था मैंने डुप्लीकेट चाबी का सहारा लिया। फिर वही व्यस्त दिनचर्या.....। धीरे-धीरे दीप्ति के किस्से-कहानियाँ कब बंद हो गए मुझे पता ही नहीं चला। बस मुझे देखते ही जोर से लिपटती और फिर मैं भी अपने काम में व्यस्त हो जाती। उसे ढेर सारे नये-नये खिलौने लाकर दिये। पर अब न मेरे पास उसके किस्से-कविताएँ सुनने का वक्त था और न ही उसका सुनाने का मन।

उस दिन रविवार था, छुट्टी का दिन। मैं दोपहर में जमीन पर ही लेटी हुई थी और वहीं कमरे में दीप्ति अपनी ट्राइसिकल चला रही थी जिसकी सीट से अभी तक वह पॉलिथिन ही नहीं निकली थी जो नई-नई साइकिल में होती है। अचानक मेरा ध्यान सीट के नीचे पॉलीथिन पर गया, उसमें कुछ था। मैंने देखना चाहा तो वह छिपाने लगी। आखिर उसे बहला-फुसला कर देखा तो मैं स्तब्ध रह गई वह और कुछ नहीं मेरी खोई हुई चाबी थी स्कूटी की। मैंने तो सोचा ही नहीं था कि मेरी ढाई साल की बेटी ने उसे वहाँ छिपाया होगा।

मैंने उससे प्यार से पूछा तो वह बोली – मम्मी मैंने अपनी साइकिल में उसे छुपा दिया ताकि तुम मुझे अकेला छोड़कर ऑफिस न जा सको। मैं हतप्रभ रह गई। वह मुझसे लिपट गई और बोली – मम्मी, मुझे न तो ये साइकिल चाहिए और न ही खिलौने। मुझे तो बस आपकी जरूरत है।

मेरी आँखों से आँसू बह निकले। आज मुझे अहसास हुआ कि मेरी छोटी-सी बच्ची ने मुझे कितना बड़ा पाठ पढ़ा दिया और मैंने तुरन्त अपना इस्तीफा भेज दिया।

बंदगोभी की शिकायत फूल गोभी से

एन.एस. वरदारिया
वरि. परियोजना सहायक, परिवहन प्रभाग

एक मुलाकात, बंदगोभी और फूल गोभी की, उन दोनों के बीच इतना प्यार होता है कि देखने और सुनने वाले भी दंग रह जाता है और वह दोनों एक-दूसरे को बहुत चाहते थे।

बारिश जाने के बाद जब सर्दी के मौसम की शुरूआत होती है तब बंदगोभी और फूलगोभी का जन्म होता है। एक बड़े सा हरे-भरे खेत में उनका जन्म होता है। उस खेत का मालिक, काफी मात्रा में बीज बोकर खेत को हरा-भरा बनाता है, और उसी खेत में उन दोनों का जन्म होता है। बंदगोभी और फूलगोभी आपस में चर्चा करते हैं कि हमारा मालिक रात-दिन हमारी देखभाल करता है और खाद, पानी डालकर खूब मेहनत से पाल-पोस कर हम लोगों को बड़ा करता है। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं वैसे-वैसे हमारी खूबसूरती भी बढ़ती है और अति सुंदर हम दिखते हैं। बचपन में हम एक दूसरे के साथ मौजमस्ती करते हैं और दिन भर खेलते रहते हैं। हमारा मालिक भी सुबह-शाम हमारे पास आता-जाता है और हमारे पर पूरा ध्यान रखता है। कोई बड़े पशु या जानवरों से हम लोगों को बचाता है और हमारा पूरा ख्याल रखता है, इन खेलकूद और मौजमस्ती के दौरान बंदगोभी को फूलगोभी से प्यार हो जाता है और वे एक दूसरे को बहुत चाहने लगते हैं और एक-साथ रहने का वादा करते हैं – कभी हम जुदा न होंगे और हमेशा के लिए हम साथ निभायेगें।

एक दिन प्रातःकाल में फूलगोभी ने बंदगोभी से बोला – "आज तुम कितनी खूबसूरत लग रही हो।" तब बंदगोभी शर्माती हुई और मुस्कुराती हुई कहने लगी कि तुम भी किसी से कम नहीं हो, तुम भी बहुत सुंदर लग रहे हो इस तरह दोनों के बीच प्यार चलता रहा। इसी तरह दिन गुजरते गए और वे बड़े होते गए।

एक रात खेत का मालिक जब उनकी देखभाल करने के लिए खेत पर आया और खेत के पट्टे पर बैठे-बैठे सोचने लगा। उसके मन में एक बहुत बुरा ख्याल आया कि अब बंदगोभी-फूलगोभी बड़े हो गए हैं और उनको निकाल कर एक बड़ी सब्जी मंडी में ले जाकर इन्हें बेच दूं और इससे मुझे खूब रुपये मिलेगें, उन रुपयों से मैं बड़ा आदमी बन जाऊंगा। यह ख्याल लेकर वह अपने घर चला जाता है। बस यही सुनकर बंदगोभी अपने प्रियतम फूलगोभी के पास जाकर आँखोंदेखी बयान करती है। आज मालिक शाम को आया था और हम सबको यहाँ से निकालकर वह बड़ी सब्जी मंडी में बेच देने का सोचता है। अब हम क्या करेंगें, कहाँ जायेंगे और हम सब किस हालत में हो जायेंगे, हम सब एक दूसरे से अलग हो जायेंगे, हमें कौन बचायेगा। इस खयाल से बंदगोभी डर जाती है और रोते हुए वह गाने लगती है कि-

कल हम जुदा होंगे, जाने कहाँ होंगे
लेकिन जहां होंगे, वहां तुझे याद करेंगे

यह सुनकर फूलगोभी अपनी बंदगोभी को रोते हुए देखकर चुप हो जाने और धैर्य रखने के लिए बोलता है। उसे अपने सीने से लगा लेता है और कहता है कि रात गहरी हो गई है अब तुम सो जाओ, कल सुबह हम कुछ सोचेंगे। तब वह एक दूसरे से अलग होकर अपनी-अपनी जगह पर सोने के लिए चले जाते हैं और रात्रि को शुभ रात्रि कह कर वे सो जाते हैं। पर बंदगोभी को नींद नहीं आती, उसको बार-बार खयाल आता था कि कल सुबह मालिक हम सबको जुदा कर देगा। यहां से निकाल कर वह बड़ी मंडी में बेच देगा, हम सबको जुदा कर देगा। हम सब किस हाल में होगें, हमारी हालत कैसी हो जायेगी, हमें जुदा होकर अलग-अलग जगह पर जाना पड़ेगा, कोई बड़ी दुकान में होगा तो कोई पैदल लोरी में होगा तो कोई मंडी के पास में पड़ा होगा, ऐसी हालत हमारी हो जायेगी, इसी खयालों में उसे रात भर नींद नहीं आयी और वह रात भर जागती रही।

दूसरे दिन सुबह खेत का मालिक अपने मजदूरों के साथ आ जाता है। हल-तिकम जैसे हथियारों से लैस वे उन पर टूट पड़े और कुछ देर में उन सबको निकालकर बड़ा ढेर बना दिया और कुछ मजदूरों ने उन्हें बड़ी गाड़ी में डालने का काम शुरू कर दिया। पूरे खेत में से हम सबको निकाल दिया। कोई बंदगोभी से खेत में बच नहीं पाई। सब चिल्लाने लगे, रोने लगे पर कोई वहाँ उनको

बचाने वाला नहीं था। पूरा खेत हरा-भरा था लेकिन कुछ ही देर में उजाड़ कर दिया गया। उस रोने की और चिल्लाने की आवाज सुनकर फूलगोभी दौड़ के बाहर आया, बचने की कोशिश की, लेकिन उसके बस की बात नहीं थी। मालिक ने उसका कहना नहीं माना। तब जाकर बंदगोभी फूलगोभी से बोली कि,

"गोभी कहे फूलगोभी से, तू यहां नहीं आ,
मेरी तरह कट जाओगे परे चले जा,
पर जो नहीं जाते उनको, कट जाना होता है।
प्यार दीवाना होता है, मस्ताना होता है।"

इसी तरह सब बंदगोभी और फूलगोभी आपस में एक-दूसरे से हिल-मिलकर बड़े हुए थे, एक-दूसरे से आपस प्यार करते थे और सब मिलकर मस्ती-धमाल करते थे। वे एक-दूसरे बहुत चाहते थे और एक-दूसरे से प्रेम कते थे। इसी तरह उनके दिन कट जाते थे। पर एक दिन ऐसा आया कि उन सबको अलग होना पड़ा।

इसी तरह हमारे जीवन में भी ऐसी घटनाएं घटती है, कि कभी न कभी हमें एक दूसरे से बंदगोभी और फूलगोभी की तरह अलग होना पड़ता है। हम भी इसी तरह हमारे जीवन में, अधिक से अधिक मात्रा में एक दूसरे से प्रेम करते हैं, चाहते हैं एक दूसरे से और हिल-मिलकर अपना जीवन बिताते हैं, पर एक दिन तो ऐसा आता है कि हम सबको अलग होना ही पड़ता है। दोस्तों, जीवन में कैसा भी समय क्यों न, कितनी भी कठिनाई और समस्या आयें, लेकिन हार नहीं माननी चाहिए। एक-दूसरे के साथ प्यार बांटते रहना चाहिए, सुख-दुःख बांटते रहना चाहिए।

धन्यवाद, हमारी ओर से, बंदगोभी और फूलगोभी को।

***

इसरो के हम हैं परिंदे

विवेक कुमार सिंह

इसरो के हम हैं परिंदे
ये सच है कि नन्हे हैं हम बंदे
पर आसमां ही है चाह हमारी
आसमां ही है राह हमारी

दुनिया को आसमां पे हमे है पहुँचाना
जो न माने पूछो शून्य किसने बनाया
ये सच है कि आज हम पीछे हैं कुछ गगन में
पर फिर भी करते हैं दुनिया को हम मगन में
इसरो के हम.....

रोकेटों को सदियों पहले हमने था बनाया
टीपू के रॉकेटों की शौर्य गाथा को दुनिया ने है गाया
सच है आज सीमित हैं पीएसएलवी तक कदम हमारे
पर जल्द ही आएंगे बड़े रॉकेट भी चमन हमारे
इसरो के हम.....

संचार दुनिया को हमने है सिखाया
नहीं मानते तो इसमें क्या दोष है मेरा भाया
कालिदास ने बादलों से यक्ष के प्रेम पत्र भेजे हैं
इतिहासों के पन्ने यूं ही संचार में हमारी गाथाओं को सहेजे हैं
इसरो के हम.....

चाँद से रिश्ते हैं हमारे काफी पुराने
पर मामा न आते मिलने हमसे घर हमारे
रिश्तों को निभाना है दुनिया को हमने सिखाया
इसलिए चांद पर फिर जल्द है हम सबको जाना
इसरो के हम.....

दुनिया है मंगल पे जीवन खोजती तो क्या हुआ
हमने तो जीवन में मंगल सदा ही है खोजा
दुनिया से कदम से कदम मिलाकर चलना है आदत हमारी
इसलिए जल्द ही मंगल पे जाके कर देंगे पूरी ये जरूरत सारी
इसरो के हम.....

***

होली -शेरिन जॉनसन

रंगों का त्योहार,
आया फिर एक बार,
लेकर ज़िन्दगी का हर रंग,
आओ खेले होली सब संग।

लाल रंग में भरो प्यार,
हरे में समृद्धि की फुहार,
पीले पर लिखो दोस्तों के नाम,
गुलाबी रंग से भरो ज़िन्दगी
की हर शाम।
सिर्फ खुशियाँ नही,
गम को भी जी लो आज, सिर्फ
रंग नही,
अश्रुओं को भी धो लो आज।

किसी की बेरंग ज़िन्दगी,
रंगो से भर दो आज,
इन्सानियत के सही मायने,
दुनिया को दिखा दो आज।

भूल के गिले शिकवे,
भूल के बीती बातें,
लेके ज़िन्दगी का हर रंग,
आओ खेले होली सब संग।

***

पानी की तलाश में

एन.एस. वरदारिया
वरि. परियोजना सहायक, परिवहन

कई दिनों यूं ही बैठे-बैठे मैं सोच रहा था पर मुझे कोई नई कहानी याद आती ही नहीं थी। आज मुझे एक नई कहानी मिल गई है मैं उसे आपके सामने दोहरा रहा हूँ।

हवा, पानी और अन्न के बिना मानव से लेकर पशु, प्राणी का जीवन नहीं चलता और इन चीजों की हम सबको अनिवार्य रूप से जरूरत होती है। कुदरत ने हमें वरदान के रूप में ये चीजें दी हैं, इसलिए हम सही तरह से उनका इस्तेमाल करते हैं और बिगड़ने से बचाते हैं। कई बार जल को बचाने का अभियान भी चलाते हैं। आवाज उठाते हैं कि जितनी जरूरत है उतना ही पानी का उपयोग करें और पानी को व्यर्थ न करे।

एक बार सुनामी जैसी भयंकर आपदा आई और बारिश भी खूब जोरों से हुई। इस सुनामी की वजह से समुद्र का खारा जल पूरे गाँव में भर गया। बारिश भी बंद होने का नाम नहीं ले रही थी। इस सुनामी और बाढ़ ने बुरी तरह तबाही मचाई। चारों ओर देखो तो पानी ही पानी, लोगों के घर का सामान बाढ़ के पानी में बह गया। कई लोग इस बाढ़ में बह गये। गाँव में पानी के तेज बहाव के कारण कई मकान तहस-नहस हो गए। सब तरफ तबाही का मंजर था। कई लोगों की मौत हो गई और जो बचे थे, वे अपनी जान बचाकर गाँव छोड़कर भाग गए। जिनके पास अपना घर हुआ करता था अब वे सभी बेघर हो गये थे। कई परिवार बिछड़ गये कई अनाथ हो गए।

इन्हीं में से एक लड़का, जिसकी उम्र करीबन पंद्रह या सत्रह साल की रही होगी। पता नहीं उसके परिवार का कोई सदस्य बचा था कि नहीं। लड़का बुरी तरह घबराया हुआ था, डर के मारे अपनी जान बचाने के लिए एक ही दिशा में भागा चला जा रहा था। भागते-भागते वह एक जगह रुका, उसने अपने आप को एक घने जंगल में पाया। उसे कहीं से बाहर निकलने का रास्ता नहीं मिल रहा था। उसे बड़ी जोर से प्यास लगी, जंगल में भी चारो तरफ पानी भरा था, पर सारा का सारा समुद्र का खारा जल था। उसने पानी पीने की कोशिश की पर खारेपन की वजह से एक घूँट भी अपने गले से नीचे नहीं उतार पाया। भूख भी जोरो से लग रही थी और घने जंगल में वह अकेला फंस गया था। उसे बाहर निकलने के लिए कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। भूख और प्यास के मारे उसका बुरा हाल था। धीरे-धीरे दिन भी ढलने लगा और थोड़ी देर में अंधेरा छा गया। अंधेरी रात में वह बाहर निकलने के लिए भटकता रहा, पर घने जंगल में रात का घुप्प अंधेरे में उसे बाहर निकलने का रस्ता नहीं मिल रहा था।

उसने सोचा कि इस अंधेरी रात में कहा जाऊंगा यहीं पर रात बिताना ही ठीक रहेगा। आसपास में नजर दौड़ाई तो उसे एक बड़ा सा पेड़ दिखाई दिया। पेड़ के पास जाकर देखा तो पाया कि वह पेड़ जामुन का था और उस पेड़ में खूब जामुन लगे हुए थे। भूख से बेहाल बेचारा लड़का जल्दी से पेड़ पर चढ़ गया और और जामुन खाने लगा।

किसी तरह भूख थोड़ी से शांत हुई तभी अंधेरी रात में उसने एक भयानक-सी आवाज सुनी। यह आवाज किसी हट्टे-कट्ठे शेर की लग रही थी। वह कुछ सोच पाता कि पेड़ के नीचे उसे शेर खड़ा हुआ दिखाई दिया।

इस भयंकर बाढ़ में शेर ने भी कुछ नहीं खाया था। दिन भर शिकार के लिए भटकता रहा पर कुछ नहीं मिला इसलिए उस लड़के के रूप में अपना भोजन पाकर शेर भी खुश लग रहा था। लड़का शेर को देखकर थर-थर कांपने लगा। इधर शेर भी अपना शिकार देखकर बड़ी जोर से चिल्लाने लगा।

थोड़ा समय बात जाने पर लड़के ने खुद को सम्हाला और सोचा कि आज मुझे ये शेर छोड़ने वाला नहीं है, मेरा शिकार करके मुझे खाकर ही मानेगा। उसने थोड़े से जामुन तोड़ कर शेर की और फेंके। शेर ठहरा माँसाहारी उसने तो जामुन की ओर ध्यान ही नहीं दिया। वह भी आसन जमा कर पेड़ के नीचे ही बैठ गया। इसतरह लड़के ने पूरी रात पेड़ पर और शेर ने पेड़ के नीचे गुजारी। शेर पूरे दिन शिकार न मिलने की वजह से थका हुआ शेर सो गया और लड़का भी रात भर पेड़ पर ऊँघता रहा, पर डर के मारे बीच-बीच में घबरा कर उठ जाता था।

रात ऐसे ही बीत गई और सुबह हुई। लड़के को पेड़ पर किसी और प्राणी की उपस्थिति का अहसास हुआ। शायद रात को ही कोई बंदर भी पेड़ पर अपनी जान बचाने के लिए छुपा हुआ था या शेर इसी बंदर का पीछा करते हुए पेड़ के नीचे आया था। दोनों ही शेर से बुरी तरह डरे हुए थे। बंदर को देखकर उस लड़के की जान में जान आई, संकट की इस घड़ी में बंदर भी उसे अपना हितैषी लग रहा था।

***

विज्ञान एवं शिक्षा : हिंदी का योगदान

दिनेश कुमार अग्रवाल

वर्तमान युग विज्ञान का है, तेजी से बदलते तकनीकी दौर में शिक्षा महत्वपूर्ण है। यह वैज्ञानिक तथ्य है कि बच्चा अपनी मातृभाषा में सबसे ज्यादा एवं जल्दी सीखता है। आज विश्व में 75 करोड़ से ज्यादा लोग हिंदी जानते है एवं हमारे देश में सबसे बड़ी संख्या करीबन 60 करोड़ से ज्यादा लोग संपर्क भाषा के रूप में अपनाते हैं। हिंदी का इतिहास गौरवमय रहा है। हिंदी का साहित्य भी समृद्ध है। लिपि देवनागरी है और जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है। भाषा का व्याकरण भी स्पष्ट एवं समृद्ध है। आज हिंदी माध्यम में करोड़ो बच्चों को शिक्षा दी जा रही है एवं विज्ञान जैसे जटिल विषय को भी सरल भाषा में समझाने से विज्ञान का प्रचार-प्रसार संभव हो पाया है।

आज तकनीकी क्षेत्र में किसी भी तकनीकीविद् से कारीगर की चर्चा हिंदी में ही होती है। जटिल समस्याओं को सुलझाने में विचार-विमर्श में हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। हमारे देश में करीबन 1760 भाषाएं एवं बोलियाँ बोली जाती है, परन्तु हिंदी जानने वालों की संख्या सर्वाधिक है। किसी से भी प्रथमदृष्टया संपर्क या चर्चा हेतु संवाद भाषा हिंदी की सहजता, सरलता के कारण व्यापकता बढ़ी है।

हिंदी हमारी संस्कृति है, सदियों से प्रयुक्त संस्कृत से उत्पन्न हुई है एवं समस्त भारतीय भाषाओं से निकटता एवं घनिष्टता है। आज सभी प्रकार का साहित्य हिंदी भाषा में आसानी से उचित मूल्य पर सभी जगह उपलब्ध है। कोई भी भाषा केवल शब्दकोश नहीं होती है, हिंदी भाषा ने विश्व की अनेक भाषाओं से हजारों शब्दों को आत्मसात किया है और यह प्रक्रिया जारी है जिससे "ऋग्वेद" का कथन कि "ज्ञान सभी ओर से आएँ" को सार्थक कर भाषा समृद्ध होकर शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान कर रही है। आज इन्टरनेट पर भी लिपि,फॉन्ट,सामग्री इत्यादी का कोई प्रश्न नहीं है। ढेरों वेबसाईटों पर उम्दा श्रेणी की वैज्ञानिक अनुसंधान सामग्री उपलब्ध है। आज उच्च गुणवता के हिंदी माध्यम शालाओं की संख्या एवं छात्रों की संख्या में दिन-प्रतिदिन बढोतरी हो रही है।

हिंदी भाषा की सहजता , सरलता से बच्चे आसानी से सीख जाते है। विश्व के अधिकांश देशों में हिंदी भाषा के जानकार उपलब्ध है। आज विज्ञान के जटिल सिद्धांतो की व्याख्या हिंदी भाषा में सभी को आसानी से समझ मे आती है। हिंदी भाषा में सभी को आसानी से समझ में आती है। हिंदी चलचित्रों गानों से सामान्य मानस का मन प्रफ्फुलित हो जाता है। आज हिंदी भाषा का योगदान हमारे देश की वैज्ञानिक धरोहर बढाने में बहुमूल्य है।

आज सामान्य जन तक हिंदी भाषा में तकनीक का प्रसार आसानी से हो जाता है, इससे लोगों मे विज्ञान के प्रति रुचि एवं तकनीकों को सीखनें की लौ जल पड़ती है। आज विश्व के कोने-कोने में हिंदी भाषा , अभिव्यक्ति का माध्यम होती है और स्पष्ट अभिव्यक्ति से शिक्षा ग्रहण की जा सकती है। विज्ञान, क्रमबद्ध ज्ञान का ही नाम है। भारत की समृद्ध संस्कृति एवं गौरवमय इतिहास से जन्मी हिंदी भाषा का हृदय विशाल है और विश्व को ज्ञान से ओत-प्रोत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज सभी चैनलों पर घर बैठे ही हिंदी में आसानी से शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में भी हिंदी भाषा के द्वारा ही शिक्षा एवं विज्ञान का प्रसार हो रहा है।

देश के समाजिक संस्कृति,विभिन्न बोलियों, परिवेश बदलाव,खान-पान विभिन्नता के बावजूद हिंदी सभी के मन एवं जगहों पर अपनी अमिट छवि रखती है निश्चल प्रवाह के रुप में आगे बढ़ रही है जहाँ उसे सभी का स्नेह मिल रहा है और विश्वभाषा के रुप में अग्रसर हो रही है।

***

<u>पानी की तलाश में.....</u>

दोनों ने सुबह भी भर पेट जामुन खाये और शेर को अपनी हिम्मत और धीरज का परिचय देते रहे। शेर रात भर से भूखा बैठा था अब उसका धीरज जवाब दे रहा था। अचानक शेर वहां से उठा, इधर-उधर देखा और एक दिशा में आगे बढ़ गया।

अपने शिकारी को दूर जाता देख बंदर और इंसान, दोनों पेड़ से नीचे उतरकर भागे। लड़का मन ही मन सोच रहा था कि जान बची तो लाखों पाए। भागते-भागते उनको बहता हुआ नाला मिला, जो छोटी नदी जैसा दिखाई पड़ रहा था। उसमें मीठा जल था। उसके पानी से दोनों ने अपनी प्यास बुझाई और जी भरकर पानी पिया। लड़का खुशी-खुशी गाँव की ओर चल पड़ा, बंदर भी उसके पीछे-पीछे चल दिया।

दिन चलकर वह अपने गाँव पहुँचा, तो पाया कि वहाँ सभी मकान तेज सुनामी में बह चुके थे। गाँव किसी बड़े समतल मैदान की तरह दिखाई दे रहा था। बस गाँव के बीच वाला पत्थर का टीला अपना सिर उठाए खड़ा था।

सुनहरे सपने

एन.एस. वरदरिया
वरि. परियोजना सहायक, परिवहन विभाग

एक दिन कवि गहरी निद्रा में सोया हुआ था। उसी वक्त उसे नींद में, एक बड़ा भयंकर-सा सपना आता है, उसी सपने में वह खो जाता है और उसी सपने में वह नींद में ही चलने लगता है। चलते-चलते बहुत दूर तक निकल जाता है और आगे एक बड़ा घना-सा जंगल आता है उसी जंगल में वह प्रवेश कर लेता है। जंगल भी इतना घना था कि कोई भी आदमी अंदर प्रवेश कर लेता है तो फिर बाहर निकल नहीं पाता है। इस तरह वह आगे काफी दूर तक चला जाता है। बारिश भी अच्छी होने की वजह से जंगल भी बड़ा हरा-भरा सा हो गया था। नये पेड-पौधे भी काफी मात्रा में लग चुके थे और रंगबिरंगी फूलों से जंगल की खूबसूरती और बढ़ गयी थी। वनराई भी पेड़ों पर लटक रही थी इसलिए पूरा जंगल बड़ा खूबसूरत और हरा-भरा लग रहा था।

पूरे जंगल में चिड़ियों के घोंसले दिख रहे थे। उन्हीं घोषलों में छोटी-छोटी चिड़िया और बड़े पक्षियों के मधुर गाने सुनाई दे रहे थे। चिड़ियों का कलरव और कोयल की मीठी मधुर आवाज सुनकर कवि धन्य हो जाता है। पेड़-पौधों की छोटी-छोटी फलियों में भंवरों की गुनगुनाहट कवि के कानों में गूंज रही थी। ऐसा भंवरों की गुंजन और पक्षियों का कलरव सुनकर कवि बहुत खुश हो जाता है और इसी खूबसूरत वातावरण में कवि इसी घने जंगल में खो जाता है। आगे और बढ़ता है तो बड़े-बड़े हीरण और मृग इधर-उधर दौड़ते ही नज़र आते हैं और मोर भी नाचते हुए दिखाई देते हैं।

इसी तरह वह मन ही मन खुश हो कर आगे निकलता है तो रास्ते में सामने ही एक राजकुमारी आती है और उस राजकुमारी पर कवि की नज़र पड़ती है और वह दोनों दूसरे के सामने देखते ही रहते हैं। दोनों की नज़र एकदूसरे से हटती नहीं है और काफी समय तक वह एकदूसरे को देखते रहे और मन ही मन वह दोनों खुश हो जाते हैं और फिर एकदूसरे को चाहने लगते हैं और फिर वह दोनों के बीच प्रेम हो जाता है और इसी जंगल में भंवरों की गुनगुनाहट और पक्षियों के कलरव के बीच दोनों खो जाते हैं।

इस दौरान जंगल में कुछ समय के बाद राजा के सिपाही शिकार के लिए आते हैं और ये दोनों सिपाहीगण को देखकर कही झाडियों में छुप जाते हैं। फिर भी वह सिपाहियों की नजर ये दोनों पर पड़ जाती है और वह दोनों को एक साथ देख लेते हैं। बाद में वह सभी सिपाहीगण वापस अपने राजा के पास जाकर ये सारी हकीकत बता देते हैं। फिर ये सुनकर राजा बड़े गुस्से में हो जाता है। और अपने सिपाहगण को आदेश देता है कि जाओ और उन दोनों को पकड़ के मेरे पास लाओ....इस आदेश को सुनते ही सभी सिपाहीगण जंगल की ओर चले जाते हैं और कुमारी को ढूंढने के लिए पूरे जंगल में इधर-उधर देखने के लिए शुरू हो जाते हैं। अंत में वह दोनों सिपाहीगण के हाथ पकड़े जाते हैं और उन दोनों को पकडकर वह अपने राजा के पास ले जाते हैं। राजा भी उन दोनों को इसी हाल में देखकर बहुत गुस्से में आ जाता है और तुरन्त ही आदेश देता है कि, इन दोनों को अलग-अलग कोटडी में बंद किया जाय। इस आदेश का मान रखते हुए सिपाहियों ने कवि और राजकुमारी को बंदी बनाकर कोटडी में बंद कर दिया। राजा का आदेश था कि उन दोनों को खाना भी दिया नहीं जाये और कड़ी से कड़ी सजा इन दोनों को मिलनी चाहिए।

खाना भी देना बंद कर दिया और पानी भी देना बंद कर दिया। इसी तरह भूख-प्यास से वह बहुत परेशान हो गया और धीरे-धीरे बिना खाये-पीये कवि की तबियत बिगड गई, और इसी वजह से वह बहुत बीमार हो गया। ये बिमारी का हाल देखकर राजा और गुस्से हो गया और सिपाहीगण को फिर से आदेश दिया कि, इसको मारने के लिए पहाडी की ऊँची से ऊँची चोटी पर ले जाकर उसे ऊपर से नीचे गिराकर मार दीजिए। यह राजा का आदेश सुनकर तुरन्त सिपाहीगण सावधान हो गए और कवि को लेकर ऊँची पहाडी पर चले गये। वहाँ पहाडी पर जाकर उस कवि को धक्का देने की शुरूआत करते हैं। उसी समय गभराहट के मारी कवि एकदम डर गया था और तुरन्त उसने अपनी आँखे खोली तो एक बड़ा भयानक-सा सपना देखा था और वह बैठ के उस सपने के बारे में सोचने लगा।

इसी तरह हमारा जीवन भी एक सपने की तरह है। हर रात की एक सुबह होती है। जीवन में कई कठिनाइयां आती हैं और हम उस कठिनाइयों का सामना करके हमारे जीवन को आगे बढ़ाते हैं। सुख-दुःख आते रहते हैं और नींद में कही बुरे भी सपने आते हैं तो कडी अच्छे भी सपने आते हैं और हम इसी सपनों में खो जाते हैं और रात भी पूरी हो जाती है। वैसे हमारा जीवन भी सपनों की तरह एक दिन पूरा हो जाता है।

गागर में सागर

- आरती आशिष सोनी

सपने और लक्ष्य में एक ही अंतर है
सपने के लिए बिना मेहनत की नींद चाहिए
लक्ष्य के लिए बिना नींद की मेहनत चाहिए

***

जब आप जीवन में सफल होते हैं तब आपके दोस्तों को पता चलता है कि आप कौन है
जब आप असफल होते हो तब आपको पता चलता है आपके दोस्त रौन हैं

***

दोस्त का मतलब, दूर रहकर भी जो पास हो
औरों से भी ज्यादा खास हो, सबसे प्यारा जिसका एहसास हो, तकदीर से भी ज्यादा जिस पर विश्वास हो

***

छोटी सी है जिंदगी हँस के जियो
भुलाकर गम सारे दिल से जियो
उदासी में क्या रखा है मुस्कुरा के जिओ
अपने लिए ना सही अपनो के लिए जियो

***

वक्त फिसलता है रेत की तरह
हम बस उसे सम्हालना भूल जाते हैं
कुछ लोग बहुत खास होते हैं जिंदगी में
हम बस उन्हें बताना भूल जाते हैं

***

आंसू ना होते तो आँखें इतनी खूबसूरत ना होती
अगर मिल जाता चाहने से कोई तो
भगवान की दुनिया में जरूरत न होती।।

***

वक्त भी सिखाता है, शिक्षक भी सिखाता है
पर दोनों में फर्क है, शिक्षक सिखाने के बाद इंतिहान लेता है, और वक्त इंतिहान लेने के बाद सिखाता है।।

***

जिंदगी ने पूछा सपना क्या होता है,
तो हकीकत बोली, बंद आँखों में जो अपना होता है,
खुली आँखों में वही सपना होता है

***

किसी को पाने के लिए हमारी सारी
खूबियां कम पड़ जाती हैं
और खोने के लिए एक कमी सारी
खूबियों पर भारी होती है

***

जीवन शांति से जीने के दो रास्ते
माफ करो जिन्हें आप भुला नहीं सकते
भूल जाओ उन्हें, जिन्हें आप माफ नहीं कर सकते

***

एक ऐसी लाइन जिसे आप उल्टा पढ़ो या सीधा,
दोनों ही तरफ से बड़ी अच्छी लगती है -
है जिंदगी तो दोस्त हैं

***

जिंदगी बड़ी अजीब होती है,
कभी हार तो कभी जीत होती है
जब आ जाए हँसते हँसते आँखों में आँसू
तो एहसास होता है
हर खुशी के पीछे कितनी तकलीफ होती है

***

किसी ने एक संत से पूछा
आप बड़े हैं फिर भी क्यूं नीचे बैठते हैं
संत ने बड़े खूबसूरत अंदाज में जवाब दिया
नीचे बैठने वाला कभी गिरता नहीं है

***

एक रुपया एक लाख नहीं होता,
फिर एक की कीमत कम नहीं होती
एक लाख में से एक निकल जाए तो
दुनिया उसे लाख नहीं कहती

Great lines by Dr. Abdul Kalam
इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है जितना,
कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं
Try ever, wait never.

***

बेटियाँ

बहुत चंचल बहुत खुशनुमा होती हैं बेटियाँ,
नाजुक सा दिल रखती हैं मासूम होती हैं बेटियाँ
बात-बात पर रोती हैं नादान सी होती हैं बेटियाँ
है रहमत सर पर भरपूर, खुदा की नैमत ये बेटियाँ
होती है अजब सी तकलीफ जब छोड़ के चली जाती हैं बेटियाँ
घर लगता है सूना-सूना, कितना रुला जाती हैं बेटियाँ
बाबुल की लाड़ली होती हैं बेटियाँ
ये हम नहीं कहते ये तो खुदा कहते हैं कि जब मैं बहुत खुश होता हूँ, तो जन्म लेती हैं बेटियाँ

***

रिश्ते और हम

जितेंद्र कुमार

वर्तमान में सेडा के पीसीएसवीडी/ पीसीईजी विभाग में कार्यरत अभियंता के विभिन्न लेख एवं कविताएं समय समय पर सैक की हिंदी गृह पत्रिका में प्रकाशित होते रहते हैं। इसके साथ ही इनके कुछ लेख तथा कविताएं सामाजिक स्तर की पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुई हैं।

समाज में दिन-प्रतिदिन रिश्तों में आ रही दूरियों को कुछ सीमित करने के उद्देश्य से लिखी कविता यहाँ प्रस्तुत है:

कुछ खोना, कुछ पाना,
कुछ पाकर फिर खो देना,
उन कड़वी कड़वी बातों को
फिर- फिर मन में दुहराना
सोच बना देता संकीर्ण
भौतिकवादी इस युग में
रिश्ते नाते सिमट रहे

सुंदर सी इस दुनिया में
माफी के समतर शब्द नहीं
तो क्यों न भुलाएं वे यादें
कड़वी
देकर इन अपनों को माफी
ये रिश्ते ही बुनियाद हमारी
सहेजें यादें मधुर-सुहानी

निश – दिन सिमटती इस
दुनिया में
सिर्फ रिश्ते ही हैं अपने
इनमें प्यार अनुहार समाया
इनसे ही परिवार हमारा
भरकर युवा जोश इन रिश्तों में
गूथें रहें हर मोती इसमें
बनकर स्वयं पुष्पहार का धागा

खट्टी मीठी बातों का
कहाँ नहीं होता संगम
रिश्तों की इस श्रृंखला में
हर सदस्य का अपना अनुभव
कभी भरे उल्लास ये मन में
कभी बहाये नीर नयन में
कभी उड़ाए दूर गगन में

कभी रुलाए अंतर्मन में

कभी तोड़ ये सब्र की सीमा
क्रोध दिलाए अत्यंत हठीला।
सुखद सुनहरे मधुरम पल,
हर कोई अत्यंत अनमोल
बिन यादों के जीवन नीरस
मानो नदियों में ठहरा जल

यादें ही तो वे यादें हैं
जिनमें हम सब जीते हैं
रंग रंगीला पुष्पहार ही सुंदर
खिला डाल पर पुष्प ही सुंदर
उतार-चढ़ाव भरे जीवन में
क्यों फिर हम हों अलग – थलग ?

जिंदगी की ABCD

-आरती आशिष सोनी

A – एतबार
B – भरोसा
C – चाहत
D – दोस्ती
E – इनायत
F – फैसला
G – गम
H – हमदम
I – इंतजार
J – जीत
K – किस्मत
L – लम्हे
M – मुहब्बत
O – नफरत
P – और
Q – कयामत
R – रिश्ते
S – समझौता
T – तमन्ना U – उदासियां
V – विरासत
W – वादा
X – एक्स्क्यूज
Y – यादें

इन सबसे मिल कर बनती है
Z – जिंदगी

***

इन्सैट-3D

- वी.एन. सारस्वत
सेवा निवृत्त तकनीकी सहायक
डेकू-इसरो

अब हम
दिन-रात काम
करने लगे हैं ।
25-26 की रात
एक बजकर 25 मिनिट
जब सब सोते थे
हमने प्रक्षेपित कर दिया
इन्सेट-3D

ये भी दिन रात काम करेगा
भारत माता का चक्कर
प्रति दिन पूर्ण करेगा
82 डिग्री पूर्व इसका
निवास स्थान होगा ।

36000 किलोमीटर की
ऊँचाई भू-स्थिर कक्षा
ये अद्भुत काम करेगा
ये अत्याधुनिक मौसम उपग्रह है

वजन 2090 किलो
संचार का काम भी करेगा
हैं तीन नीत भार इसमें
बाई ऐन्युअल ऐटेनुएशन पर
नवीन कार्य करेगा
अत्याधिक सटीक चित्र
प्रक्षेपित करेगा ।

शुक्रवार समृद्धि के वार
के दिन प्रक्षेपित हो
भारत माता की
समृद्धि का वर्धन करेगा
विश्व में तिरंगे का
सम्मान बढ़ेगा
राष्ट्र का
अभिमान बढ़ेगा ।

हाजिर जवाब बच्चे

सोमा करनावट
सहायक, लेखा एवं वित्त विभाग

(कॉमर्स और हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त। लेखन में, विशेष रूप से जिंदगी की छोटी-मोटी घटनाओं से जुड़ी कहानियाँ लिखने में रुचि। "चिकन सूप फॉर सोल" में कहानी प्रकाशित। अन्य कई पत्र-पत्रिकाओं में भी कहानी, विचार आदि प्रकाशित।)बच्चे अपनी मासूमियत और हाजिरजवाबी से हमें कभी चकित कर देते हैं तो कभी हँसा देते हैं। पेश है कुछ नन्हे फरिश्तों के किस्से जो आपको गुदगुदाएंगे :

हमारा नंबर कब आएगा?

एक बार हम डॉक्टर के पास चेकअप कराने के लिए गए थे। उस दिन क्लीनिक में भीड़ कुछ ज्यादा थी और रिसेप्शनिस्ट सभी को वेटिंग नंबर दे रही थी। हमारे बाद आए परिवार को जो टोकन मिला उस पर नंबर था 12. उनके बेटे ने वह नंबर देखा और दो मिनिट बड़े ध्यान से सोचता रहा। फिर अपने पापा से फुसफुसाकर बोला - पापा, इस टोकन से 2 का अंक मिटा देते हैं। हमारा नंबर 1 हो जाएगा और फिर हमें बिलकुल भी इंतजार नहीं करना पड़ेगा।

अब मैं नूडल्स कैसे खाऊँगा?

हमारे एक परिचित का छोटा बेटा बहुत नटखट है। एक बार ऐसा हुआ कि वह दो दिन से जिद कर-करके नूडल्स ही खा रहा था। उस शाम भी जब वह नूडल्स के लिए ही जिद करने लगा तो उसकी मम्मी ने कहा कि चल, पहले थोड़ी सब्जी-रोटी खा ले, फिर तुझे नूडल्स मिलेगी। तब उसने सब्जी-रोटी खा ली। पर, खाते ही जोर-जोर से रोने लगा। सब परेशान हो गए। कुछ कारण समझ में नहीं आ रहा था। किसी तरह समझा-बुझाकर उसे चुप कराया और रोने का कारण पूछा तो वह कहने लगा कि अब मुझे भूख ही नहीं है, मैं नूडल्स कैसे खाऊंगा।

मशीन पैसे देती है

एक अन्य परिचित सज्जन अपनी बेटी का किस्सा सुना रहे थे। एक बार ए.टी.एम. से पैसा निकालते समय उनकी बेटी भी साथ थी। वह पहली बार ए.टी.एम. देख रही थी। उसने बड़े ध्यान से देखा कि मशीन में कार्ड लगाने और कुछ बटन दबाने के बाद कुछ नोट निकले। उसे बड़ा अच्छा लगा। उसके पापा पैसे लेकर निकलने लगे तो वह बोली – "ले लो, ले लो, थोड़े और निकाल लो। जब मशीन ही पैसे दे रही है, तो थोड़े और क्यों नहीं ले लेते।"

महात्मा गाँधी जी के विचार

क्रोध को जीतने में मौन सबसे अधिक सहायक है।

जो लोग अपनी प्रशंसा के भूखे होते हैं, वे साबित करते हैं कि उनमें योग्यता नहीं है।

पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्ज्वल करती हैं।

अपने प्रयोजन में दृढ़विश्वास रखने वाला एक कृशकाय शरीर भी इतिहास के रुख को बदल सकता है।

हम दबाव से अनुशासन नहीं सीख सकते।

प्रेम की शक्ति दण्ड की शक्ति से हजार गुनी प्रभावशाली और स्थायी होती है।

सुख बाहर से मिलने की चीज नहीं, मगर अहंकार छोड़े बगैर इसकी प्राप्ति भी होने वाली नहीं।

यदि मनुष्य सीखना चाहे, तो उसकी हर भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।

कुछ लोग सफलता के सपने देखते हैं जबकि अन्य व्यक्ति जागते हैं और कड़ी मेहनत करते हैं|

विश्वास करना एक गुण है, अविश्वास दुर्बलता कि जननी है।

काम की अधिकता नहीं, अनियमितता आदमी को मार डालती है।

अजय कुमार शर्मा
वैज्ञानिक / इंजीनियर एसई
जी एस क्यू ए डी / आर ई जी / एसआरए

अरज

अश्वनी कुमार गुप्ता
वैज्ञा/अभि- एसई, एससीएडी

(1)

मैं कद की थाड़ी नैन बिछाये
एक पिया तुम ही नहीं आये।
अपने किये पर गौर किया ना
गलती मेरी आप बताये।
सब परदेसी घर आये आंगन
एक पिया तुम ही नहीं आये।

सब भगतन को दरस दिखाया
मेरी बारी क्यूं तुम लजाये।
अब हो गये हम ही बेगाने
दुश्मन मेरे मीत कहाये।

मिली बिछुरन के खेल में प्रीतम
मुख हमसे क्यूं छिपाये।
देखो 'अश्वनी' के हिय बहु नाजुक
पग अपने ठोकर ना लगाये।

(2)

प्रभु जी मैं अरज करूं हूँ।
भू पर आये दरस दिखावो
बादर ऊपर बसंत रहत हो
परत हटाये नीचे आवो
अश्वनी कद की बाट अगोरत
नयन बिछाये पास बुलावो

तन मन सब पेश करत हूँ
सर ऊपर हाथ फिरावो
जरत रहत हूँ बिरहा अगन में
दया करी शीतल बरसावो

मोरे मंदिर तोरी बसी मूरतिया
कदम राखि भाग बढ़ावो
'अश्वनी' दीन्ही डोर सौंप तोहे
जैसे मर्जी नाच नचावो।

***

विरासत की हिफाजत

जितेन्द्र खर्डे, एसएनएए-एससीटीडी

यूनेस्को ने अब तक भारत देश के 30 अद्भुत स्मारकों, मंदिर, प्राकृतिक स्थानों को विश्व धरोहर (World Heritage) की सूची में शामिल कर लिया है। हाल ही (सन् 2013) में यूनेस्को ने राजस्थान के पहाड़ी किलों को भी विश्व धरोहर का दर्जा दिया है। जिसमें चितौड गढ़, रणथंभोर, कुंभलगढ़, जैसलमेर आदि शामिल है।

यूनेस्को ने वैश्विक स्तर पर अनूठे, अद्भुत, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक स्मारकों, इमारतों, स्थलों को विश्व में पहचान दिलाने के लिए इस तरह का अभियान शुरू किया था। इस कार्य की शुरूआत सन् 1972 में हुई थी, जब 17 अक्तूबर, 1972 को पहला विश्व धरोहर सम्मेलन का आयोजन हुआ था। इस सम्मेलन में विश्व के 187 देशों ने भाग लिया था। भारत 14 नवम्बर, 1977 से इस संस्था का सदस्य है। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य विश्व की अद्भुत, प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक विरासतों का विश्व को एहसास कराना था। साथ ही इन विरासतों को उपयुक्त सुरक्षा प्रदान कर के उनकी सही हिफाजत करना था। इस सम्मेलन में सामूहिक रूप से कुछ मानक तय किये गए थे। उन मानकों पर खरा उतरने पर ही उसे विश्व धरोहर का दर्जा दिया जाना था। अब तक करीब 911 स्थल इस सूची में शामिल किए गए हैं जिन में भारत के निम्नलिखित 30 स्थल / स्थान शामिल है।

अनु. न.	स्थल/ स्थान का नाम	प्रदेश/क्षेत्र	स्वीकृति वर्ष
1.	अजंता की गुफाएं	महाराष्ट्र	1983
2.	एलोरा की गुफाएं	महाराष्ट्र	1983
3.	आगरा फोर्ट	उत्तर प्रदेश	1983
4.	ताज महल	उत्तर प्रदेश	1983
5.	कोनार्क का सूर्यमंदिर	ओरिसा	1984
6.	महाबलीपुरम मंदिर एवं स्मारक	तमिलनाडु	1984
7.	कांजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान	असम	1985
8.	मानस वाइल्ड लाइफ सेंचुरी	असम	1985
9.	केवला देव राष्ट्रीय उद्यान	राजस्थान	1985
10.	गोवा के चर्च और कोन्वेन्ट	गोवा	1986
11.	खजुराहो मंदिर एवं स्मारक समूह	मध्य प्रदेश	1986
12.	हम्पी स्मारक समूह	मध्य प्रदेश	1986
13.	फतेहपुर सिकरी	उत्तर प्रदेश	1986
14.	पहाडाकल स्मारक समूह	कर्नाटक	1987
15.	एलिफंटा गुफाएं, मुंबई	महाराष्ट्र	1987
16.	महान चोला मंदिर	तमिलनाडु	1987
17.	सुंदरवन नेशनल पार्क	प. बंगाल	1987
18.	नंदा देवी और वेली ऑफ फ्लावर्स नेशनल पार्क	चमोली, उत्तराखंड	1988
19.	बौद्ध स्तूप, सांची	मध्य प्रदेश	1989
20.	हुमायु का मकबरा	दिल्ली	1993
21.	कुतुब मिनार एवं स्मारक समूह	दिल्ली	1993
22.	दार्जिलिंग रेल, कालका-शिमला हिमालय रेल, शिमला	प.बंगाल,हिमाचल प्रदेश	1999, 2008
23.	निलगिरी पहाड़ी रेल, ऊटी	तमिलनाडु	2005
24.	महाबोधि मंदिर, गया	बिहार	2002
25.	भीमबेटका स्थित पत्थर स्तंभ	मध्य प्रदेश	2003
26.	चांपानेर-पावागढ़	गुजरात	2004
27.	छत्रपति शिवाजी टर्मिनस (विक्टोरिया टर्मिनस)	महाराष्ट्र	2004
28.	पश्चिम के घाट (सह्याद्रि गिरीमाला)	राजस्थान-कर्नाटक तक	2012
29.	राजस्थान के हिल फोर्टस्	राजस्थान	2013
30.	जंतर-मंतर स्मारक, जयपुर	राजस्थान	2010

भारतीय समाज की बदलती तस्वीर

चंदन कुमार सिंह, सहायक

अरस्तु ने कहा था "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। लेकिन समाज का बँटवारा किस आधार पर किया जाए, एक समाज जो एक वक्त की रोटी जुटाने को संघर्ष कर रहे हैं। भारतीय नमूना सर्वेक्षण एवं केन्द्रीय साँख्यिकी की सर्वेक्षण के आधार पर तेंदुलकर समिति ने सुझाव दिया कि भारत में कुल 37 करोड़ जनता गरीबी रेखा से नीचे हैं। यह भी तो एक समाज ही है जो कि अमेरिका की कुल जनसंख्या से ज्यादा है। वहीं दूसरी ओर अमेरिका की फोर्ब्स पत्रिका के अनुसार भारत में 48 अरबपति है। एक समाज जो अपनी संतानों को विदेशों के प्रतिष्ठित संस्थाओं में नामांकन के लिए करोड़ों फूँक रहे हैं तो दूसरी तरफ सरकार गरीब बच्चों को पढ़ाने के लिए मध्याह्न भोजन चला रही है और उसमें भी कई जगहों पर विषैले भोजन के ग्रहण से बच्चे मौत का शिकार हो जाते हैं। कुत्ते का भी समाज होता है एक कुत्ता जो करोड़पति उद्योगपतियों की गोद में बैठकर बीएमडब्ल्यू, मर्सीडिज़, ऑडी बॉण्ड कारों पर बैठते हैं तो दूसरी तरफ सड़क पर रहने वाले कुत्ते जो पेट भरने के लिए दूसरों की दया के मोहताज होते हैं। क्या पूंजीवाद आधार समाज के लिए सही है?

दूसरी ओर जातिवादी भी पंख फैलाए बैठे हैं और धर्मवाद का तो.....कहना ही क्या ! तीसरा समाज जो मध्यमवर्गीय है इसका विश्लेषण कर पाना मुश्किल होगा, क्योंकि इस समाज में कौन मध्यमवर्गीय है कौन उच्चवर्गी, वर्गीकरण नहीं हो पाता जैसे एक समाज जो कुछ सरकारी संस्थाओं में काम करते हैं, वहीं दूसरे जो कार्पोरेट जगत के खिलाड़ी है तीसरे जो स्वयंसेवी स्वायत्त संस्था चलाते हैं, कुछ ठेकेदारी के पेशे में हैं तो कुछ नेताओं की चापलूसी में व्यस्त है, कुछ प्रौद्योगिकी प्रोफेशन में है इन सबको एक समाज मान लेना सही होगा, सबकी धनोपार्जन विधियां अलग-अलग है वहीं दूसरे सेक्टरों में मिडिया सेक्टर आता है जिसमें जाने माने पत्रकार, फैशन की दुनिया, फिल्म सेलेब्रिटी, खेल जगत की हस्तियाँ, व्यापार जगत की दुनिया इत्यादि, सबकी एक अलग पहचान बन गयी है, अलग समाज बन गया है।

एक जमाना था जब अपनी इच्छा, खुशियां जाहिर करने के लिए पत्र या टेलिग्राफ (तार) का इस्तेमाल हुआ करता था और आज इंटरनेट प्रौद्योगिकी एवं मोबाइल सेवा ने दुनिया को तो मिला दिया लेकिन अलग होते जा रहे हैं। कितना आश्चर्य होता है यह जानकर कि भारतीय डाकघर जोकि विश्व का सबसे बड़ा नेटवर्क हैं आज एक बैंक की सेवाएं प्रदान करता है। सरोजिनी नायडू ने भारत की प्रति व्यक्ति आय आज से 50 साल पहले रु.200 आकलित की जो आज 60 हजार से ऊपर हो चुकी है। पिछले दशक में भारत लगातार लगभग 10% की एक ट्रीलियन डॉलर को पार कर चुकी और विश्व की 10 बड़ी अर्थव्यवस्था में शामिल हो गयी, लेकिन क्या इससे सामाजिक सुधार भी हुआ।

भारतीय मूल की इंद्रा नूई जोकि पेप्सिको की चेयरपर्सन हैं, चंदा कोचर आईसीआईसीआई बैंक की प्रेसिडेंट, शिखा शर्मा एक्सिस बैंक की चेयरमेन, किरन मजुमदार बॉयोकोन की चेयर पर्सन, सुनिता विलियम्स (भारतीय मूल की अमेरिकी निवासी) अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की हस्ती ऐसी सैंकड़ों भारतीय महिलाएं आज विश्व में परचम बिखेर रही है जोकि सामाजिक सुधार में महिलाओं की प्रेरणास्रोत है और इसके परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं जैसे यूपीएससी (संघ लोक सेवा आयोग) द्वारा ली जाने वाली भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में लगातार तीन वर्षों से महिलाएं ही टॉप कर रही हैं वहीं दूसरी और आईआईटी (भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान) एवं आईआईएम (भारतीय प्रबंधन संस्थान) में भी महिलाओं की संख्या में काफी वृद्धि देखने को मिल रही हैं।

एक जमाना था जब महिलाओं को गृहिणी मात्र समझा जाता था आज भारतीय समाज की तस्वीर बदल चुकी है लेकिन कुछ अपराधिक कुरूतियों की वृद्धि भी समांतर बढ़ती चली जा रही है, हाल के वर्षों में हुए कुछ ऐसे आपराधिक मामले जैसे गेंग रेप, चोरी-डकैती, आतंकवादी फैलाव, काला धन, जातिवादी हिंसा, आत्महत्याएँ, सरकारी आपराधिक गतिविधियाँ, सामाजिक दुष्कर्म ने देश को शर्मनाक बना दिया है। वहीं दूसरी तरफ प्राकृतिक आपदाएं, सूखा, गरीबी, हिंसा,

बाढ़, अकाल ने समाज को कटघरे में खड़ा कर दिया है। एक तरफ प्रौद्योगिकी की दुनिया तो दूसरी तरफ आज भी देश के 70 करोड़ जनसंख्या ग्रामीण बस्तियों में खेती पर निर्भर है। कई किसान आत्महत्याएं कर रहे हैं तो कई बेघर होते जा रहे हैं। सरकार की ब्रॉडबैंड नीति सबको एक समाज जैसी सेवाएं दे पाएगी, ये तो कहना मुश्किल है पर मध्यमवर्गीय परिवारों में बढ़ती महँगाई का तनाव इतना तेज बढ़ते जा रहा है कि स्कूल-कॉलेज की फीस हो या खाने की पौष्टिकता ! क्या कभी कोई गुणवत्ता पर विचार करता है, स्कूल को ही ले लीजिए आज हजारों कॉन्वेन्ट स्कूल हैं जो हर शहरों में प्रतिदिन खुलते ही जा रहे हैं लेकिन शहर दिल्ली हो या अहमदाबाद, मुम्बई हो या हैदराबाद किसी व्यक्ति से पूछी जाए भैया यहाँ कौन सी अच्छी स्कूल हैं तो जवाब में डीपीएस, डीएवी, एमिटी और कुछ गिने-चुने नाम मिलाकर भी मुश्किल से 10 हो पाते हैं। जब नामांकन कराने जाऊँ तो शायद ही संभव हो मुझे तो नहीं लगता, फीस तो आसमान छूती है ही। वहीं हाल हायर एजुकेशन की ही, सब्जी के ठेलों की तरह इंजीनियरिंग कॉलेज, प्रबंधन कॉलेज खुलते ही जा रहे हैं जब प्लेसमेंट की बात आती है तो आईआईटी, एनआईटी और कुछ राज्य सत्रीय को छोड़कर एवं केन्द्रीय संगठन ही प्लेसमेंट दे पाते हैं लेकिन यहां पर आश्चर्य करने वाली बात यह है कि आम जनता सोचती होगी इससे देश का भविष्य उज्जवल हो रहा है पर ऐसा नहीं है।

सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियां की जॉब प्लेसमेन्ट को देखें तो वे IITIANS को ले लेते हैं वहीं सरकारी उपक्रम जैसे नवरत्न, महारत्न (SAIL, GAIL, BHEL, ONGC, CIL, NTPC, OIL), आदि। तो इनमें IITIANS शायद ही जाते हैं और वहीं हाल अनुसंधान कंपनियाँ जैसे ISRO, DRDO, HAL की है। इसी वजह सिर्फ कार्पोरेट दिग्गज के कारनामे हैं जैसे Microsoft, Oracle, IBM, Apple inc, जैसी IT कंपनियों का पैकेज 25 लाख से 50 लाख तक देते हैं भला वह क्यों जाए भारतीय सामाजिक स्तरों को सुधारने, वहीं दूसरी ओर IIM एवं कुछ नामित जैसे IRMA, IIFT, MDI, ISB की स्थिति पर विचार करें तो इन्हें Nestle, Pepsico, Facebook एवं कुछ फाइनेन्सियल संस्थाएँ जैसे City Bank, Barcdays, HSBC, RBS, UP Morgan, Goldman Sacs के पैकेज के आगे भारतीय सरकारी संस्थाएँ एवं कंपनियां चुर-चुर हो जाती है। अब आप ही बताएँ भारतीय सरकार की संस्थाओं में पढ़कर विदेशों के सामाजिक स्तर को सुधार रहे हैं, यह भारतीय समाज की सबसे बड़ी समस्या है। वहीं सरकारी नीतियों पर विचार करें तो सरकार समाज कल्याण के लिये जो योजना चलाती शायद ही उसमें पूरी तरह कामयाब हुई हो और विवादित नहीं हुई हो। भारतीय सामाजिक परिवर्तन में सबसे ज्यादा योगदान पाश्चात्य आकर्षण है, और यह आकर्षण मिडिया के माध्यमों से प्रतिदिन फैलते जा रहे हैं।

गुगल एजेन्सी के अनुसार अब भारत में ग्रामीण इलाके में इंटरनेट के उपभोक्ताओं में संख्या में बेहताशा वृद्धि हुई है और यह तेजी से बढ़ती जा रही है। अगर इसे शिक्षा, ज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो यह किसी दैवीशक्ति से कम नहीं है पर कुछ अश्लील वेबसाइट सिर्फ बच्चों का भविष्य बिगाड़ने के लिए नहीं बल्कि गंदे अपराधों के लिए भी प्रेरित करती है इसके लिए Bing सर्च ईंधन जो माइक्रोसॉफ्ट की देन है को धन्यवाद देता हूँ।

आज एक तरफ भारतीय समाज का तेजी से विकास हो रहा है उसकी तस्वीर है वहीं दूसरी तरफ तेजी से उभरता सामाजिक परिवर्तन इसे दबोच रहा है, और सरकारी नीतियाँ हमेशा ही विफल होती जा रही है। टिम बर्नस ली जिसने वर्ल्ड वाइड वेब (www) का अविष्कार किया था वे इसे शिक्षा, अनुसंधान की दृष्टि से देख रहे थे लेकिन आज इंटरनेट युक्तउपकरण जैसे IPhone, Tablet PC, Laptop, Palm Device (PDA) की आसानी से उपलब्धता होने के कारण यह अश्लीलता का डिजीटल बाजार बन चुका है। दिन-दहाड़े शहरों में यौन अपराध हो रहे हैं, Cyber crime हो रहे हैं और यह अब ग्रामीण स्थानों पर पलायन कर रही है।

शायद अब दुनिया को एक नहीं प्रौद्योगिकी को तलाशना होगा जिससे सामाजिक, आर्थिक विकास हो एवं भारतीय कला-संस्कृति की मर्यादा हमेशा बनी रहे।

***

भारत की संस्कृति

- प्रीतेश सिंहा

सोने की चिडिया कहलाए जाने वाला भारत प्रचीन समय से ही विश्व के आकर्षण का केन्द्र रहा है। इस आकर्षण का स्त्रोत देश की प्राकृतिक विविधता और उसके परिणाम जनित संस्कृति रही है जो कि विविध होकर भी देश को एक स्वर्णिम पहचान प्रदान करते है।

सामासिक संस्कृति किसी एक या दो पीढी की देन नही, अपितु यह तो आदिकाल से निरंतर होने आ रहे मेलजोल एवं संवाद का परिणाम है। देश की सामासिक संस्कृति को हम निम्नलिखित घटकों के नजरिए से देख सकते है- (अ) प्राकृतिक विविधता (ब) भाषायी विविधता (स) रहन सहन (द) राजनीतिक एवं सामाजिक इतिहास ।

किसी भी देश की समसामयिक परिलेख में उसके इतिहास का बडा योगदान है अतएव हम भारत की सामासिक संस्कृति को उपर्युक्त बिंदुओं से विश्लेषित करेंगे।

(अ) प्राकृतिक विविधता – भारत जो की विश्व का साँतवा सबसे बड़ा देश है, क्षेत्रफल के पैमाने पर एवं जनसंख्या के नजरिए से दूसरा सबसे बड़ा देश है। 68 पूर्व से 97 पूर्व देशांतर एवं 9 उत्तर से 37 उत्तर तक फैला हुआ प्राकृतिक संरचना में बहुत ही विविधता से भरा हुआ है। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में हिन्द महासागर तक इसकी संरचना भू- संरचना के सभी आयाम जैसे- पर्वत, पठार,मैदान, तटीय क्षेत्र इत्यादि से भरी हुई है। प्राकृतिक विविधता के अनुसार देश में रहने वाले लोगों की जीवनशैली बदलती जाती है अतएव उनकी संस्कृति के अनेकानेक रंग भी हमें दिखाई पड़ते है। गंगा के मैदानों में लहलहाती फसलों ने जहाँ मनुष्य मन को काव्य और वेंदो की रचना करने का समय दिया, तो दक्षिण के तटों में रहने वालों ने नृत्य एवं नाविक शैली को।

(आ)

अतएव हम कह सकते है, प्राकृतिक विविधता ने संस्कृति को अलग शैलियों में ढाला है परंतु इसी विविधता ने भारतीय क्षेत्र को एक उपमहाद्वीप का आकार दिया, जिससे इस उप-महाद्वीप में रहनें वालों का आपसी मेलजोल बढ़ा और हमारी सामासिक संस्कृति का जन्म हुआ।

(ब) भाषायी विविधता – भारतीय संस्कृति को विश्व में सबसे अलग पहचान देने में महत्वपूर्ण कारक है। हमारी भाषायी विविधता आजादी के समय भारत में 1400 से भी अधिक बोलियाँ प्रचलित थी। हमारे संविधान में भी 22 भाषाओं को शामिल किया गया है। यह दर्शाता है हमारा भारत न सिर्फ क्षेत्रफल में बल्कि भाषायी मानने में भी विश्व के किसी भी देश की तुलना में सर्वाधिक विविधता वाला देश है। भारतीय संस्कृति को विविध बनाने वाली एवं एक करने वाली दोनों ही के लिए भाषाएं एवं बोलियों की विविधता ही कारक है। बोलियों मुख्यत: हमारी भाषाओं के ही अपभ्रंश स्वरूप है, अतएव स्वत: एक सांस्कृतिक परिदृश्य से दूसरे में जाने वाला नागरिक स्वयं को कभी अलग महसूस नही करता। अपितु भाषायी विविधता में एकता ने हमारी सामासिक संस्कृति के विकास को निरंतर पोषित किया एवं और भी समृद्ध किया है।

(स) रहन-सहन – भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू है विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले नागरिकों की जीवन-शैली। रहन-सहन एवं जीवन शैली से हमारा तात्पर्य वेश- भूषा, खान-पान, एवं सामाजिक संस्कृति से है। विभिन्न क्षेत्रों की भू- संरचना के फलस्वरूप वहाँ के रहवासियों की वेशभूषा में परिवर्तन होने जाना है, फलस्वरूप हमें इसके विभिन्न स्वरूप देखने को मिलते है, उदाहरण के तौर पर कश्मीर की पश्मीना शॉल, दक्षिण में कांजीवरम की साड़ीयाँ या उत्तर–पूर्व के क्षेत्रों में ज्ञांपी का प्रयोग ।

हर क्षेत्र का रहन-सहन, वेश–भूषा, खान-पान यह विविधता परिलक्षित करनी है। गंगा के मैदानों से लेकर दक्षिण के पठारों तक हड़प्पा, मोहन-जोदडो के आभूषणों से लेकर दक्षिण के मसालों तक भारतीय उपमहाद्वीप की विविधता ने सदैव विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया है। हमारा व्यापार फला-फूला और हमारा भारत सोने की चिडिया कहलाया । हाँलाकि मध्यकाल एवं उत्तरकाल में हमारी संस्कृति पर विदेशी आक्रमण हुए, परंतु उसका भी हमने अपनी संस्कृति को और भी अमीर बनाने में उपयोग किया। भारत में विश्व के सभी धर्म प्रचलित है। .. धर्मों को आगे बढ़ाने में चाहे वह बुद्ध के उपदेश हों या महावीर जैन की जैन संहिता, हमारी संस्कृति ने सभी को अपने में समावेशित किया, आत्मसान किया

एवं फलस्वरूप हमारी संस्कृति को सामासिक बनाने में अपना योगदान दिया। रहन- सहन, वेशभूषा, धर्म, काव्य, वेद हों, सभी ने भारत को विविधता में एकता के रूप में समृद्ध किया है।

(द) राजनीतिक एवं सामाजिक इतिहास- भारत की सामासिक संस्कृति का विकास एक दिन में नही हुआ,अपितु यह तो निरंतर होने जा रहे सामाजिक परिवर्तनों का परिणाम है। पूर्वाद्ध काल से लेकर मध्यकाल तक भारत में राजसिक संस्कृति का प्रसार हुआ, नए राजाओं ने दरबारों में अलग-अलग संस्कृति एवं कला के नुमाइंदो को पुरुस्कृत किया। फलस्वरूप प्राचीन समय से ही कलाकेन्द्रों एवं संगीत, नृत्य की विभिन्न शैलियो का विकास, भारत में होता आ रहा है। उत्तर काल में मुगलों एवं उनके पश्चात अंग्रेजो के शासन के फलस्वरूप कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत की राजनीति की बागडोर एकछत्र शासन में समावेशित हो गई ।

अंग्रेजो के शासन ने न सिर्फ भारतीय उपमहाद्वीप को एकछत्र शासन में शामिल किया, बल्कि भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न राज्यों को एक रखने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई। आजादी के बाद भी हमारे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से प्रेरित सेनाओं में 560 रियासतों को एकछत्र भारत में सम्मिलित किया। अतएव हम कह सकते है कि देश के सामाजिक एवं राजनीतिक इतिहास ने भारत की विविधता –भरी संस्कृति को एक बनाने में एवं उसे परिणामस्वरूप सामासिक बनाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

हमारे भारत की यह सामासिक संस्कृति एवं कला चाहे वह संगीत, नृत्य, शिक्षा, साक्षर, वेशभूषा, भाषा किसी भी क्षेत्र में हो विश्व में सबसे अधिक समृद्ध है। देश की जनसंख्या में युवाओ का प्रतिशत यह दर्शाता है कि भारत अपनी इस पीढ़ी एवं संस्कृति के बल पर और भी ऊचाईयों को छूने के लिए अग्रसर है। हालाँकि भारत में बढ़ते अंग्रेजी के प्रयोग एवं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से भारत की अपनी संस्कृति का थोड़ा अवमूल्यन भी हमें दिखाई पड़ता है। परंतु हमें यह समझना होगा कि भूमंडलीकरण के इस युग में इन प्रभावों से भारतीय संस्कृति और भी समृद्ध ही बनेगी। उदाहरण के तौर पर हमारे व्यापार एवं आर्थिक विकास के क्षेत्र में कृषि के बजाय नौकरी के क्षेत्र का अधिक योगदान । भारत की संस्कृति इतनी विस्तारित है कि इसने हमेशा ही अल्प संस्कृतियों के प्रभावों को स्वयं में समावेशित किया है।

अतएव हम यह आशा कर सकते है कि बढ़ते समय के साथ भारतीय उपमहाद्वीप की संरचना, देश की भाषायी विविधता मे हिन्दी फलस्वरूप आयी एकता एवं एकछत्र राजनैतिक शासन के फलस्वरूप आयी स्थिरता, भारत की संस्कृति को और भी समावेशी, समृद्ध एवं सामासिक बनायेगी।

***

भ्रष्टाचार

✍ एस. पी. शर्मा, ड्रॉफ्ट्समैन-बी, सैक, इसरो

आज देश में फैल चुका है, देखो भ्रष्टाचार।
यहाँ-वहाँ पर मिल जाता है, हर कोई लाचार।।

बिना रुपैया काम बने ना, और मिले ना अधिकार।
योग्य और कर्मठ लोगों की, ना है अब दरकार।।

बिना सिफारिश, बिना रुपैया, काज कोई ना होता है।
भ्रष्टाचार की आग में जलकर, हर प्राणी रोता है।।

देश के प्यारों का सपना अब, हो ना सके साकार,
"क्योंकि" देश में फैल चुका है, आज यह भ्रष्टाचार।।

देश के प्यारों अब तो जागो, अब तो कदम बढ़ाओ तुम।
भ्रष्टाचार के उन्मूलन की अब तो अलख जगाओ तुम।।

ऐसे काम करो, जिससे फैले कभी ना भ्रष्टाचार।
ताकि देश के हर वासी का, हो सपना साकार।।

आज देश में फैल चुका है, देखो भ्रष्टाचार।
यहाँ वहाँ पर मिल जाता है, हर कोई लाचार।।

***

10 जनवरी 2014 को सैक/ डेकू में विश्व हिंदी दिवस के अवसर संपन्न हिंदी प्रतियोगिताओं की झलक

सैक / डेकू में संपन्न राजभाषा कार्यशालाओं की झलक

दिनांक 13.05.2014 को संपन्न कार्यशाला में उद्बोधन देते हुए डॉ.पी.के. श्रीवास्तव, जीडी–पीपीजी

एवं कार्यशाला में सत्र संचालित करते हुए श्री बी.आर.राजपूत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

दिनांक 19.02.2014 को संपन्न कार्यशाला में उद्बोधन देते हुए श्री सी.एन.लाल, कल्याण अधिकारी

कार्यशाला में सत्र संचालित करते हुए श्री बी.आर.राजपूत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

12वीं तथा 10वीं कक्षा में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले सैक/डेकू के कर्मचारियों के बच्चों को पुरस्कृत करते हुए निदेशक, सैक

शिंजन दत्ता

मधुली देवाशीष गोस्वामी

बिंदल आशुतोष अरूण

हिंदी में मूल टिप्पण एवं प्रारूपण हेतु लागू प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत निदेशक, सैक द्वारा पुरस्कृत प्रतिभागी गण

प्रथम (हिंदीतर)—जैमिन शाह

द्वितीय (हिंदीतर)—चंपा ठक्कर

तृतीय (हिंदीतर)—श्री राजेश शास्त्री

नराकास प्रतियोगिताओं में पुरस्कार विजेताओं को प्रशस्ति पत्र

पूजा कक्कड

संगीत कुमार मिश्रा

आशिष सोनी

डिज़ाइन : डेकू, एम एम लैब